पढ़े चलो, बढ़े चलो

लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल
द्वारा वर्ष 2022 के लिए जारी प्रश्न बैंक

प्रश्न बैंक

(रेमेडियल माड्यूल के प्रश्न-उत्तर सहित)

उत्तर सहित

हिन्दी

कक्षा 11

नई ब्लू प्रिंट सहित

GPH®

लोक शिक्षण संचालनालय, म.प्र. भोपाल द्वारा जारी, प्रश्न बैंक उत्तर सहित

जी पी एच®

प्रश्न बैंक

हिन्दी (आरोह–वितान) कक्षा–11वीं

समय : 3 घण्टे] **प्रश्न पत्र : ब्लू प्रिन्ट (Blue Print of Question Paper)** **[पूर्णांक : 80**

क्र.	इकाई एवं विषय–वस्तु	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
			1 अंक	2 अंक	3 अंक	4 अंक	
1.	**आरोह भाग–1** काव्य खण्ड– पद्य साहित्य का इतिहास एवं प्रवृत्तियाँ, काव्य पाठों पर आधारित प्रश्न, कवि परिचय एवं पद्यांश की व्याख्या	17	6	2	1	1	4
2.	**आरोह भाग–1 गद्यखंड** गद्य साहित्य का इतिहास एवं प्रवृत्तियाँ विकास क्रम (गद्य विधाओं का परिचय) गद्य पर आधारित प्रश्न–लेख लेखक परिचय एवं अर्थ ग्रहण सम्बन्धी प्रश्न।	17	8	2	1	1	4
3.	**वितान भाग–1** पूरक पाठ्य पुस्तक परआधारित प्रश्न।	7	5	1	–	–	1
4.	अभिव्यक्ति और माध्यम पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रश्न	7	5	1	–	–	1
5.	**काव्य बोध–** • इसका परिचय एवं उनके प्रकार • अलंकार परिचय व प्रकार मानवीकरण, पुनरुक्ति प्रकार, संदेह मुन्तिमान • छन्द परिचय और प्रकार– दोहा,चौपाई, सोरठा, कवित्त सवैया। • शब्द शक्ति– परिचय व प्रकार • शब्द गुण– परिचय व प्रकार	9	5	2	–	–	2

हिन्दी (आरोह-वितान) कक्षा-11वीं

इकाई-1 आरोह काव्य खण्ड

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए- (1 अंकीय)

(1) कबीर को 'वाणी का डिटेक्टर' किसने कहा है?

(a) महावीरप्रसाद द्विवेदी

(b) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(c) रामचंद्र शुक्ल

(d) बालमुकुंद गुप्त

(2) प्रकृति के चितेरे कवि हैं-

(a) सुमित्रानंदन पंत

(b) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

(c) जयशंकर प्रसाद

(d) मैथिलीशरण गुप्त

(3) मीराबाई की मूल भाषा राजस्थानी पर कौन-सी भाषा का प्रभाव दिखाई देता है ?

(a) अवधी (b) ब्रज

(c) मैथिली (d) खड़ी बोली

(4) 'वे आंखें' कविता का मूल स्वर है-

(a) छायावादी (b) प्रगतिवादी

(c) प्रयोगवादी (d) हालावादी

(5) 'कविता का गांधी' कहे जाते हैं-

(a) भवानीप्रसाद मिश्र (b) रामदरस मिश्र

(c) दुष्यंत कुमार (d) त्रिलोचन

(6) पंत ने कविता के लिए चित्र भाषा संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं-

(a) वीणा में (b) ग्रंथि में

(c) पल्लव (d) गुंजन

(7) 'वह तुम्हारा मन समझ कर और अपनापन समझ कर' 'घर की याद' कविता की उपरोक्त पंक्तियों में 'तुम्हारा' शब्द किसके लिए आया है?

(a) पिता के लिए (b) मां के लिए

(c) भाई के लिए (d) बहिन के लिए

(8) दुष्यंत कुमार त्यागी की रचना 'एक कंठ विषपायी' किस विधा की रचना है?

(a) उपन्यास (b) आत्मकथा

(c) काव्य संग्रह (d) गीतिनाट्य

(9) निर्मला पुतुल मूलत: किस भाषा की कवयित्री हैं?

(a) मैथिली (b) संथाली

(c) अवधी (d) छत्तीसगढ़ी

(10) 'छाड़ी दाये कुल की कानि का करीहै कोई'? रेखांकित शब्द से तात्पर्य है-

(a) उपकार (b) सत्कार

(c) मर्यादा (d) साहस

(11) निम्नलिखित में से कौन-सा एक खंड बीजक का नहीं है?

(a) पद (b) साखी

(c) सबद (d) रमैनी

(12) "जिस प्रकार आत्मा के मुक्तवस्था ज्ञान दशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्ता वस्था रस दशा कहलाती है।

उपरोक्त कथन किसका है?

(a) रामचंद्र शुक्ल (b) नगेंद्र

(c) प्रेमचंद (d) मुक्तिबोध

उत्तर- (1) हजारी प्रसाद द्विवेदी (2) सुमित्रानंदन पंत (3) ब्रज (4) प्रगतिवादी (5) भवानी प्रसाद मिश्र (6) पल्लव (7) पिता के लिए (8) गीतिनाट्य (9) संथाली (10) मर्यादा (11) पद (12) रामचंद्र शुक्ल।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) कबीर की एकमात्र रचना ..... है जो तीन भागों साखी, सबद, रमैनी में विभक्त है। (बीजक/पदावली)

(2) कबीर के अनुसार परमात्मा ..... है। (अनेक/एक)

(3) मीरा के गुरु ..... थे। (रैदास/वल्लभाचार्य)

(4) आरोह में संकलित मीरा के पद ..... से लिए गए है। (मीरा पदावली/मीरा मुक्तावली)

(5) हिंदी कविता में प्रकृति को पहली बार प्रमुख विषय बनाने का श्रेय ..... को दिया जाता है। (निराला/पंत)

(6) सुमित्रानंदन पंत अरविंद के ..... से प्रभावित थे। (मानववाद/गांधीवाद)

(7) 'वे आंखें' कविता में ..... की मार्मिक व्यथा का चित्रण हुआ है। (मजदूर/किसान)

(8) भवानी प्रसाद मिश्र ..... से प्रभावित है। (मार्क्सवाद/गांधीवाद)

(9) सहजलय के कवि ..... है। (सुमित्रानंदन पंत/भवानी प्रसाद मिश्र)

(10) साए में धूप दुष्यंत कुमार का ..... संग्रह है। (कहानी संग्रह/गजल संग्रह)

(11) नगाड़े की तरह बजते हैं शब्द ..... की रचना है। (निर्मल वर्मा/निर्मला पुतुल)

(12) घर की याद कविता में कवि के पिता ..... का पाठ करते हैं। (रामायण/गीता)

(13) सतपुड़ा के घने जंगल ..... की कविता है। (भवानीप्रसाद मिश्र/रामनरेश त्रिपाठी)

उत्तर– (1) बीजक (2) एक (3) रैदास (4) मीरा मुक्तावली (5) पंत (6) मानववाद (7) किसान (8) गाँधीवाद (9) भवानीप्रसाद मिश्र (10) गजल संग्रह (11) निर्मला पुतुल (12) गीता (13) भवानीप्रसाद मिश्र।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य बताइये–

(1) मीराबाई की भक्ति दाम्पत्य भाव की है।

(2) कबीर ब्रज भाषा के कवि हैं।

(3) कबीर ने बाहरी आडम्बरों का विरोध किया है।

(4) मीरा की मूल भाषा राजस्थानी पर अवधी भाषा का प्रभाव है।

(5) पंत की 'ताज' कविता छायावादी कविता है।

(6) किसान की गाय का नाम उजरी था।

(7) 'सूर्य का स्वागत' का संग्रह दुष्यंत कुमार त्यागी का है।

(8) निर्मला पुतुल का संबंध झारखंड से हैं।

उत्तर– (1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) असत्य (5) असत्य (6) सत्य (7) सत्य (8) सत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ियां बनाइये–

(अ)	(ब)
(1) गीतफरोश	(a) निर्मला पुतुल
(2) युगवाणी	(b) भवानी प्रसाद मिश्र
(3) छोटे-छोटे सवाल	(c) सुमित्रानंदन पंत
(4) अपने घर की तलाश में	(d) दुष्यंत कुमार त्यागी
(5) राजस्थानी भाषा	(e) निर्मला पुतुल
(6) सधुक्कड़ी	(f) मीराबाई
(7) संथाली	(g) रामनरेश त्रिपाठी
(8) खड़ी बोली	(h) कबीर

उत्तर– (1) भवानीप्रसाद मिश्र (2) सुमित्रानन्दन पंत (3) दुष्यंत कुमार त्यागी (4) निर्मला पुतुल (5) मीराबाई (6) कबीर (7) निर्मला पुतुल (8) रामनरेश त्रिपाठी।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए–

(1) कबीर भक्ति काल के अंतर्गत निर्गुण भक्ति की कौनसी काव्य धारा के कवि हैं?

(2) मीरा ने अपना आराध्य किसे माना है?

(3) मीरा के लिए विष का प्याला किसने भेजा था?

(4) रामनरेश त्रिपाठी किस युग के कवि हैं?

(5) हिंदी साहित्य में बाल साहित्य के जनक कौन माने जाते हैं?

(6) 'वानर' नामक बाल पत्रिका का संपादन किसने किया?

(7) प्रकृति का मानवीकरण कौन से वाद की प्रमुख विशेषता है?

(8) 'मिलन' खंड काव्य के रचयिता कौन है?

(9) 'घर की याद' कविता में कौन किसको याद कर रहा है?

(10) मीरा की प्रेम रूपी बेल में कौन सा फल आया है?

उत्तर– (1) ज्ञानाश्रयी (2) श्री कृष्ण (3) राणा ने (4) पूर्व छायावादी (5) द्विवेदी युग (6) रामनरेश त्रिपाठी (7) छायावाद (8) रामनरेश त्रिपाठी (9) एक पुत्र अपने परिवार को (10) आनंद।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-30 शब्दों में लिखिए।**

प्रश्न 1. भक्ति काल के दो कवि तथा की एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर– कवि	रचनाएँ
(1) रामानंद	राम आरती

(2) तुलसीदास	रामचरितमानस
(3) कबीरदास	बीजक, साखी

प्रश्न 2. रीतिकालीन के दो कवि तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर-

प्रमुख कवि		रचनाएँ
(1) बिहारी	-	बिहारी-सतसई
(2) केशवदास	-	रामचन्द्रिका
(3) मतिराम	-	फूल-मंजरी
(4) सेनापति	-	कवित्त-रत्नाकर
(5) भूषण	-	शिवा-बावनी
(6) पद्माकर	-	जगद् - विनोद
(7) देव	-	रस-विलास
(8) घनानन्द	-	सुजान-सागर

प्रश्न 3. भारतेन्दु युग के किन्हीं दो कवियों तथा उनकी रचना का नाम बताइए।

उत्तर-

कवि	रचनाएँ
(1) अंबिकादत्त व्यास	कंसवध
(2) गुरूभक्त सिंह	नूरजहाँ

प्रश्न 4. द्विवेदी युगीन दो कवियों तथा उनकी रचनाओं के नाम बताइए।

उत्तर-

कवि	रचनाएँ
(1) नाथूराम शर्मा	अनुराग रत्न
(2) हरिऔध	प्रियप्रवास

प्रश्न 5. छायावाद के दो कवि तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर- छायावाद के प्रमुख कवियों एवं उनकी रचनाओं के नाम निम्नानुसार हैं-

प्रमुख कवि		रचनाएँ
(1) जयशंकर 'प्रसाद'	-	कामायनी
(2) सुमित्रानंदन 'पन्त'	-	लोकातन
(3) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	-	राम की भक्तिपूजा
(4) महादेवी वर्मा	-	दीपशिखा

प्रश्न 6. प्रगतिवाद के दो कवि तथा उनकी एक-एक रचना का नाम लिखिए।

उत्तर- प्रमुख प्रगतिवादी कवियों एवं उनकी प्रसिद्ध रचनाओं के नाम निम्नानुसार हैं-

प्रमुख कवि		रचनाएँ
(1) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	-	कुकुरमुत्ता
(2) रामधारीसिंह 'दिनकर'	-	कुरुक्षेत्र
(3) भवानीप्रसाद मिश्र	-	गीत फरोश
(4) बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	-	उर्मिला

प्रश्न 7. प्रयोगवाद के दो कवि तथा उनकी रचना बताइए।

उत्तर- प्रमुख प्रयोगवादी कवियों और उनकी प्रसिद्ध रचनाओं के नाम निम्नलिखित हैं-

प्रमुख कवि		रचनाएँ
(1) गजानन माधव 'मुक्तिबोध'	-	चाँद का मुँह टेढ़ा है
(2) अज्ञेय	-	बावरा अहेरी
(3) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'	-	कुकुरमुत्ता
(4) भवानीप्रसाद 'मिश्र'	-	गीत फरोश

प्रश्न 8. भक्ति काल की दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ बताइए।

उत्तर- 1.नाम का महत्व- कीर्तन भजन आदि के रूप में भगवान् का गुण सभी शाखाओं कवियों में पाया जाता है। सभी कवियों ने अपने-अपने इष्ट देव के नाम का स्मारक किया है।

2. गुरु का महत्व- इस काल में गुरु का महत्व ईश्वर के समान या उससे बढ़कर बताया गया है।

प्रश्न 9. रीतिकाल की दो प्रमुख प्रवृत्तियां बताइए।

उत्तर- 1. लक्षण-ग्रंथों की प्रधानता- रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति लक्षण-ग्रंथों का निर्माण है। इन कवियों ने संस्कृत के आचार्यों का अनुकरण कर लक्षण-ग्रंथों का निर्माण किया है।

2. शृंगारिकता- रीतिकाल की दूसरी बड़ी विशेषता शृंगार रस की प्रधानता है। इस काल की कविता में नखशिख और राधा-कृष्ण की प्रेम लीलाओं का चित्रण व्यापक स्तर पर हुआ है।

प्रश्न 10. भारतेन्दु युग की दो प्रमुख प्रवृत्तियां बताइए।

उत्तर- 1. राष्ट्रप्रेम का भाव- प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के परिणामस्वरूप भारतवासियों में सोई हुई आत्मशक्ति के कारण जागरण के साथ ही राजनीतिक अधिकारों के प्रति लालसा बढ़ी, जिससे उनमें राष्ट्रीयता के भाव का उदय होना स्वाभाविक था।

2. जनवादी विचारधारा- भारतेन्दु युग का साहित्य पुराने ढाँचे से सन्तुष्ट नहीं है वे उनमें बदलाव कर यह सुधार कर उसमें नयापन लाने का प्रयास किये हैं, जिससे समानता और जनवादी विचारधारा लाया जा सके।

प्रश्न 11. द्विवेदी युग की दो प्रमुख कविताएं बताइए।

उत्तर- (1) रंग में भंग (2) जयद्रथ वध
(3) पंचवटी (4) स्वप्न

प्रश्न 12. छायावाद की दो प्रमुख प्रवृत्तियां बताइए।

उत्तर- छायावाद की प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं-
(1) नारी-सौंदर्य और प्रेम-चित्रण
(2) प्रकृति प्रेम
(3) राष्ट्रीय। सांस्कृतिक जागरण
(4) रहस्यवाद।

प्रश्न 13. प्रगतिवाद की दो प्रमुख प्रवृत्तियां बताइए।

उत्तर- प्रगतिवाद की प्रमुख प्रवृत्तियां निम्नलिखित हैं-
(1) क्रांति-विरोध
(2) मानवतावाद का स्वर
(3) नारी भावना
(4) सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण।

प्रश्न 14. प्रयोगवाद की दो प्रमुख प्रवृत्तियां बताइए।

उत्तर- 1. तारसप्तक के कवि- अज्ञेय, भारतभूषण अग्रवाल, मुक्तिबोध, प्रभाकर माचवे, गिरिजाकुमार माथुर, नेमिचंद्र जैन, रामविलास शर्मा।

2. दूसरे तारसप्तक के कवि- भवानीप्रसाद मिश्र, शंकुत माथुर, नरेश मेहत्ता, रघुवीर सहाय, शमशेर बहादुर सिंह, हरिनारायण व्यास, धर्मवीर भारती।

3. तीसरे तारसप्तक के कवि- प्रयागनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुंवर नारायण, विजय देव नारायण साही, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना।

प्रश्न 15. कबीर ने संसार को पागल क्यों कहा है?

उत्तर- कबीरदास कहते हैं कि यह संसार पागल हो गया है, क्योंकि जो व्यक्ति सच बोलता है, उसे यह मारने को दौड़ता है। उसे सच पर विश्वास नहीं है। कबीरदास तीर्थ-स्थान, तीर्थ-यात्रा, टोपी पहनना, माला पहनना, तिलक, ध्यान आदि लगाना, मंत्र देना आदि तौर-तरीकों को गलत बताते हैं। वे राम-रहीम की श्रेष्ठता के नाम पर लड़ने वालों को गलत मानते हैं, क्योंकि कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। वह सहज भक्ति से प्राप्त हो सकता है। इन बातों को सुनकर समाज उनकी निंदा करता है तथा पाखंडियों की झूठी बातों पर विश्वास करता है। अत: कबीर को लगता है कि संसार पागल हो गया है।

प्रश्न 16. मानव शरीर का निर्माण किन पांच तत्वों से हुआ है?

उत्तर- मानव शरीर का निर्माण निम्नलिखित पाँच तत्वों में हुआ है- (1) अग्नि (2) वायु (3) पानी (4) मिट्टी (5) आकाश।

प्रश्न 17. मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती है वह रूप कैसा है?

उत्तर- मीरा कृष्ण की उपासना पति के रूप में करती है। उनका रूप मन को मोहने वाला है। वे पर्वत को धारण करने वाले हैं। उनके सिर पर मोर का मुकुट सुशोभित रहता है। मीरा उन्हें अपना सर्वस्व मानती है। वे स्वयं को उनकी दासी मानती है।

प्रश्न 18. पथिक कविता में कवि का मन कहाँ विचरना चाहता है?

उत्तर- पथिक का मन बादल पर बैठकर नीलगगन में विचारण करना चाहता है। वह समुद्र की लहरों पर बैठकर सागर का कोना-कोना देखना चाहता है।

प्रश्न 19. किसान के बैलों की जोड़ी की कुर्की किसने और क्यों करवा दी?

उत्तर- महाजन ने कर्ज न चुका पाने की दशा में बैलों की जोड़ी की कुर्की करवा दी।

प्रश्न 20. आओ मिलकर बचाएं कविता में कवयित्री ने बच्चों और बड़ों के लिए क्या बचाना चाहती है?

उत्तर- प्रस्तुत कविता में लेखिका ने प्रतिपादित किया है कि प्रकृति के विनाश और विस्थापन के कारण आज आदिवासी समाज संकट में है। हम अपनी पारंपरिक भाषा, भावुकता, भोलेपन, ग्रामीण संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। प्राकृतिक नदियाँ, पहाड़, मैदान, मिट्टी, फसल, हवाएँ ये सब आधुनिकता के शिकार हो रहे हैं। आज के परिवेश में विकार बढ़ रहे हैं, जिन्हें हमें मिटाना है। हमें प्राचीन संस्कारों और प्राकृतिक उपादानों को बचाना है। हमें अभी भी निराश होने की जरूरत नहीं है। अभी भी बचाने के लिए बहुत कुछ बचा है।

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75-75 शब्दों में लिखिए-**

प्रश्न 1. कबीर के अनुसार अज्ञानी गुरुओं की शरण में जाने पर शिष्यों की क्या गति होती है?

उत्तर- अज्ञानी गुरुओं की शरण में जाने पर शिष्यों का उपकार नहीं होता, अपितु ऐसे गुरु शिष्यों को गलत रास्ते दिखाते हैं। वे घर-घर मंत्र देते फिरते हैं तथा अभिमान में डूबे रहते हैं

अभिमान के कारण वे ईश्वर को प्राप्त नहीं कर पाते। दोनों संसार-सागर में गोते खाते रहते हैं। दोनों की जीवन-नैया मझधार में पड़ी रहती है।

प्रश्न 2. कबीर के दृष्टि में ईश्वर एक है अपने इस तथ्य की पुष्टि के लिए उन्होंने क्या-क्या तर्क दिए हैं?

उत्तर- कबीरदास कहते हैं कि ईश्वर एक है। उसका कोई निश्चित रूप या आकार नहीं है। वह सर्वव्यापी है। अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने कई तर्क दिए हैं, जैसे-संसार में एक जैसी हवा बहती है, एक जैसा पानी है तथा एक ही प्रकार का प्रकाश सबके अंदर समाया हुआ है। कुम्हार एक ही प्रकार की मिट्टी से अलग-अलग प्रकार के बर्तन बनाता है। वे आगे कहते हैं कि बढ़ई लकड़ी को काटकर अलग कर सकता है, परंतु आग को नहीं। यानी मूलभूत तत्वों (धरती, आसमान, जल, आग और हवा) को छोड़कर शेष सबको काट कर अलग कर सकते हो। इसी तरह से शरीर नष्ट हो जाता है,किंतु आत्मा सदैव अमर रहती है। आत्मा परमात्मा का ही अंश है, जो अलग-अलग रूपों में सबमें समाया हुआ है। अत: ईश्वर एक है उसके रूप अनेक हो सकते हैं।

प्रश्न 3. लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?

उत्तर- मीरा कृष्ण-भक्ति में अपनी सुध-बुध खो बैठी है, उन्हें किसी परंपरा या मर्यादा का कोई ध्यान नहीं है। कृष्ण-भक्ति के लिए उन्होंने राज-परिवार छोड़ दिया, संतों की संगति कर ली, लोकनिंदा सही, मंदिरों में भजन गाए, नृत्य किया। भक्ति की यह पराकाष्ठा बावलेपन को दर्शाती है। इसलिए लोग मीरा को श्रीकृष्ण की प्रेम दिवानी या बावरी कहते हैं।

प्रश्न 4. पथिक कविता में कवि ने सागर तट पर सूर्योदय वर्णन किस रूप में किया है?

उत्तर- सूर्योदय वर्णन के लिए निम्नलिखित बिंबों का प्रयोग हुआ है-

(1) समुद्र तल से उगते हुए सूर्य का अधूरा बिंब अपनी प्रात:कालीन लाल आभा के कारण बहुत ही मनोहर लगता है।

(2) सूर्योदय के तट पर दिखने वाला आधा सूर्य कमला के स्वर्ण-मंदिर का कँगूरा है।

(3) दूसरे बिंब में सूर्य लक्ष्मी की सवारी के लिए समुद्र द्वारा बनाई स्वर्ण-सड़क प्रतीत होता है।

प्रश्न 5. वे आंखें कविता में कवि ने किसान की पीड़ा का जिम्मेदार किन्हें बताया है?

उत्तर- कविता में किसान की पीड़ा के लिए जमींदार, महाजन व कोतवाल को जिम्मेदार बताया है। जमींदार ने षड्यंत्र पूर्वक उसे जमीन से बेदखल कर दिया। उसके कारिंदों ने किसान के जवान बेटे को पीट-पीटकर मार डाला। महाजन ने मूलधन व ब्याज की वसूली के लिए उसके घर, बैल व गाय तक नीलाम करवा दिए। आर्थिक अभाव के कारण इलाज न करवा पाने के कारण किसान की पत्नी मर गई। कोतवाल ने अपनी वासना की पूर्ति के लिए उसकी पुत्रवधू को शिकार बनाया। पीड़ा एवं लज्जा के कारण उसकी पुत्रवधू ने आत्महत्या कर ली। इतना सब कुछ होने पर समाज उस पर होने वाले अत्याचारों को मूक दर्शक बनकर देखता रहा।

प्रश्न 6. घर की याद कविता में कवि ने पिता के व्यक्तित्व की कौन से विशेषताओं को चित्रित किया है?

उत्तर- 'घर की याद' कविता में पिता के व्यक्तित्व की निम्नलिखित विशेषताओं को उकेरा गया है-

(1) पिता जी पूर्णत: स्वस्थ है। बुढ़ापे उन्हें अभी छुआ तक नहीं है।

(2) देश-प्रेमी है। उनकी प्रेरणा पाकर ही कवि ने स्वाधीनता आन्दोलन में भागलिया।

(3) वे दौड़ लगाते हैं तथा दंड पेलते हैं।

(4) वे मौत के सामने आने पर भी नहीं डरते। वे खिलखिलाकर हँसते हैं।

(5) वे तूफान की रफ्तार से काम करने की क्षमता रखते हैं।

(6) वे गीता का पाठ करते हैं।

(7) वे भावुक प्रवृत्ति के हैं। अपने पाँचवे बेटे की याद आने पर उनकी आँखे भर आती हैं।

प्रश्न 7. ना हो कमीज तो पावों से पेट ढक लेंगे। यह लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए ? उपरोक्त शेर में कवि आम जनता की कौनसी प्रवृत्ति की ओर इंगित करना चाहता है?

उत्तर- कवि आम व्यक्ति के विषय में बताता है कि ये लोग गरीबी व शोषित जीवन को जीने पर मजबूर है। यदि इनके पास वस्त्र भी न हों, तो वे पैरों को मोड़कर अपने पेट को ढँक लेंगे। उनमें विरोध करने का भाव समाप्त हो चुका है। ऐसे लोग ही

शासकों के लिए उपयुक्त है, क्योंकि इनके कारण उनका शासन शांति पूर्वक चलता है।

प्रश्न 8. कबीर अथवा मीरा का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर दीजिए।- (1) दो रचनाएँ (2) भाव पक्ष, कला पक्ष (3) साहित्य में स्थान

उत्तर- **कबीरदास**

रचनाएँ- कबीरदास के पदों का संग्रह बीजक नामक पुस्तक हैं, जिसमें साखी, सबद एवं रमैनी संकलित है। बीजक मुक्तक काव्य है। इनके दोहों को साखी, गेय पदों को सबद ओर पद शैली के सिद्धान्तों को रैंगनी कहते हैं।

साहित्यिक परिचय- कबीरदास भक्तिकाल की निर्गुण धारा के ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन पर नाथों, सिद्धों और सूफी संतों की बातों का प्रभाव है। वे कर्मकांड और वेद-विचार के विरोधी थे तथा जाति भेद, वर्ण-भेद और संप्रदाय-भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन करते थे।

कबीर घुमक्कड़ थे। इसलिए इनकी भाषा में उत्तर भारत की अनेक बोलियों के शब्द पाए जाते हैं। वे अपनी बात को साफ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में "भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे 'वाणी के डिक्टेटर' थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में कहवा दिया है। बन गया तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर।"

कबीर के काव्य में अलंकार स्वाभाविक रूप में आ गए हैं। पद योजना में विभिन्न राग-रागनियों का ध्यान रखा है। आपकी साखियों एवं पदों में शान्त रस है।

कबीर एक कवि ही नहीं, श्रेष्ठ समाज-सुधारक भी थे।

साहित्य में स्थान- कबीर भक्तिकाल के अग्रदूत, निर्गुण सन्त, ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि एवं प्रतिनिधि कवि के रूप में हिन्दी जगत में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

मीराबाई

रचनाएँ- मीरा ने मुख्यत: स्फुट पदों की रचना की। ये पद 'मीराबाई' की पदावली' के नाम से संकलित है। दूसरी रचना 'नरसीजी-रो-माहेरो' है।

साहित्यिक विशेषताएँ- मीरा सगुण धारा की महत्वपूर्ण भक्त कवयित्री थी। कृष्ण की उपासिका होने के कारण इनकी कविता में सगुण भक्ति मुख्य रूप से विद्यमान है, लेकिन निर्गुण भक्ति का प्रभाव भी मिलता है। इन्होंने लोकलाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक और वैचारिक बंधनों का हमेशा विरोध किया। इन्होंने पर्दा प्रथा का पालन नहीं किया तथा मंदिर में सार्वजनिक रूप से नाचने-गाने में कभी हिचक महसूस नहीं की। मीरा सत्संग को ज्ञान प्राप्ति का माध्यम मानती थीं और ज्ञान को मुक्ति का साधना निन्दा से वे कभी विचलित नहीं हुई। वे उस युग में रूढ़िग्रस्त समाज में स्त्री-मुक्ति की आवाज बनकर उभरी।

भाषा-शैली- मीरा की कविता में प्रेम की गंभीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी। इनकी कविता में सादगी व सरलता है। इन्होंनें मुक्तक गेय पदों की रचना की। उनके पद लोक व शास्त्रीय संगीत दोनों क्षेत्रों में आज भी लोकप्रिय हैं। इनकी भाषा मूलत: राजस्थानी है तथा कहीं-कहीं ब्रजभाषा का प्रभाव है। अलंकार इनके काव्य में सहज रूप में आ गए हैं।

साहित्य में स्थान- मीरा का भावपक्ष इतना सबल है कि कलापक्ष का अभाव हमें महसूस हीं नहीं होता है। मीरा का काव्य तीव्र भावानुभूति का काव्य है। इनके पद गीति-काव्य के चरमोत्कर्ष है। प्रेमोन्माद, तीव्रता, तन्मयता की त्रिवेणी मीरा के काव्य में सतत् प्रवाहित है। गीतिकाव्य में मीरा अप्रतिम है, उनकी कोई सानी नहीं है। मीरा के पद संगीतज्ञों के कण्ठहार बने हुए हैं। मीरा मीरा है।

प्रश्न 9. रामनरेश त्रिपाठी अथवा सुमित्रानंदन पंत का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर दीजिए- (1) दो रचनाएँ (2) भाव पक्ष-कलापक्ष (3) साहित्य में स्थान।

उत्तर-

रामनरेश त्रिपाठी

प्रमुख रचनाएँ- खंड काव्य- पथिक,मिलन,स्वप्ना **कविता संग्रह-** मानसी। **संपादन-** कविता कौमुदी, ग्रामगीत। **आलोचना-** गोस्वामी तुलसीदास और उनकी कविता, हिन्दी का संक्षिप्त इतिहास, रामचरित मानस की टीका।

भाषा-शैली- त्रिपाठी जी ने अपनी रचनाओं में शुद्ध खड़ी बोली का प्रयोग किया है। आपने विषयानुकूल शैलियों को अपनाया है। आपके काव्य में ओजगुण की प्रधानता है।

साहित्य में स्थान- त्रिपाठी जी की रचनाएँ युग व राष्ट्र की आकांक्षाओं से परिपूर्ण है। उनमें अनुभूति, कल्पना और भाव व्यंजना तीनों की सम्मिश्रण है। आपने कल्पित आख्याओं का आश्रय लेकर राष्ट्र प्रेम की भावना को जागृत करने का सुन्दर प्रयास किया है। त्रिपाठीजी ने अपने रचनाओं में कवि धर्म का पूर्णत: पालन किया है। एक राष्ट्रीय कवि के रूप में त्रिपाठी जी हिन्दी काव्य-जगत् में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

सुमित्रानन्दन पंत

रचनाएँ- पंत जी ने समय के अनुसार अनेक विधाओं में कलम चलाई। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

काव्य- वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, युगवाणी, ग्राम्या, चिदंबरा, उत्तरा, स्वर्ण किरण, कला और बूढ़ा चाँद, लोकायतन आदि हैं।

नाटक- रजत रश्मि, ज्योत्स्ना, शिल्पी।

उपन्यास- हार।

कहानियाँ व संस्मरण- पाँच कहानियाँ, साठ वर्ष, एक रेखांकन।

काव्यगत विशेषताएँ- छायावाद के महत्वपूर्ण स्तंभ सुमित्रानंदन पंत प्रकृति के चितेरे कवि हैं। हिन्दी कविता में प्रकृति को पहली बार प्रमुख विषय बनाने का काम पंत ने ही किया। इनकी कविता प्रकृति और मनुष्य के अंतरंग संबंधों का दस्तावेज है। प्रकृति के अद्‌भुत चित्रकार पंत का मिजाज कविता में बदलाव का पक्षधर रहा है। आरंभ में उन्होंने छायावाद की परिपाटी पर कविताएँ लिखीं।

साहित्य में स्थान- छायावादी कवियों में पंतजी का नाम सदैव अविस्मरणीय रहेगा। आप कोमल कल्पनाओं और भावनाओं के कवि हैं। पन्तजी की यह कोमलता हमें नारी-सन्दर्भ, निरूपण, प्रकृति चित्रण, वस्तु वर्णन, भाव-निरुपण, जीवन की विविध दशाओं के चित्रण, भाषा एवं शब्द चित्रण, अलंकार-योजना और छन्द-योजना में स्पष्टत: दिखाई देती है।

प्रश्न 10. भवानी प्रसाद मिश्र अथवा दुष्यंत कुमार त्यागी का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर दीजिए।

(1) दो रचनाएँ (2) भाव पक्ष कलापक्ष (3) साहित्य में स्थान।

उत्तर-

भवानी प्रसाद मिश्र

रचनाएँ- इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार है-

सतपुड़ा के जंगल, सन्नाटा, गीतफरोश, चकित है दु:ख, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, अनाम तुम आते हो, इदं न मम् आदि। 'गीतफरोश' इनका पहला काव्य संकलन है। गाँधी पंचशती की कविताओं में कवि ने गाँधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की है। इनके अतिरिक्त शरीर, फसलें और फूल, तूस व आग, शतदल आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

काव्यगत विशेषताएँ- भवानीप्रसाद मिश्र, वेता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलनों के प्रमुख कवियों में से एक है। गाँधीवाद में इनका अखंड विश्वास था। इन्होंने गाँधी वाक्य के हिन्दी खंडों का संपादन कर कविता और गाँधी जी के बीच सेतु का काम किया। इनकी कविता हिन्दी की सहज लय की कविता है। इसलिए उन्हें कविता का गांधी भी कहा गया है। इनकी कविताओं में बोलचाल के गद्यात्मक से लगते वाक्य-विन्यास को ही कविता में बदल देने की अद्‌भुत क्षमता है। इसी कारण इनकी कविता सहज और लोक के निकट है।

मिश्रजी की कविता में जीवन के सुख-दु:ख है, प्रकृति का बहुरंगी सौंदर्य वह वर्तमान युग को विसंगतिया हैं, मध्यम वर्ग की विडम्बनाँ है, मानव की गरिमा है ओर स्वाधीनता की चेतना भी अभिव्यक्त है।

साहित्य में स्थान- नई कविता के दौर के कवियों में मिश्रजी के काव्य में पर्याप्त व्यंग्य और क्षोभ है, किन्तु यह सृजनात्मक है। आप गाँधीवाद से प्रभावित एक श्रेष्ठ मानवतावादी कवि के रूप में हिन्दी में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

दुष्यन्त कुमार

रचनाएँ- काव्य संग्रह- सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, साये में धूप आदि।

उपन्यास- छोटे-छोटे सवाल, दोहरी जिंदगी।

भाव पक्ष- वास्तव में दुष्यन्त कुमार आम भाषा और आम आदमी के कवि हैं। उन्होंने आम लोगों को अपनी गजलों में स्थान दिया। उनके दु:खों को गहराई से अनुभव किया।

साहित्य में स्थान- कवि दुष्यन्त कुमार ने गजल की उर्दू परम्परा को एक नयी दिशा प्रदान की। सामाजिक यथार्थ के चित्रण में आपकी गजलें महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

■ निम्नलिखित पद्यांश का सन्दर्भ प्रसंग सहित भावार्थ लिखिए-

(1) हम तो एक एक करि जाना।
दोई कहे तिनहीं को दोजग जिन नाहिंन पहचाना।।
एकैपवन एक ही पानी एकै ज्योति समाना
एकै खाक गढ़े सब भाड़े एकै कोहरा साना।।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटे अगिनि न काटे कोई।
सब घटी अंतर तू ही व्यापक धरे सरूपे सोई।।
माया देखके जगत लुभाना काहे रे नर गरबाना।
निर्भय भया कछु नहीं व्यापैके कहे कबीर दीवाना।।

सन्दर्भ- प्रस्तुत पद्यांश आरोह भाग एक में संकलित पदों से अवतरित किया गया है। इसके रचयिता निर्गुण परम्परा के सर्वश्रेष्ठ कवि महात्मा कबीरदास है।

प्रसंग- उक्त पद में, कबीर ने एक ही परम तत्व की सत्ता को स्वीकार किया है, जिसकी पुष्टि कई उदाहरणों से करते हुए कहते हैं।

व्याख्या- मैंने तो जान लिया है कि ईश्वर एक ही है। इस तरह से मैंने ईश्वर के अद्वैत रूप को पहचान लिया है। कुछ लोग ईश्वर को अलग-अलग बताते हैं। उनके लिए नरक की स्थिति है, क्योंकि वे वास्तविकता को नहीं पहचानते। वे आत्मा और परमात्मा को अलग-अलग मानते हैं। कवि ईश्वर की अद्वैतता का प्रमाण देते हुए कहता है कि संसार में एक जैसी हवा बहती है, एक जैसा पानी है तथा एक ही प्रकाश सब में समाया हुआ है। कुम्हार एक ही तरह की मिट्टी से सब बर्तन बनाता है, भले ही बर्तनों का आकार-प्रकार अलग-अलग हो। बढ़ई या सुतार लकड़ी को तो काट सकता है, परंतु आग को नहीं काट सकता। इसी प्रकार शरीर नष्ट हो जाता है, परंतु उसमें व्याप्त आत्मा सदैव अमर रहती है। परमात्मा प्रत्येक प्राणी के हृदय में समाया हुआ है, भले ही उसने कोई भी रूप धारण किया हो। यह संसार माया के जाल में फँसा हुआ है। माया ही संसार को लुभाती है। इसलिए मनुष्य को किसी भी बात को लेकर घमंड नहीं करना चाहिए। अंत में कबीरदास कहते हैं कि जब मनुष्य निर्भय हो जाता है, तो उसे कुछ नहीं सताता। कबीर भी अब निर्भय हो गया है तथा ईश्वर का दीवाना हो गया है। ईश्वर में उसकी आत्मा प्रगाढ़ हो गई है।

(2) पग घुंघरू बांध मीरा नाची,
मैं तो मेरे नारायण सूं आपही हो गई साची।
लोग कहे मीरा भई बावरी, न्यात कहे कुलनासी
विस् का प्याला राणा भेज्या, पिवत मीरा हाँसी
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अबिनासी

संदर्भ- प्रस्तुत पद पाठ्यपुस्तक 'आरोह एक' में संकलित मीराबाई के पदों से अवतरित किया गया है।

प्रसंग- उक्त पद में मीराबाई ने श्रीकृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति भावना व्यक्त करते हुए कहा है।

व्याख्या- मैं अपने पैरों में घुंघरू बाँधकर श्रीकृष्ण के समक्ष नाचने लगी है। इस कार्य से यह बात स्पष्ट हो गई है कि मैं अपने कृष्ण की हूँ। उसके इस आचरण के कारण लोग उसे पागल कहते हैं। परिवार और बिरादरी वाले कहते हैं कि मीरा कुल का नाश करने वाली है। मीरा विवाहिता है और उसका इस प्रकार नृत्य करना कुल का मान-मर्यादा के विरुद्ध है। कृष्ण के प्रति उसके प्रेम के कारण राणा ने उसे मारने के लिए विष का प्याला भेजा। उस प्याले को मीरा ने हँसते हुए पी लिया। अन्त में मीरा कहती है कि उसके प्रभु गिरधर नागर है। मीरा को सहज ही उसके दर्शन सुलभ हो गए हैं।

(3) लहराते हुए खेत दृगों में
हुआ बेदखल वह अब जिनसे,
हँसती थी उसके जीवन की
हरियाली जिनके तृन तृन से,
आँखों में ही घूमा करता
वह उसकी आँख का तारा,
कारकूनों की लाठी से जो
गया जवानी में ही मारा।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश प्रगतिवादी कवि सुमित्रानन्दन पंत द्वारा रचित कविता 'वे अन्न' से अवतरित है। कवि स्वाधीन भारत में भी किसानों की दुर्दशा का मार्मिक अंकन करते हुए बताता है।

व्याख्या- कभी किसानों के ये खेत भरपूर फसल से लहलहाते थे। तब ये खेत उसके अपने थे। अब उसे इन खेतों से बेदखल कर दिया गया है। अर्थात् उसे इन खेतों की हिस्सेदारी से अलग कर दिया गया है। इन खेतों में फैली हरियाली के एक-एक तिनके में इन किसानों के जीवन की हँसी झलकती थी। ये खेत ही उसके

जीवन की खुशहाली के आधार थे। आज उन्हें इस खुशहाली से वंचित कर दिया गया है।

जमींदार के कारकूनों ने लाठी मार-मारकर इस किसान के प्यारे बेटे को मार दिया था। वह किसान अभी भी उसकी याद में रोता रहता है। इसकी आँखों में अपना प्यारा बेटा घूमता रहता है। अर्थात् इसकी आँखों में उस प्यारे बेटे की छवि बार-बार तैरती रहती है। यह किसान उसे आज तक भुला नहीं पाया है।

कवि उस घटना का मार्मिक चित्रण करता है जिसमें किसान को उसके खेत से बेदखल किया गया था तथा विरोध करने पर उसके बेटे की नृशंस हत्या कर दी गई थी। यह सारा काम जमींदार के कारिंदों ने किया था।

विशेष- (1) किसान की दारूण दशा को बताने में मार्मिकता का समावेश हुआ है।

(2) 'आँखों का तारा' मुहावरे का सटीक प्रयोग हुआ है।

(3) 'तृन-तृन' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(4) 'स्मृति बिंब' का प्रयोग है।

(5) खड़ी बोली अपनाई गई है।

(4) मैं मजे में हूं सही है,
पर नहीं हूं बस यही है,
किंतु यह बस बड़ा बस है,
इसी बस से सब विरस है,

संदभ- उपर्युक्त काव्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग 1' में संकलित कविता 'घर की याद' से ली गई है।

प्रसंग- कवि को घर की बहुत याद आती है ऐसे में वह अपनी पीड़ा कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

व्याख्या- मैं घर से दूर हूँ पर सुख से हूँ मजे में हूँ। वैसे यह दुःख छोटा दिखता है पर असल में ये तो बहुत ही बड़ा दुख है इसके कारण सब नीरस लगता है।

(5) खुदा नहीं ना सही आदमी ख्वाब सही,
कोई हसीन नजारा तो है नजर के लिए।
वे मुतमइन हैं कि पत्थर पिघल नहीं सकता,
मैं बेकरार हूँ अपनी आवाज में असर के लिए।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ दुष्यंतकुमारी गजल 'साये में धूप' से अवतरित है।

व्याख्या- कवि अभावों के मध्य जी लेने की बात कहता है। यदि हमारे पास पहनने के लिए कमीज नहीं होगी तो हम पाँवों को मोड़कर अपने पेट को ढक लेंगे। ऐसे लोग जीवन के सफर के लिए बहुत सही होते हैं।

हमें बेशक ईश्वर न मिल पाए तो न मिले। आदमी को उसका सपना ही काफी है। उसे सपने में कोई खूबसूरत दृश्य तो दिखाई देगा। यही उसके लिए काफी है।

(6) "नाचने के लिए खुला आंगन,
गाने के लिए गीत।
हँसने के लिए थोड़ी सी खिलखिलाहट,
रोने के लिए मुट्ठी भर एकांत।
बच्चों के लिए मैदान,
पशुओं के लिए हरी-हरी घास।
बुढ़ों के लिए पहाड़ों की शांति।"

संदर्भ- उपर्युक्त काव्यांश पाठ्यपुस्तक 'आरोह भाग-1' में संकलित आज मिलकर बचाएँ, नामक कविता से लिया गया है। इसकी लेखिका संथाली कवयित्री निर्मला पुतुल है।

प्रसंग- प्रस्तुत काव्यांश में कवयित्री ने अपने परिवेश को शहरी अपसंस्कृतिक से बचाने का आह्वान करते हुए कहा है-

व्याख्या- बढ़ती आबादी व विकास के कारण घर छोटे होते जा रहे हैं। यदि नाचने के लिए खुला आँगन चाहिए तो आबादी पर नियंत्रण करना होगा। फिल्मी प्रभाव से मुक्त होने के लिए अपने गीत होने चाहिए। व्यर्थ के तनाव को दूर करने के लिए थोड़ी हँसी बचाकर रखनी होगी, ताकि खिलखिला कर हँसा जा सके। अपनी पीड़ा को शांत करने के लिए थोड़ा-सा एकांत भी चाहिए। बच्चों को खेलने के लिए मैदान, पशुओं के चरने के लिए हरी-हरी घास तथा बूढ़ों के लिए पहाड़ी प्रदेश का शांत वातावरण चाहिए। इन सबके लिए हमें सामूहिक प्रयास करने होंगे। ❑

अध्याय-2 आरोह-1 गद्य खंड

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(1) नमक का दरोगा कहानी का प्रकाशन वर्ष है-

(a) 1924 (b) 1914
(c) 1934 (d) 1904

(2) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को अपनी कहानी का आधार बनाने वाले कथाकार है–

(a) प्रेमचंद (b) जैनेंद्र
(c) यशपाल (d) कृष्णनाथ

(3) नमक की गाड़ियां जा रही थी–

(a) रामपुर (b) नागपुर
(c) कानपुर (d) श्यामपुर

(4) मियां नसीरुद्दीन शब्द चित्र कृष्णा सोबती के कौन से चित्र संग्रह से लिया गया है?

(a) दिलोदानिश (b) जिंदगीनामा
(c) हम हशमत (d) बादलों के घेरे

(5) मास्टर त्रिलोक सिंह ने धनराम को कितने का पहाड़ा करने के लिए दिया था?

(a) 12 (b) 13
(c) 14 (d) 19

(6) मन्नू भंडारी द्वारा रचित 'रजनी' मूलत: क्या है?

(a) कथा (b) पटकथा
(c) एकांकी (d) नाटक

(7) जामुन के पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति को सर्वप्रथम किसने देखा?

(a) माली (b) चपरासी
(c) सेक्रेटरी (d) ज्वाइंट सेक्रेटरी

(8) हिंदी का प्रथम उपन्यास माना जाता है–

(a) सेवासदन (b) परीक्षा गुरु
(c) इरावती (d) चंद्रकांता

(9) सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन वर्ष है–

(a) सन् 1900 (b) 1903
(c) 1907 (d) 1908

(10) जब लेखक स्वानुभूति एवं स्मृति के आधार पर किसी घटना या व्यक्ति विशेष का चित्रण करता है तो वह रचना कहलाती है–

(a) रेखाचित्र (b) संस्मरण
(c) आत्मकथा (d) पटकथा

(11) रिपोर्ताज शब्द मूलत: कौन–सी भाषा का शब्द है?

(a) अंग्रेजी (b) फ्रैंच
(c) रशियन (d) जर्मन

(12) हिंदी में नाटक सम्राट कहा जाता है–

(a) प्रेमचंद (b) बालकृष्ण भट्ट
(c) जयशंकर प्रसाद (d) भारतेन्दु हरिश्चंद्र

उत्तर–(1) 1914 (2) प्रेमचंद (3) कानपुर (4) हम हशमत(5 13 (6) पटकथा (7) माली ने (8) परीक्षा गुरु (9) 1900 (10 संस्मरण (11) फ्रैंच (12) जयशंकर प्रसाद।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) डॉ. नगेन्द्र ने ..... को पुनर्जागरण काल कहा है। (द्विवेदी युग/भारतेन्दु युग)

(2) अंधेर नगरी ..... की प्रसिद्ध रचना है। (भारतेन्दु हरिश्चंद्र/बालकृष्ण भट्ट)

(3) ..... युग को हिंदी निबंध का स्वर्ण काल माना जाता है। (प्रसाद युग/शुक्ल युग)

(4) जिंदगीनामा ..... प्रसिद्ध है। (उपन्यास/कहानी)

(5) ..... को हिंदी कथा साहित्य का शिखर पुरुष माना जाता है। (प्रेमचंद्र / जयशंकर प्रसाद)

(6) पंडित अलोपीदीन का ..... पर अखंड विश्वास था। (सरस्वती/लक्ष्मी)

(7) मियां नसीरुद्दीन ..... किस्म की रोटियाँ बनाने के लिए मशहूर थे। (छप्पन/छयालिस)

(8) शेखर जोशी की कहानी ..... पर चिल्ड्रन फिल्म सोसायटी द्वारा फिल्म का निर्माण हुआ। (हलवाहा/दाज्यू)

(9) स्पीति में बारिश एक ..... है। (यात्रा वृतांत/संस्मरण)

(10) आपकी बेटी मन्नू भंडारी का प्रसिद्ध ..... है। (नाटक/उपन्यास)

(11) जामुन के पेड़ के नीचे दबा व्यक्ति ..... था। (शायर/मजदूर)

उत्तर– (1) भारतेन्दु युग (2) भारतेंदु हरिश्चंद्र (3) शुक्ल युग (4) उपन्यास (5) प्रेमचंद (6) लक्ष्मी (7) छप्पन (8) दाज्यू (9) यात्रा वृत्तांत (10) उपन्यास (11) शायर।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य बताइये–

(1) प्रेमचंद का कहानी संग्रह मानसरोवर आठ खेतों में विभक्त है।

(2) न्याय के मैदान में धर्म और धन के बीच युद्ध ठन गया।

(3) स्पीति में साल में फसल होती है।

(4) संस्मरण स्मृति पर आधारित होता है।

(5) 'एक पेड़ की याद' शेखर जोशी का शब्द चित्र संग्रह है।
(6) मियां नसीरुद्दीन में पंच हजारी अंदाज में सिर हिलाया।
(7) स्वयं के दैनिक जीवन प्रसंगों को नियमित रूप से लिखना आत्मकथा लेखन हैं।
(8) झूठा सच यशपाल का प्रसिद्ध उपन्यास है।
(9) रजनी में शिक्षा के व्यवसायीकरण की समस्या के केन्द्र में रखा गया है।
(10) जामुन का पेड़ कृष्ण चंदर का एक प्रसिद्ध संस्मरण है।

उत्तर- (1) सत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) सत्य (6) सत्य (7) असत्य (8) सत्य (9) सत्य (10) असत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ियां बनाइये-

(अ)	(ब)
(1) बादलों के घेरे	(a) मन्नू भंडारी
(2) नौरंगी बीमार है	(b) कृष्णा सोबती
(3) मैं हार गई	(c) शेखर जोशी
(4) कागज की नाव	(d) कृष्ण चंदर
(5) भारत माता	(e) जवाहरलाल नेहरू
(6) धन पर धर्म की जीत	(f) जामुन का पेड़
(7) सरकारी व्यवस्था की संवेदनशून्यता	(g) रजनी
(8) शिक्षा का व्यवसायीकरण	(h) नमक का दरोगा कर्बला कहानी
(9) समय सरगम	(i) नाटक
(10) कोसी का घटवार	(j) उपन्यास
(11) पृथ्वी परिक्रमा	(k) यात्रावृत्त

उत्तर- (1) कृष्णा सोबती (2) शेखर जोशी (3) मन्नू भंडारी (4) कृष्ण चंदर (5) जवाहरलाल नेहरू (6) नमक का दारोगा (7) जामुन का पेड़ (8) रजनी (9) नाटक (10) उपन्यास (11) कहानी संग्रह (12) यात्रा वृत्त।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए- (1 अंकीय)

(1) वंशीधर ने किससे बैर मोल लिया था?
(2) नमक का दरोगा कहानी के अंत में किसकी जीत हुई?
(3) किसका कथन है- "तालीम की तालीम बड़ी चीज है।"
(4) मोहन के गुरु का क्या नाम था?
(5) स्पीति घाटी हिमालय के किस भाग में है?
(6) जब नेहरू किसी जलसे में जाते थे तो उनका स्थागत कौन सा नारे के साथ किया जाता था?
(7) जामुन का पेड़ कहाँ गिरा था?
(8) रजनी एकांकी का पात्र अमित सक्सेना कौन सी क्लास में पढ़ता था?
(9) रमेश मोहन को अपने साथ कहाँ ले गया था?
(10) धनराम के पिता का व्यवसाय क्या था?

उत्तर- (1) पंडित आलोपिदीन (2) धर्म की (3) मियां नसीरुद्दीन (4) मास्टर त्रिलोक सिंह (5) हिमाचल के मध्य में हिमाचल प्रदेश के लाहौल स्पीति जिले की तहसील है (6) भारतमाता की जय (7) सेक्रेटिरियट के लॉन में (8) कक्षा सात (9) लखनऊ (10) लोहे के सामान बनाना लुहारी का।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

■ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-30 शब्दों में लिखिए-

प्रश्न 1. भारतेन्दु युग के दो प्रमुख निबन्धकार एवं उनके निबंध लिखिए।

उत्तर- भारतेन्दु युग के प्रसिद्ध निबन्धकार है - भारतेन्दु हरिशचन्द्र, पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. प्रतापनारायण मिश्र, बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', पं. बालमुकुन्द गुप्त आदि।

प्रश्न 2. रेखा चित्र से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- इसे अंग्रेजी भाषा में स्केच (Sketch) कहते हैं। जिस प्रकार कोई चित्रकार अपनी तूलिका से चित्र बनाता है, उसी प्रकार रेखा चित्रकार अपने शब्दों के रंगों के द्वारा ऐसे चित्र उपस्थित करता है, जिससे वर्णन योग्य वस्तु की आकृति का चित्र हमारी आँखों के सामने घूमने लगता है।

प्रश्न 3. रेखा चित्र एवं संस्मरण में अंतर बताइए।

उत्तर- इसे अंग्रेजी भाषा में स्केच कहते हैं। जिस प्रकार चित्रकार अपनी तूलिका से चित्र बनाता है उसी प्रकार रेखा चित्रकार अपने शब्दों के रंगों द्वारा ऐसे चित्र उपस्थित करता है, जिससे वर्णन योग्य वस्तु की आकृति का चित्र हमारी आँखों के सामने घूमने लगता है।

संस्मरण-

संस्मरण का अर्थ है- सम्यक स्मरण। इसमें लेखक स्वयं अपनी अनुभूति किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना का आत्मीयता तथा कलात्मकता के साथ विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें व्यक्ति के

किसी एक पक्ष का उद्घाटन होता है। वस्तुतः संस्मरण एक घटना प्रधान गद्य रचना है, जिसमें प्रिय या श्रद्धेय व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का विवरण या जीवन की झाँकी होती है।

प्रश्न 4. जीवनी तथा आत्मकथा में अंतर बताइए।

उत्तर– जीवनी– जीवनी या जीवन चरित्र व्यक्ति के जीवन का लिखित वृतान्त होता है। इसमें किसी महान् व्यक्ति के जीवन का समग्र चित्रण किया जाता है।

आत्मकथा– आत्मकथा किसी व्यक्ति की स्वयं लिखित जीवनगाथा है। इसमें लेखक, आत्म परीक्षण एवं आत्म परिष्कार करना चाहता है। वह अपने अनुभवों को दुनिया के लोगों को बांटना चाहता है।

प्रश्न 5. कहानी तथा उपन्यास में अंतर बताइए।

उत्तर– कहानी– कहानी संसार के लिखित अथवा अलिखित साहित्य का सबसे प्राचीनतम रूप है। कहानी को 'कथा' और आध्यायिका भी कहते हैं। कहानी पढ़ने या सुनने की प्रवृत्ति केवल बालकों में ही नहीं, अपितु वयस्कों में भी होती है। आज के व्यस्त जीवन में कहानी की लोकप्रियता अत्यधिक बढ़ गई है।

उपन्यास– उपन्यास का अर्थ है सामने रखना। हाँ, भागीरथ मिश्र के शब्दों में, "युग की गतिशील पृष्ठभूमि पर सहज शैली में स्वाभाविक जीवन की एक पूर्ण झाँकी प्रस्तुत करने वाला गद्य काव्य उपन्यास कहलाता है।"

मुंशी प्रेमचंद के अनुसार, "मैं उपन्यास मानव–जीवन का चित्र।

प्रश्न 6. नाटक एवं एकांकी में अंतर बताइए।

उत्तर– नाटक और एकांकी में निम्नलिखित अन्तर है–

(1) नाटक का कथानक बड़ा होता है, जबकि एकांकी का कथानक छोटा होता है।

(2) नाटक में तीन से अधिक अंक होते हैं।, परंतु एकांकी में केवल एक अंक होता है, जिसमें कुछ दृश्य होते हैं।

(3) नाटक में पात्रों की संख्या अधिक रहती है, जबकि एकांकी में पात्रों की संख्या सीमित रहती है।

(4) नाटक दर्शकों पर अनेक प्रभाव डालता है, परन्तु एकांकी दर्शकों के मन पर एकही प्रभाव डालता है। यह प्रभाव सजीव और अधिक गहरा होता है।

प्रश्न 7. "बिरादरी का यही सहारा होता है।" यह कथन किससे किसने कहा?

उत्तर– यह कथन मोहन के पिता वंशीधर ने बिरादरी के सम्पन्न युवक रमेश से कहा।

प्रश्न 8. किसान सामान्यतः भारत माता से क्या अर्थ लेते थे?

उत्तर– किसान सामान्यतः 'भारत माता' का अर्थ–धरती माता से लेते थे। नेहरू जी ने उन्हें समझाया कि उनके गाँव, जिले,नदियाँ, पहाड़, जंगल, खेत, करोड़ों भारतीय सभी भारत माता है।

प्रश्न 9. "नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना यहाँ तो पीर की मजार है।" यह कथन किसने किससे कहा?

उत्तर– यह कथन मोहन के वृद्ध पिता वंशीधर ने कहा।

प्रश्न 10. मियां नसीरुद्दीन को नामबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

उत्तर– मियाँ नसीरुद्दीन की नानबाइयों का मसीहा इसलिए कहा गया है, कि वे मसीहाई अंदाज में रोटी पकाने की कला का बखान करते थे। वे स्वयं भी छप्पन तरह की रोटियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध थे। उनका खानदान वर्षों से इस काम में लगा हुआ था। वे राटी बनाने को कला मानते थे तथा स्वयं को उस्ताद कहते थे। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा था। अन्य नानबाई सिर्फ रोटी पकाते हैं और वे नया कुछ नहीं कर पाते हैं।

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75–75 शब्दों में लिखिए–** **(3 अंकीय)**

प्रश्न 1. प्रेमचंद अथवा कृश्नचंदर का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर दीजिए–

(1) दो रचनाएं (2) भाषा शैली (3) साहित्य में स्थान

उत्तर–

प्रेमचंद

रचनाएं– प्रेमचंद का साहित्य संसार अत्यन्त विस्तृत है। ये हिन्दी कथा–साहित्य के शिखर पुरुष माने जाते हैं। इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

उपन्यास– सेवासदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, निर्मला, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि।

कहानी संग्रह- सोजे-वतन, मानसरोवर (आठ खंड में), गुप्त धन।

नाटक- कर्बला, संग्राम, प्रेम की देवी।

निबन्ध संग्रह- कुछ विचार, विविध प्रसंग।

साहित्यिक विशेषताएँ- वस्तुत: प्रेमचन्द ही पहले रचनाकार हैं जिन्होंने कहानी और उपन्यास की विधा को कल्पना और रूमानियत के धुँधलके से निकालकर यथार्थ की ठोस जमीन पर प्रतिष्ठित किया। यथार्थ की जमीन से जुड़कर कहानी किस्सागोई तक सीमित न रहकर पढ़ने-पढ़ाने की परम्परा से भी जुड़ी। इसमें उनकी हिन्दुस्तानी भाषा अपने पूरे ठाट-बाट ओर जातीय स्वरूप के साथ प्रयुक्त हुई है।

साहित्य में स्थान- मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य में एक महान कहानीकार और उपन्यास सम्राट के रूप में चिर स्मरणीय रहेंगे।

कृश्नचंदर

रचनाएँ- इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- एक गिरजा-ए-खंदक, यूकेलिप्ट्स की डाली।

उपन्यास- शिकस्त, जरगाँव की रानी, सड़क वापस जाती है। आसमान रौशन है, एक गधे की आत्मकथा, अन्नदाता, हम वहशी हैं, जब खेत जागे, बावन पत्ते, एक वायलिन समंदर के किनारे, कागज की नाव, मेरी यादों के किनारे आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ- लेखक कृश्नचंदर ने कहानी विधा को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। इनका प्रगतिशील लेखक संघ से गहरा संबंध था। इस विचारधारा का असर इनके साहित्य पर भी मिलता है। ये उन लेखकों में से है, जिन्होंने लेखन को ही रोजी-रोटी का सहारा बनाया।

कृश्नचंदर ने उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज और लेख भी बहुत से लिखे हैं, लेकिन उनकी पहचान कहानीकार के रूप में अधिक हुई है। महालक्ष्मी का पुल, आईने के सामने आदि उनकी मशहूर कहानियाँ हैं। उनकी लोकप्रियता इस कारण भी है कि काव्यात्मक रोमानियत और शैली की विविधता के कारण अपना पृथक स्थान रखते कृश्नचंदर उर्दू कथा-साहित्य में अनूठी रचनाशीलता के लिए बहुचर्चित रहे हैं। प्रगतिशील और यथार्थवादी दृष्टिकोण से लिखे जाने वाले साहित्य के पक्षधर थे।

साहित्य में स्थान- श्री कृश्नचंदर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। कहानी विधा को आपने नयी उंचाइयाँ प्रदान की। इनकी कहानियों में काव्यात्मकता, स्वच्छन्दता व शैली की विविधता के दर्शन होते हैं। एक प्रगतिशील व यथार्थवादी लेखक के रूप में हिन्दी साहित्य में आपका नाम सदैव स्मरणीय रहेगा।

प्रश्न 2. कृष्णा सोबती और मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर दीजिए-
(1) दो रचनाएं (2) भाषा शैली (3) साहित्य में स्थान

उत्तर-

कृष्णा सोबती

रचनाएँ- कृष्णा सोबती ने अनेक विधाओं में लिखा उनके कई उपन्यासों, लम्बी कहानियों और संस्मरणों ने हिन्दी के साहित्यिक संसार में अपनी दीर्घजीवी प्रस्तुति दी है। इनकी रचनाएँ निम्नानुसार हैं-

उपन्यास- जिंदगीनामा, दिलीदानिश, ऐ लड़की, समय सरगम।

कहानी संग्रह- द्वार से बिछुड़ी, मित्रों मरजानी, बादलों के घेरे, सूरजमुखी अँधेरे के।

शब्दचित्र, संस्मरण- हम-हशमत, शब्दों के आलोक में आदि।

साहित्यिक परिचय- हिन्दी कथा साहित्य में कृष्णा सोबती की विशिष्ट पहचान है। उनके संयमित लेखन और साफ सुथरी रचनात्मकता ने अपना एक नित नया पाठक वर्ग बनाया है। उन्होंने हिन्दी साहित्य को कई ऐसे यादगार चरित्र दिए हैं, जिन्हें अमर कहा जा सकता है; जैसे- मित्रों, शाहनी, हशमत आदि।

साहित्य में स्थान- एक श्रेष्ठ कहानी लेखिका, उपन्यास लेखिका व संस्मरण लेखिका के रूप में कृष्णा सोबती हिन्दी साहित्य में सदैव स्मरणीय रहेंगी। आपकी शैली आकर्षण व सर्वथा नूतन है। आप अपनी रचनाओं द्वारा नया पाठक वर्ग तैयार कर हिन्दी साहित्य की महती सेवा में संलग्न है।

मन्नू भंडारी

रचनाएँ- इनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

कहानी संग्रह- एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, यही सच है, त्रिशंकु, आँखो देखा झूठ।

उपन्यास- आपका बंटी, महाभोज, स्वामी, एक इंच मुस्कान (राजेंद्र यादव के साथ)

पटकथाएँ- रजनी, निर्मला, स्वामी, दर्पण।

साहित्यिक विशेषताएँ– मन्नू भंडारी हिंदी कहानी में उस समय सक्रिय हुई। जब नई कहानी आंदोलन अपने शिखर पर था। उनकी कहानियों में कहीं पारिवारिक जीवन, कहीं नारी-जीवन और कहीं समाज के विभिन्न वर्गों के जीवन की विसंगतियाँ विशेष आत्मीय अंदाज में अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने आक्रोश, व्यंग्य और संवेदना को मनोवैज्ञानिक रचनात्मक आधार दिया है- वह चाहे कहानी हो, उपन्यास होया फिर पटकथा ही क्यों न हो। उसका मानना है कि-

''लोकप्रियता कभी भी रचना का मानक नहीं बन सकती। असली मानक तो होता है रचनाकार का दायित्वबोध, उसके सरोकार उसकी जीवन दृष्टि।''

साहित्य में स्थान– आधुनिक कहानीकारों व उपन्यास लेखकों में मन्नु भंडारी का विशिष्ट स्थान है। आपकी रचनाएँ मनोवैज्ञानिक आधार लिए है। पट-कथा-लेखन में आपकी प्रतिभा स्तुत्य है।

■ **निम्नलिखित पद्यांश का सन्दर्भ प्रसंग सहित भावार्थ लिखिए- (4 अंकीय)**

(1) नौकरी में ओहदे की ओर ध्यान मत देना यह तो पीर का मजार है, निगाह चढ़ावे और चाद पर रखनी चाहिए। ऐसा काम ढूंढना जहाँ कुछ ऊपर आय हो मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चांद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है ऊपर आमदनी तो बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है।

सन्दभ– प्रस्तुत गद्य पाठ्यपुस्तक ''आरोह भाग 1 से ''नमक का दारोगा'' से उधृत है।

प्रसंग– इस प्रसंग में ऊँचे पद वाली नौकरी का हवालादिया गया है।

व्याख्या– प्रस्तुत गद्य में लेखक घर की दुर्दशा तथा अपनी वृद्धावस्था का हवाला देकर नौकरी में ऊँचे पद की ओर ध्यान न देकर उपरी आय (सैलरी) वाली नौकरी को अच्छा बताते हैं। वे कहते हैं कि मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, अर्थात जो कभी-कभी या एक बार ही दिखाई पड़ता है और धीरे-धीरे खत्म हो जाता है। ऊपरी आय ही एक अच्छा स्रोत है, जो हमेशा मिलती है।

(2) पंडित आलोपीदीन का लक्ष्मी जी पर अखंड विश्वास था वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है। उनका यह कहना यथार्थ ही न्याय और नीति सब लक्ष्मी के खिलौने हैं इन्हें वह जैसा चाहती है नचाता है।

संदर्भ– प्रस्तुत गद्य पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग 1' से नमक का दारोगा से लिया गया है जिनक रचयिता प्रेमचन्द जी हैं।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्य में संसार ओर स्वर्ग के बारे में बताया गया है।

व्याख्या– पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास है,वे कहते हैं कि संसार और स्वर्ग में लक्ष्मी का राज है। उनके अनुसार न्याय और नीति सभी लक्ष्मी के इशारे पर नाचते हैं।

(3) दुनिया सोती थी पर दुनिया की जीभ जागती थी सवेरे देखिए तो बालक वृद्ध सबके मुंह से यही बात सुनाई देती थी जिसे देखिए, वही पंडित जी के इस व्यवहार पर टीका टिप्पणी कर रहा था निंदा की बौछार हो रही थी मानो संसार से पापी का पाप कट गया हो।

संदभ– प्रस्तुत गद्य पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग 1' से 'नमक का दारोगा' से लिया गया है।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्य में संसार से अब पापी का पाप कट गया है,इस बारे में बताया गया है।

व्याख्या– पंडित आलोपीदीन रात में गिरफ्तार हुए ही थे कि खबर सब जगह फैल गई। दुनिया की जबान टीका-टिप्पणी करने से नहीं रूकती फिर चाहे रात हो या दिन। बुराई की लहर सभी जगह पूरे संसार में फैल गई।

(4) मियां नसीरुद्दीन हमारी और कुछ ऐसे देखा किए कि उन्हें हमसे जवाब पाना हो फिर बड़े ही मंजे अंदाज में कहा कहने का मतलब साहिब यही कि ''तालीम की तालीम भी बड़ी चीज होती है।''

संदर्भ– प्रस्तुत गद्यांश पाठ्य पुस्तक 'आरोह भाग-1' से 'मियाँ नसीरूद्दीन' नामक अध्याय से लिया गया है, जिसकी लेखिका 'कृष्णा सोबती' है।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्य में तालीम के बारे में बताया गया है।

व्याख्या– लेखिका कहती है कि मियां नसीरूद्दीन ने हमारी ओर कुछ ऐसे देखा और हमें जवाब दिया वो भी इस अंदाज में जिसमें तालीम अर्थात् काम की ट्रेनिंग और शिक्षा हो, और फिर जब हम दूसरी बार आए तब तालीम की शिक्षा दी। □

इकाई-3

वस्तु

प्रश्न 1. सही विकल्प

(1) कुमार गंधर्व के अ
मुख्य कारण क्या है?

(a) गानपन
(c) अपनापन

(2) कुई की खुदाई व

(a) चेजारो
(c) चेवा

(3) सीधे-सीधे बरस है-

(a) रेजाणी पानी
(c) पातालपानी

(4) भारतीय संगीत पुराना वाद्य कौन सा

(a) सितार
(c) डमरू

(5) भरत मुनि द्वारा र

(a) नाट्य शास्त्र
(c) संगीतशास्त्र

उत्तर–(1) गायन (2) नाट्य शास्त्र।

प्रश्न 2. रिक्त स्थान

(1) संगीत के क्षेत्र में

(2) .... चित्रपट

(3) राजस्थान की र

(4) गुजरात में पुरुष

(5) .... काल

उत्तर– (1) तीन (2)
(5) गुप्त काल।

इकाई-3 आरोह काव्य खंड

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए- (1 अंकीय)

(1) कुमार गंधर्व के अनुसार लता जी की लोकप्रियता का मुख्य कारण क्या है?

(a) गानपन (b) नयापन
(c) अपनापन (d) पुरानापन

(2) कुई की खुदाई का काम क्या कहलाता है?

(a) चेजारो (b) चेवाजी
(c) चेजा (d) चेज्ञ

(3) सीधे-सीधे बरसात से मिलने वाला पानी कहलाता है-

(a) रेजाणी पानी (b) पालर पानी
(c) पातालपानी (d) पहलापनी

(4) भारतीय संगीत में प्राचीन काल से प्रचलित सबसे पुराना वाद्य कौन सा है?

(a) सितार (b) बांसुरी
(c) डमरु (d) वीणा

(5) भरत मुनि द्वारा रचित ग्रंथ का नाम है

(a) नाट्य शास्त्र (b) साहित्य शास्त्र
(c) संगीतशास्त्र (d) कला शास्त्र

उत्तर-(1) गायन (2) चेजा (3) पालर पानी (4) वीणा (5) नाट्य शास्त्र।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) संगीत के क्षेत्र में लय ..... प्रकार की होती है।
(तीन/पांच)

(2) ..... चित्रपट संगीत की विशेषता है।
(गंभीरता/चपलता)

(3) राजस्थान की रजत बूँदें पाठ के लेखक ..... हैं।
(विवेक मिश्र/अनुपम मिश्र)

(4) गुजरात में पुरुष ..... नृत्य करते हैं।
(गरबा/डांडिया रास)

(5) ..... काल कलाओं के लिए स्वर्ण युग माना जाता है।
(मौर्य काल/गुप्त काल)

उत्तर- (1) तीन (2) चपलता (3) अनुपम मिश्र (4) दांडिया रास (5) गुप्त काल।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य बताइये-

(1) गंभीरता शास्त्रीय संगीत का स्थायी भाव है।
(2) चित्रपट संगीत में नवनिर्मित की बहुत गुंजाइश है।
(3) जो जल कुई से निकाला जाता है उसे पालर पानी कहते है।
(4) प्रकृति से और लगाव भारतीय कलाओं की विशेषता है।
(5) भारतीय संगीत शास्त्र का मुख्य वाद्य सितार रहा है।

उत्तर- (1) सत्य (2) सत्य (3) असत्य (4) सत्य (5) असत्य

प्रश्न 4. सही जोड़ियां बनाइये-

(अ)	(ब)
(1) घूमर नृत्य	(a) महाराष्ट्र
(2) लावणी नृत्य	(b) राजस्थान
(3) सत्तरीय नृत्य	(c) असम
(4) भारतीय कलाएं	(d) अनुपम मिश्र
(5) राजस्थान की रजत बूँदें	(e) कुमार गंधर्व
(6) स्वर साम्राज्ञी	(f) संकलित

उत्तर- (1) राजस्थान (2) महाराष्ट्र (3) असम (4) संकलित (5) अनुपम मिश्र (6) कुमार गंधर्व।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) लता जी की लोकप्रियता का मुख्य गर्म क्या है?
(2) लता मंगेशकर के पहले चित्रपट संगीत के क्षेत्र में कौन सी गायिका का बोलबाला था?
(3) कुई की खुदाई किस औजार से की जाती है?
(4) अनुपम मिश्र ने पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर कौन सी पुस्तक लिखी हैं?
(5) सबसे प्राचीन चित्रों के नमूने कहाँ मिलते हैं?

उत्तर- (1) गायन (2) नूरजहाँ (3) बसोली (4) शैल चित्र (5) अजंता, एलोरा, (महाराष्ट्र) में।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-30 शब्दों में लिखिए-**

प्रश्न 1. चित्रपट संगीत और शास्त्रीय संगीत में क्या अंतर है?

उत्तर- शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत दोनों का लक्ष्य आनंद प्रदान करना है, फिर भी दोनों में पर्याप्त अंतर है-

(1) शास्त्रीय संगीत में गंभीरता अपेक्षित होती है, जबकि चित्रपट संगीत का गुणधर्म चपलता व तेज लय है।

(2) शास्त्रीय-संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है, जबकि चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है।

(3) शास्त्रीय संगीत में तालों का पूरा ध्यान रखा जाता है, जबकि चित्रपट-संगीत में आधे तालों का उपयोग होता है।

(4) चित्रपट-संगीत में गीत और आघात को ज्यादा महत्व दिया जाता है, सुलभता तथा लोच को अग्र स्थान दिया जाता है। शास्त्रीय संगीत में ऐसा नहीं होता है।

प्रश्न 2. लता के गायन की दो विशेषताएँ बताइए।

उत्तर- लेखक कुमार गन्धर्व ने लता की गायकी की निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर किया है-

1. सुरीलापन- लता के गायन में सुरीलापन है। उनके स्वर में अद्‌भुत मिठास, तन्मयता, मस्ती, लोच आदि है। उनका उच्चारण मधुर गुँज से परिपूर्ण रहता है।

2. कोमलता और मुग्धता- लता के स्वरों में कोमलता व मुग्धता है।

3. स्वरों में निर्मलता- लता के स्वरों में निर्मलता है। यह उनके गायन में झलकता है।

4. नादमय उच्चारण- यह लता के गायन की अपनी विशेषता है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। ऐसा लगता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं।

5. शास्त्रीय शुद्धता- लता के गीतोंमें शास्त्रीय शुद्धता है। उन्हें शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी है। उनके गीतों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगत होने के साथ-साथ रंजकता भी पाई जाती है।

प्रश्न 3. कुई की सिंचाइ के लिए कौन-कौन से विकल्प काम में लिए जाते हैं?

उत्तर- छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औजार (बसौली) होता है जिस पर लोहे का नुकीला फल तथा लकड़ी का हत्था लगा होता है। जो कुई की सिंचाई में उपयोग में लिये जाते हैं।

प्रश्न 4. रेजाणी पानी किसे कहा जाता है?

उत्तर- रेजाणीपानी- धरातल से नीचे उतरा, लेकिन पाताल में न मिलने वाला पानी रेजाणी पानी कहलाता है। वर्षा जल को मापने के लिए 'रेजा' शब्द का उपयोग होता है और रेजा का माप धरातल पर हुई वर्षा को नहीं, धरातल में समाई वर्षा को मापता है।

प्रश्न 5. नृत्य और नृत्य में क्या अंतर है?

उत्तर- नृत्य शब्द का अर्थ है अंगों का लय बद्ध परिचालन। नृत्य शब्द नर्तन के तीनों भेदों में सबसे कठिन है और सबसे प्रभावपूर्ण भी। नृत्य शब्द का अर्थ है - नाटक और नृत्य दोनों, अर्थात् भावों की अभिव्यक्ति और अंगों का लयबद्ध परिचालन दोनों।

प्रश्न 6. गुप्त काल को कला का स्वर्ण काल क्यों कहा गया है?

उत्तर- गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग माना जाता है। इसे भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार, धार्मिक सहिष्णुता, आर्थिक समृद्धि तथा शासन व्यवस्था की स्थापना काल के रूप में जाना जाता है।

मूर्तिकला के क्षेत्र में देखें तो गुप्त काल में भरहुत, अमरावती, सांची तथा मथुरा कला की मूर्तियों में कुषाण कालीन प्रतीकों तथा प्रारंभिक मध्यकालीन युग की नग्नता के मध्य अच्छे संश्लेषण तथा जीवंतता का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती है।□

इकाई-4 अभिव्यक्ति और माध्यम

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए- (1 अंकीय)

(1) हिन्दी का प्रथम साप्ताहिक पत्र था-

(a) बंगाल गजट (b) उदंत मार्तंड

(c) सरस्वती (d) कर्मवीर

(2) दैनिक समाचार पत्र की एक निर्धारित समय सीमा होती है-

(a) टाइमलाइन (b) वर्क लाइन

(c) डेडलाइन (d) प्राइमलाइन

(3) एनी फ्रैंक की 'डायरी द डायरी ऑफ यंग गर्ल' मुलतः कौन-सी भाषा में लिखी गई ?

(a) फ्रेंच (b) डच

(c) अंग्रेजी (d) जर्मन

(4) किसी भी फिल्म का जाता है-

(a) पटकथा

(c) नई कथा

उत्तर-(1) उदंत मार्तण्ड

(4) पटकथा।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की

(1) ऑल इंडिया रेडियो

(2) एफ एम से तात्पर्य .. मैड्यूलेशन)

(3) डायरी नितांत .....

(4) पटकथा को अंग्रेजी स्क्रीन प्ले।

उत्तर- (1) 1936 (2)

(4) स्क्रीनप्ले ।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य

(1) निरक्षर लोगों के लि माध्यम है।

(2) भारत में टीवी सेवा

(3) डायरी नितांत अंतर

(4) संचार शब्द की उत

उत्तर- (1) सत्य (2) अ

प्रश्न 4. सही जोड़ियां

(अ)

(1) भारत की पहली मू

(2) भारत की पहली ब

(3) भारत में टीवी सेव

(4) भारत में टेलीविज

उत्तर- (1) 1913 (2

प्रश्न 5. एक शब्द/

(1) पटकथा किसे क

(2) बीट से क्या आश

(3) टीवी सेवा को दू

(4) संचार का सबसे

(4) किसी भी फिल्म का धारावाहिक की कथा को कहा जाता है-

(a) पटकथा (b) लोक कथा

(c) नई कथा (d) चित्र कथा

उत्तर-(1) उदंत मार्तण्ड (2) डेडलाइन (3) फ्रैंच लाइन (4) पटकथा।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना ..... में हुई। (1926/1936)

(2) एफ एम से तात्पर्य ..... है (फ्री मैड्यूलेशन/फ्रिक्वेंसी मैड्यूलेशन)

(3) डायरी नितांत ..... रचना है। (अतरंग/बहिरंग)

(4) पटकथा को अंग्रेजी में ..... कहते हैं। (पिक्चर प्ले/स्क्रीन प्ले।

उत्तर- (1) 1936 (2) फ्रिक्वेंसी माड्यूलेशन (3) अंतरंग (4) स्क्रीनप्ले।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य बताइये-

(1) निरक्षर लोगों के लिए रेडियो जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है।

(2) भारत में टीवी सेवा का विधिवत प्रारंभ 1947 में हुआ।

(3) डायरी नितांत अंतरंग रचना है।

(4) संचार शब्द की उत्पत्ति 'चार' धातु से हुई है।

उत्तर- (1) सत्य (2) असत्य (3) सत्य (4) असत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ियां बनाइये-

(अ)	(ब)
(1) भारत की पहली मूक फिल्म	(a) 1959
(2) भारत की पहली बोलती फिल्म	(b) 1913
(3) भारत में टीवी सेवा का विधिवत प्रारंभ	(c) 1931
(4) भारत में टेलीविजन की शुरूआत	(d) 1965

उत्तर- (1) 1913 (2) 1931 (3) 1965 (4) 1959.

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) पटकथा किसे कहते हैं?

(2) बीट से क्या आशय है?

(3) टीवी सेवा को दूरदर्शन नाम कब दिया गया?

(4) संचार का सबसे प्रमुख प्रकार कौन-सा है?

उत्तर- (1) ऐसी कथा जो पर्दे पर दिखाई जाए पटकथा कहलाती है (2) संवाददाता के कार्यक्षेत्र को बीट कहा जाता है (3) 1976 (4) जनसंचार।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-30 शब्दों में लिखिए।** (2 अंकीय)

प्रश्न 1. अंतरवैयक्तिक संचार से क्या आशय है?

उत्तर- जिस संचार में संचारक और प्राप्तकर्ता एक ही व्यक्ति होता है, उसे 'अन्त: वैयक्तिक संचार' कहते हैं। जैसे- पूजा करना, ध्यान करना, अध्ययन करना आदि।

प्रश्न 2. निम्नलिखित शब्दों को क्रम में लिखिए-

क्रम, क्रन्दित, क्रन्दन, क्रमश:

उत्तर- क्रम, क्रन्दित, कृन्दन, क्रमश:

प्रश्न 3. संयुक्त व्यंजन के संबंध में हिन्दी वर्णमाला एवं शब्दकोष में क्या अंतर है?

उत्तर- हिन्दी वर्णमाला क्रम और शब्दकोष में प्रयुक्त वर्णक्रम में अंतर होता है। प्रारंभ स्वर से ही होता है फिर व्यंजनों का प्रयोग होता है।

हिन्दी भाषा में शब्दकोष देखने के लिए हमें हिन्दी भाषा की वर्णमाला, द्वित्व प्रयोग, संयुक्ताक्षर आदि की जानकारी होनी चाहिए।

प्रश्न 4. शब्दकोष एवं संदर्भ ग्रंथ में क्या अंतर है?

उत्तर- शब्दकोष-उस ग्रंथ को शब्दकोष कहते हैं जिसमें शब्दों को यों ही अथवा अर्थसहित किसी क्रमविशेष में सुनियोजित कर दिया गया हो। वैदिक काल में शब्दकोष के स्थान पर 'निघण्टु' नाम चलता था। उस समय का केवल एक निघण्टु प्राप्त है जिस पर यास्क ने निरुक्त लिखा है। निघण्टु को वैदिक शब्दकोष कहते हैं। वैदिककाल से अब तक भारत के अनेक कोशों का निर्माण हुआ।

अंग्रेजी में कोष- निर्माण का प्रारंभ 16 वीं सदी के उत्तरार्द्ध से हुआ। अब तो कोष विज्ञान नाम से भाषाविज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा का विकास हो गया है।

संदर्भ ग्रन्थ- ऐसा ग्रंथ जिसमें जानकारी या विमर्श के लिए कुछ विशिष्ट प्रसंगों की बातें देखी जाती हों।

विशेष– ऐसा ग्रंथ आद्योपान्त पढ़ा नहीं जाता बल्कि किसी जिज्ञासा की पूर्ति या संदेह के निवारण के उद्देश्य से देखा जाता है। जैसे- कोश, विश्वकोश, साहित्य कोश आदि संदर्भ के ग्रंथ है।

प्रश्न 5. अंतर वैयक्तिक संचार और संचार में क्या अंतर है?

उत्तर- जब दो व्यक्ति आपस में और प्रत्यक्ष में संचार करते हैं, तब उसे 'अन्तर वैयक्तिक संचार' कहते हैं।

इस संचार में फीडबैक तत्काल मिलता है। सम्बन्धों में प्रसार होता है। यह संचार पारिवारिक और सामाजिक सम्बन्धों की बुनियाद है।

संचार- 'संचार' शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है- चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान पर चलकर जाना या पहुँचाना। 'चर' धातु के पूर्व 'सम्' उपसर्ग जुड़ा है। इस प्रकार 'संचर' और फिर 'संचार' शब्द बना।

'संचार' का अर्थ है- सूचनाओं, विचारों और भावनाओं को लिखित, मौखिक या दृश्य-श्रव्य माध्यमों से सफलतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना। ❑

इकाई-5 काव्य बोध

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए- **(1 अंकीय)**

(1) यहाँ दरख्तों के साए में धूप लगती है। उपरोक्त पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(a) व्यतिरेक (b) विरोधाभास
(c) भ्रांतिमान (d) मानवीकरण

(2) दोहे में कुल कितनी मात्राएं होती हैं?

(a) 24 (b) 26
(c) 28 (d) 31

(3) और माँ बिन पढ़ी मेरी
दुख में वह गढ़ी मेरी
मां की जिसकी गोद में सिर
रख लिया तो दुख नहीं फिर
उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?

(a) शांत रस (b) वात्सल्य रस
(c) वीर रस (d) करूण रस

(4) मौत के आगे ना हिचके
शेर के आगे ना बिचके
बोल में बादल गरजता
काम में झंझा लरजता
उक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है?

(a) वीर रस (b) रौद्र रस
(c) हास्य रस (d) शांत रस

(5) लोक प्रचलित अथवा शब्दकोष आधारित शब्द के अर्थ का ज्ञान कौन-सी शब्द शक्ति से होता है?

(a) अमिधा (b) लक्षणा
(c) व्यंजना (d) व्यंगार्थ

उत्तर- (1) विरोधाभास (2) 24 (3) करुण रस (4) वीर रस (5) अमिधा।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(1) वीर रस प्रधान कविताओं ..... में गुण होता है। (प्रसाद/ओज)

(2) रस के अंग ..... होते हैं। (चार/नौ)

(3) शांत रस का स्थाई ..... भाव है (शोक/निर्वेद)

(4) उत्तेजना के मूल कारण को ..... कहते हैं। (विभाव/अनुभाव)

(5) गाय पालतू पशु है वाक्य ..... में शब्द शक्ति है। (अमिधा/व्यंजना)

उत्तर- (1) ओज (2) चार (3) निर्वेद (4) विभाव (5) अमिधा।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य बताइये-

(1) संचारी भाव की संख्या 35 है।
(2) अनुभाव के अंतर्गत आश्रय की चेष्टा आती है।
(3) दोहा तथा सोरठा में कुल 24 मात्राएं होती है।
(4) फूल मुस्कुरा उठे मैं मानवीकरण अलंकार है।
(5) भ्रांतिमान अलंकार में अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है।
(6) गणों की संख्या 9 मानी गई है।
(7) दोहे तथा रोला को मिलाकर कुंडलियां छंद बनता है।
(8) मुख है या चंद्र है मे संदेह अलंकार है।

उत्तर- (1) असत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) असत्य (6) असत्य (7) सत्य (8) सत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ियां बनाइये-

(अ)	(ब)
(1) छंद	(a) मात्रा/वर्ण
(2) दोहा	(b) 31
(3) चौपाई	(c) 16
(4) कविता	(d) 24
(5) सवैया	(e) 26

उत्तर- (1) 24 (2) 16 (3) 31 (4) 26 (5) मात्रा/वर्ण।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) चारों चरण में समान मात्रा वाले शब्द को क्या कहा जाता है?

(2) चरण में मात्राओं के आधार पर सोरठा छंद का ठीक विपरीत छंद कौन-सा है?

(3) कवित्त में कितनी मात्राएं होती हैं?

(4) अवहित्थ कौन-सा भाव है?

(5) शृंगार परक रचनाओं में कौन सा गुण होता है?

(6) रस ओत्पत्ति में आश्रय की चेष्टाएं क्या कहलाती है?

(7) रसराज की उपाधि कौन से रस को प्राप्त है?

(8) वैराग्य कौन से रस का स्थायी भाव है?

(9) शब्द की प्रथमा शक्ति किसे कहा जाता है?

(10) "केशव कहीं ना जाए का कहिए।
देखततव रचना विचित्र अति समझी मन ही मन रहिये। पंक्तियों में कौन सा रस है?

(11) "पगड़ी की लाज रखी है" मैं कौन सी शब्द शक्ति है?

उत्तर- (1) सम मात्रिक (2) दोहा (3) 31 (4) संचारी भाव (5) माधुर्य (6) अनुभाव (7) शृंगार (8) शांत (9) अमिधा (10) अद्भुत (11) लक्षणा।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-30 शब्दों में लिखिए- (2 अंकीय)**

प्रश्न 1. अनुभाव से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- जिंदगी की वास्तविक समझ अनुभव से पैदा होती है। हम अपनी क्षमताओं का समुचित आकलन और नियोजन अनुभव करके ही कर सकते हैं। अनुभव किए बगैर न तो हम अपनी जिंदगी जी सकते हैं और न ही अपने अंदर समाई दिव्य क्षमताओं का परिचय पा सकते हैं। इस सबको जानने, समझने और सही नियोजन करने के लिए हमें उसी रूप में उन्हें महसूस करना चाहिए। हम आखिर हैं कौन और हमारे अंदर क्या है, जो बाहर फूटकर आना चाहता है? क्षमताएं अंदर सुप्त रूप में पड़ी रहती है।

प्रश्न 2. संचारी भाव किसे कहते हैं?

उत्तर- संचारी भाव- मन के चंचल विकारों को संचारी भाव कहते हैं। संचारी भाव भी आश्रय के मन में उत्पन्न होते हैं। संचारी भावों की संख्या 33 है, जैसे- निर्वेद, चिंता, मोह, स्मति, धैर्य, लज्जा, चपलता, आवेग, हर्ष,ग्लानि, शंका, निद्रा, आलस्य, असूया, गर्व, विषाद, उत्सुकता, उग्रता, मति, त्रास, वितर्क, मद, दीनता आदि।

प्रश्न 3. हास्य रस को उदाहरण से समझाइए।

उत्तर- हास्य रस- वेशभूषा, वाणी, चेष्टा आदि की विकृति को देखकर हृदय में विनोद का जो भाव जागृत होता है, उसे 'हास' कहा जाता है। यही 'हास' विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से पुष्ट होकर 'हास्य रस' में परिणत हो जाता है।

हास्य रस के उदाहरण-

बिन्ध्य के बासी उदासी तपो ब्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिबृन्द सुखारे।।
ढहैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे,
कीन्हीं भली रघुनायक जू! करुना करि कानन को पगु धारे।।

प्रश्न 4. शांत रस कब उत्पन्न होता है उदाहरण से समझाइए।

उत्तर- शान्त रस

परिभाषा- सहृदय के हृदय में स्थित निर्वेद नामक स्थायी भाव का जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से संयोग हो जाता है तब वह निर्वेद शान्त रस का रूप ग्रहण कर लेता है।

अथवा

जहाँ सांसारिक वस्तुओं में विरक्ति का वर्णन हो, वहाँ शान्त रस होता है।

उदाहरण-

(1) सुत बनितादि जानि स्वारथरत न करु नेह सबही ते।
अंतहि तेहि तजेंगे पामर! तू न तजै अबही ते।।
अब नाथहिं अनुराग जागु जड़, त्यागु दुरासा जी ते।
बुझै न काम-आगिनि तुलसी कहूँ विषय भोग बहु घी ते।।
- तुलसी- विनय पत्रिका

प्रश्न 5. व्यंजना शब्द शक्ति को उदाहरण द्वारा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- व्यंजना शब्द शक्ति को स्पष्ट कीजिए-

शब्द के जिस व्यापार से मुख्य और लक्ष्य अर्थ से भिन्न अर्थ की प्रतीति हो उसे व्यंजना कहते हैं। व्यंजना शब्द शक्ति से अन्यार्थ या विशेषार्थ का ज्ञान कराने वाला शब्द व्यंजक कहलाता है, जबकि उस व्यंजक शब्द से प्राप्त अर्थ को व्यंग्यार्थ या धन्यार्थ कहते हैं।

प्रश्न 6. रस तथा उसके स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर- परिभाषा- काव्य में रस का अर्थ है 'आनन्द की प्राप्ति'। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक आदि पढ़ने-सुनने या देखने में पाठक की एक प्रकार के विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है, उसे रस कहते हैं।

किसी काव्य के पठन, श्रवण या अभिनय दर्शन
पाठक श्रोता अभिनय दर्शक का जब हर लेता मन
और अलौकिक आनन्द से जब मन तन्मय हो जाता
वन का यह रूप काव्य में रस कहलाता।

काव्यास्वादन के अनिर्वचनीय आनन्द को रस कहा गया है। रस काव्य की आत्मा है, काव्य का प्राण है। रस की अनुभूति के समय मन आनन्द से परिपूर्ण हो जाता है।

रस निष्पत्ति विषयक भरत-मुनि का सूत्र ध्यान देने योग्य है-

"विभावानुभाव संचारी संयोगादस निष्पत्ति।"

अर्थात् विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।"

अर्थात विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव- रति, हँसी, क्रोध, भय, उत्साह, आश्चर्य, करूणा, घृणा, वैराग्य, स्नेह।

प्रश्न 7. रस के अंग लिखिए।

उत्तर- रस के अंग निम्नलिखित हैं-

(1) स्थायी भाव (2) संचारी भाव
(3) अनुभाव (4) विभाव।

प्रश्न 8. संचारी भाव एवं स्थायी भाव में अंतर बताइए।

उत्तर- स्थायी भाव एवं संचारी भाव में अंतर-

(1) स्थायी भाव उत्पन्न होकर शीघ्र नष्ट नहीं होते।रस परिपाक होते तक बने रहते हैं, किन्तु संचारी भाव पानी के बुलबुले की तरह क्षण-क्षण में बनते-मिटते रहते हैं।

(2) प्रत्येक रस का एक ही स्थायी भाव होता है तथा यह निश्चित होता है, किन्तु संचारी भाव निश्चित नहीं होता। एकही संचारी भाव अनेक रसों के साथ रह सकता है, इसलिए संचारी भाव को उनकी प्रवृत्ति के अनुसार व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है।

(3) स्थायी भाव की संख्या 10 मानी गयी है, जबकि संचारी भावों की संख्या 33 मानी गयी है।

(4) स्थायी भावों की तुलना सरोवर (तालाब) में स्थित जल के साथ की जाती है, जबकि संचारी भावों की तुलना पानी में उठने वाली लहरों के साथ की जाती है।

(5) संचारी भाव स्थायी भाव को पुष्ट करने में सहायक होते हैं, जबकि स्थायी भाव इसकी पूर्ण अवस्था है।

प्रश्न 9. विरोधाभास अलंकार को उदाहरण द्वारा समझाइए।

उत्तर- या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बूड़े श्याम रंग त्यों त्यों उज्जवल होए।।

यहाँ श्याम रंग में डूबने से उज्जवल होने की बात कही गई है, जबकि श्याम रंग में डूब कर कोई उज्जवल कैसे हो सकता है। अत: यहाँ विरोध का आभास होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

प्रिय मौन एक संगीत भरा।

संगीत के समय चारों ओर ध्वनि का विस्तार होता है किंतु यहाँ मौन रहकर संगीत का आभास कराना विरोधाभास अलंकार है।

प्रश्न 10. मानवीकरण अलंकार को उदाहरण द्वारा समझाइए।

उत्तर- मानवीकरण अलंकार- जब जड़ पदार्थों और प्रकृति के अंग (नदी, पर्वत, लताएँ, झरने, हवा, पत्थर, पक्षी) आदि पर मानवीय क्रियाओं का आरोप लगाया जाता है अर्थात् मनुष्य जैसा कार्य व्यवहार करता हुआ दिखाया जाता है तब वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे हरषाया ताल लाया पानी परात भरके। यहाँ मेहमान के आने पर तालाब द्वारा खुश होकर पानी लाने का कार्य करते हुए दिखाया गया है। अत: यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

मानवीकरण अलंकार अन्य उदाहरण-

है मसे भीगती गेहूँ की तरुणाई फूटी आती है।

यहाँ गेहूँ तरुणाई फूटने में मानवीय क्रियाओं का आरोप है।
यौवन में माती मटरबेलि अलियों से आँख लड़ाती है।
मटरबेलि का सखियों से आँख लड़ाने में मानवीय क्रियाओं का आरोप है।

प्रश्न 11. प्रसाद गुण आधारित काव्य पंक्तियां लिखिए।

उत्तर– प्रसाद गुण आधारित काव्य पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं–

(1) हिमगिरि के उत्तंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाँह
एक पुरुष, भीगे नयनों से,देख रहा था प्रलय प्रवाह।

(2) नीचे जल था ऊपर हिम था,एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।

(3) दूर–दूर तक विस्तृत था हिम, स्तब्ध उसी के हृदय समान
नीरवता–सी शिला–चरण से, टकराता फिरता पवमान।

(4) तरूण तपस्वी–सा वह बैठा, साधन करता सुर श्मशान,
नीचे प्रलय सिंधु लहरों का, होता था सकरूण अवसान।

प्रश्न 12. शांत रस को उदाहरण द्वारा समझाइए।

उत्तर– जब मनुष्य मोह–माया को त्याग कर सांसारिक कार्यों से मुक्त हो जाता है और वैराग्य धारण कर परमात्मा के वास्तविक रूप का ज्ञान होता है, तो मनुष्य के मन को जो शान्ति मिलती है, इसे शांत रस कहते हैं।

शांत रस का उदाहरण– ऐसी मूढ़ता या मन की। परिहरी रामभगति–सुरसरिता, आस करत ओसकन की।। धूम समूह निरखि–चातक ज्यों, तृषित जानि मति धन की। नहिं तहं सीतलता न बारि, पुनि हानि होति लोचन की।।

प्रश्न 13. माधुर्य और ओजगुण में क्या अंतर है?

उत्तर– माधुर्य गुण– हृदय को आनन्द उल्लास से द्रवित करने वाली कोमलकांत पदावली से युक्त रचना माधुर्य गुण संपन्न होती है।

अर्थात् ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ कर चित्त में शृंगार, करूण, शान्ति के भाव उत्पन्न होते हैं। वह माधुर्य गुण युक्त रचना मानी जाती है।

ओजगुण– ऐसी रचना जिसको पढ़ने से चित्त में जोश, वीरता, उत्साह,उल्लास आदि के भाव उत्पन्न हो जाए वह ओज गुण युक्त काव्य रचना मानी जाती है।

प्रश्न 14. आचार्य भरतमुनि के अनुसार रस की परिभाषा लिखिए।

उत्तर– भरतमुनि (रस सिद्धांत के मूल प्रवर्तक लगभग 200 ई.पू. आचार्य भरतमुनि माने जाते हैं) भरतमुनि के रस सूत्र के अनुसार, "विभावानुभावव्यभिचारि संयोगाद्रसनिष्पत्ति:।" अर्थात– विभाव,अनुभाव और व्यभिचारी भावों (स्थायीभाव) के संयोग से रस निष्पत्ति होती है। 'निष्पत्ति' शब्द का प्रथम प्रयोग भरत मुनि ने रस सूत्र में किया। शंकुक के अनुसार भरतमुनि के रस–सूत्र में आये 'संयोग' शब्द का अर्थ अनुमान है।

प्रश्न 15. संदेह एवं भ्रांतिमान अलंकार में अंतर बताइए।

उत्तर– संदेह एवं भ्रांतिमान अलंकार में अन्तर निम्नलिखित है– जहाँ समानता के कारण अनिश्चय की स्थिति बनी रहती है वहाँ सन्देह अलंकार होता है। यथा–

कैधो व्योम बीथिका भरे है भूरि धूमकेतु,
वीर रस वीर तर पारि सी उघारी है।

अर्थात् हनुमान की जलती हुई पूंछ को देखकर ऐसा लगता है मानो आकाश मार्ग में अनेक धूमकेतु हैं, मानो वीर रस रूपी वीर ने अपनी तलवार म्यान से निकाली है जो चारों ओर चमक रही है।

भ्रांतिमान अलंकार में समानता के कारण एक वस्तु में दूसरी वस्तु का भ्रम हो जाता है। यथा–

नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाड़िम का समझकर भ्रान्ति से। ❑

इकाई–6 भाषा बोध

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30–30 शब्दों में लिखिए–** **(2 अंकीय)**

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) 'काठ का उल्लू' मुहावरे का अर्थ है–

(a) मूर्ख (b) गुणवान
(c) अंधा (d) निर्जीव

(2) मोहन सफेद झूठ बोल रहा है, सफेद झूठ से क्या तात्पर्य है–

(a) अपूर्ण सत्य (b) पूर्णत: असत्य
(c) परिहास करना (d) अपूर्ण असत्य

(3) 'काम या व्यक्ति साधारण पर खर्च असाधारण' के अर्थ को बोध कराने वाली कहावत है–

(a) नौ नगद तेरह उधार

(b) न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी

(c) नो दिन चाले अढ़ाई कोस

(d) नो की गुड़िया नब्बे का लहंगा

(4) कपटी व्यक्ति के लिए उचित लोकोक्ति क्या होगी?

(a) माले मुफ्त दिले बेरहम (b) मुंह में राम बगल में छुरी

(c) ओछे की प्रीत बालू की भीत

(d) मन चंगा तो कठौती में गंगा

(5) सुनील के खेत में 5 क्विंटल गेहूँ की पैदावार हुई है रेखांकित शब्द में कौन–सा विशेषण है?

(a) संख्यावाचक (b) परिमाणवाचक

(c) क्रिया विशेषण (d) प्रविशेषण

(6) 'वह बहुत तेज दौड़ता है' में 'बहुत' क्या है?

(a) क्रिया विशेषण (b) प्रविशेषण

(c) विशेषण (d) सार्वनामिक विशेषण

(7) किसी बात पर जोर देने के लिए जो शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं। उन्हें क्या कहा जाता है?

(a) निपात (b) प्रत्यय

(c) उपसर्ग (d) कारक

(8) पूरा शब्द का तत्सम रूप है–

(a) पूर्व (b) पूर्ण

(c) पर्ण (d) पूर्य

(9) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द देशज है–

(a) गिलास (b) पलंग

(c) पथ (d) लोटा

(10) निम्नलिखित में से कौन–से शब्द में प्रत्यय का प्रयोग हुआ है–

(a) प्रतीक (b) धनिक

(c) अलक (d) पलक

(11) निम्नलिखित में से कौन–सा शब्द बाण का पर्यायवाची है?

(a) शर (b) सर

(c) सुर (d) शिर

(12) सत, रज, तम के लिए एक शब्द होगा–

(a) प्रताप (b) त्रिगुण

(c) त्रिलोक (d) त्रिदोष

(13) जिसमें हानि अथवा अनर्थ का भय ना हो–

(a) निरापद (b) निराकार

(c) निराधार (d) निराश्रय

(14) 'फेंक कर मारा जाने वाला हथियार' के लिए शब्द होगा–

(a) शस्त्र (b) अस्त्र

(c) पत्र (d) त्रस्त

(15) जो किए गए उपकार को मानता हो

(a) कृतज्ञ (b) कत्ल

(c) कृपापत्र (d) उपकारी

उत्तर–(1) मूर्ख (2) पूर्णत: असत्य (3) नौ की गुड़िया नब्बे का लहंगा (4) मुंह में राम बगल में छुरी (5) परिमाण वाचक (6) प्रविशेषण (7) निपात (8) पूर्ण (9) लोटा (10) धनिक (11) शर (12) त्रिगुण (13) निरापद (14) अस्त्र (15) कृतज्ञ।

प्रश्न 2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(1) मोक्ष की इच्छा रखने वाले को ..... कहते हैं।
(आस्तिक/मुमुक्षु)

(2) संक्षेपण किसी भी गद्यांश का ..... होता है।
(दो तिहाई/एक तिहाई)

(3) वह भाषा जिसमें राज्य के संदेश प्रचारित प्रसारित होते हैं ..... कहलाते हैं। (राजभाषा/राष्ट्रभाषा)

(4) अतिवृष्टि में मूल शब्द ..... है। (अति/वृष्टि)

(5) वाक्य में मूलत: ..... अंग होते हैं। (दो/तीन)

(6) रचना के आधार पर वाक्य के ..... भेद हैं (तीन/चार)

(7) ..... के वाक्य में उपवाक्य निश्चित रूप से रहता है।
(मिश्र/संयुक्त)

(8) 'मैंने वैसा ही किया जैसा आपने बताया था।' वाक्य ..... का उदाहरण है। (मिश्र/संयुक्त)

(9) जैसा बोओगे वैसा काटोगे वाक्य ..... का उदाहरण है।
(सरल / मिश्र)

(10) संज्ञा उपवाक्य प्राय: .....से जुड़ा रहता है। (कि/की)

(11) विशेषण उपवाक्य प्राय: ..... से जुड़ा रहता है। (ज्यों/जो)

(12) रामू और श्यामू एक ही जगह पढ़ते हैं। वाक्य में ही शब्द ..... का उदाहरण है। (उपसर्ग/निपात)

(13) हिंदी साहित्य में रस ..... शब्द है। (तकनीकी/पारिभाषिक)

(14) जीव विज्ञान के अंतर्गत कोशिका एक ....., शब्द है। (पारिभाषिक/तकनीकी)

(15) तकनीक ..... शब्द है। (परिभाषिक/तकनीकी)

उत्तर- (1) मुमुक्षु (2) एक तिहाई (3) राजभाषा (4) वृष्टि (5) दो (6) तीन (7) मिश्र (8) मिश्र (9) मिश्र(10) कि (11) जो (12) निपात (13) पारिभाषिक (14) तकनीकी (15) तकनीकी।

प्रश्न 3. सत्य/असत्य बताइये-

(1) मुहावरे प्राय: शारीरिक अंगों से संबंधित होते हैं।

(2) मुहावरा अरबी भाषा का शब्द है।

(3) लोकोक्ति कहावत का आधार लोकजीवन है।

(4) तत्सम शब्द से तात्पर्य संस्कृत के शुद्ध शब्दों से है।

(5) संस्कृत शब्द का विकृत बिगड़ा हुआ रूप तद्भव शब्द कहलाता है।

(6) प्रत्यय मूल शब्द के आगे लगाया जाता है।

(7) विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाता है।

(8) विशेषण के मुख्यत: 6 प्रकार होते हैं।

(9) आदमी बड़ा मेहनती था वाक्य में 'बड़ा' शब्द प्रविशेषण है।

(10) अच्छे विज्ञापन की विशेषता होती है कि वह संक्षिप्त तथा प्रभावी होता है।

(11) मुँह की खाना एक कहावत है।

(12) मुहावरों में लक्ष्यार्थ से शब्द का सही अर्थ का पता चलता है।

(13) तकनीकी शब्दों का संक्षेप विजपन से होता है।

(14) संयुक्त वाक्य में 2 सरल वाक्य होते हैं।

(15) मिश्र वाक्य के अंतर्गत आश्रित उपवाक्य के दो भेद हैं।

उत्तर- (1) सत्य (2) सत्य (3) सत्य (4) सत्य (5) सत्य (6) असत्य (7) असत्य (8) असत्य (9) सत्य (10) सत्य (11) असत्य (12) सत्य (13) सत्य (14) सत्य (15) असत्य।

प्रश्न 4. सही जोड़ियाँ बनाइये-

(अ)	(ब)
(1) आँखे फूटना	(a) ध्यान ना देना
(2) आँखे मूंदना	(b) स्वागत करना
(3) आँख का अंधा	(c) मूर्ख अज्ञानी
(4) आँख का कांटा	(d) डराना
(5) आँख का तारा	(e) गुस्सा होना
(6) आँख दिखाना	(f) प्रिय होना
(7) आँख बिछाना	(g) दुश्मन होना
(8) आंख तरेरना	(h) दिखाई ना देना /लापरवाह
(9) जहाँ जाना कठिन हो	(i) अज्ञेय
(10) जहाँ पहुंचा ना जा सके	(j) दुर्गम
(11) जिसके समान अन्य ना हो	(k) अज्ञात
(12) जिसे जाना ना जा सके	(l) अजेय
(13) जिसके समान दूसरा न हो	(m) अगम्य
(14) जो थोड़ा जानता हो	(n) अनन्य
(15) जो ज्ञात नहीं है	(o) अद्वितीय
(16) जिसे जीता न जा सके	(p) अल्पज्ञ

उत्तर- (1) दिखाई न देना, लापरवाही करना (2) ध्यान न देना (3) मूर्ख, अज्ञानी (4) दुश्मनी का भाव रखना (5) बहुत प्यारा (6) डराना (7) स्वागत करना (8) गुस्सा होना (9) दुर्गम (10) अगम्य (11) अनन्य (12) अज्ञेय (13) अद्वितीय (14) अल्पज्ञ (15) अज्ञात (16) अजेय।

प्रश्न 5. एक शब्द/वाक्य में उत्तर दीजिए-

(1) तत्सम शब्द की परिभाषा लिखिए।

(2) तद्भव शब्द की परिभाषा लिखिए।

(3) प्रत्यय और उपसर्ग में क्या अंतर है?

(4) रचना के आधार पर वाक्य के कितने भेद माने गए हैं।

(5) सरल वाक्य की परिभाषा लिखिए।

(6) मिश्र वाक्य की परिभाषा लिखिए।

(7) संज्ञा आश्रित उपवाक्य कौन से होते हैं?

(8) विशेषण आश्रित उपवाक्य किसे कहते हैं?

(9) क्रियाविशेषण आश्रित उपवाक्य किसे कहते हैं।

(10) संयुक्त वाक्य की परिभाषा लिखिए।

(11) राजभाषा से क्या तात्पर्य है?

(12) राष्ट्रभाषा से क्या तात्पर्य है?

(13) निपात किसे कहते हैं?

(14) राम स्कूल जाता है शाम बाजार जाता है यह कौन-सा वाक्य है?

(15) शिक्षक ने कहा कि "कल अवकाश रहेगा"। यह कौन-सा वाक्य है?

उत्तर– (1) संस्कृत के शुद्ध शब्द जो सीधे-सीधे हिंदी में प्रयुक्त होते हैं तत्सम शब्द कहलाते हैं।

(2) संस्कृत के विकृत शब्दों को तद्भव कहा जाता है।

(3) प्रत्यय मूल शब्द के पीछे लगता है जबकि उपसर्ग मूल शब्द के आगे।

(4) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं।

(5) ऐसो वाक्य जिसमें एक उद्देश्य और एक विधेय हो और सरल वाक्य कहलाता है।

(6) मिश्र वाक्य।

(7) कि से प्रारम्भ होते हैं।

(8) भाषा जिसमें राज्य के संदेशों आदेश को प्रचारित प्रसारित होते हैं तथा जिसमें सभी राजकीय कार्य होते हैं राजभाषा कहलाती है।

(9) सर्वमान्य भाषा को राष्ट्रभाषा जो उस राष्ट्र की संस्कृति का भी प्रतिनिधित्व करती है उसे राष्ट्र भाषा कहा जाता है।

(10) संयुक्त वाक्य।

(11) मिश्र वाक्य।

(12) जिस भाषा में राष्ट्र के अधिकांश निवासी अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, जो सम्पूर्ण राष्ट्र की भावनात्मक एकता की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है तथा जिसमें राष्ट्र की सांस्कृतिकक चेतना निहित रहती है, उसे 'राष्ट्रभाषा' कहते हैं। जैसे- भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। जापान की राष्ट्रभाषा जापी है।

(13) **निपात शब्द**– किसी भी बात पर अतिरिक्त भार देने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उसे निपात (अवधारक) कहते हैं। जैसे- भी, तो, तक, केवल, ही मात्र आदि।

(14) छात्र स्वयं करें।

(15) छात्र स्वयं करें।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 30-30 शब्दों में लिखिए-** **(2 अंकीय)**

प्रश्न 1. मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य में अंतर बताइए।

उत्तर- संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य में अंतर निम्नलिखित है-

संयुक्त वाक्य- संयुक्त वाक्य में दो स्वतंत्र वाक्य होते हैं, जो योजक के द्वारा एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं। यह योजक किंतु परंतु और, तथा, या, इसलिए, अथवा आदि होते हैं। ये योजक समुच्चयबोधक अव्यय होते हैं।

जैसे- रानी बाजार गई और उसने कपड़े खरीदे।

राजू को बुखार था इसलिए वह स्कूल नहीं गया।

मैंने तुम्हारी बहुत प्रतीक्षा की लेकिन तुम नहीं आए।

मिश्रित वाक्य- मिश्रित वाक्य में कई उपवाक्य होते हैं, जिसमें एक प्रधान उपवाक्य होता है तथा शेष अन्य उपवाक्य आश्रित उपवाक्य कहलाते हैं। यह उपवाक्य एक-दूसरे से व्याधिकरण योजकों द्वारा जुड़े रहते हैं।

जैसे-जब तुम कठोर परिश्रम करोगे तब ही अच्छे अंक पाओगे।

जैसे ही सूर्य निकला वैसे ही चारों तरफ ऊजाला फैल गया।

ज्यों ही बस रुकी, सारे यात्री बस से उतरने लगे।

प्रश्न 2. क्षेत्रीय शब्द से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- क्षेत्रीय शब्द- क्षेत्रीय एक शब्द है जो लैटिन शब्द रीजनलिस से आया है। यह एक विशेषण है जो किसी क्षेत्र से जुड़े क्षेत्र (क्षेत्र का वह अंश जिसकी सीमाएँ विभिन्न प्रशासनिक, आर्थिक, भौगोलिक, आदि) द्वारा निर्धारित की जाती है, को संदर्भित करता है।

प्रश्न 3. राष्ट्रभाषा और राजभाषा में दो अंतर बताइए।

उत्तर- **राष्ट्रभाषा**- जिस भाषा में राष्ट्र के अधिकांश निवासी अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं, जो सम्पूर्ण राष्ट्र की भावनात्मक एकता की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है तथा जिसमें राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना निहित रहती है, उसे 'राष्ट्रभाषा' कहते हैं। जैसे- भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। जापान की राष्ट्रभाषा जापानी है।

राजभाषा- किसी राज्य के शासन कार्यों में जो भाषा प्रयोग में

लाई जाती है, उसे वहाँ की 'राजभाषा' माना जाता है। जैसे– बंगाल में राजकीय या शासकीय कार्यों में बंगाली भाषा का प्रयोग होता है। अतएव वह वहाँ की राजभाषा है।

प्रश्न 4. लोकोक्ति और मुहावरे में अंतर बताइए।

उत्तर– लोकोक्ति– लोकोक्ति का किसी घटना से संबंध होता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि मुहावरे का जन्म किसी घटना से ही हो।

मुहावरा– मुहावरा भाषा में जीवंतता व सौंदर्यवृद्धि लाता है, जबकि लोकोक्ति किसी कथन को पूरा करने के लिए प्रयुक्त होती है।

प्रश्न 5. पारिभाषिक शब्द से आप क्या समझते हैं?

उत्तर– ज्ञान की किसी विशेष विधा (कार्य क्षेत्र) में प्रयोग किये जाने वाले शब्दों की उनकी परिभाषा सहित सूची पारिभाषिक शब्दावली (Glossary) या पारिभाषिक शब्दकोष कहलाती है। उदाहरण के लिए गणित के अध्ययन में आने वाले शब्दों एवं उनकी परिभाषा को गणित की पारिभाषिक शब्दावली कहते हैं। पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटिल विचारों की अभिव्यक्ति को सुचारु बनाता है।

प्रश्न 6. सार लेखन करते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर– सार लेखन के आवश्यक निर्देश–

(1) किसी भी अपठित गद्यांश/पद्यांश/अवतरण या अनुच्छेद का सारांश या सारतत्व लिखने से पहले विद्यार्थियों को उसमें निहित विचारों को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। विषय को समझने के लिए अपठित गद्यांश को कम–से–कम तीन बार पढ़ना चाहिए। इससे कठिन वाक्यों और शब्दों का मूल भाव समझ में आ जाता है। आवश्यक हो तो मूल भावों, विचारों तथा शब्दों को रेखांकित कर लेना चाहिए।

(2) सारांश प्राय: मूल गद्यांश का एक तिहाई होना चाहिए। इसमें केवल मुख्य विचारों को ही स्थान देना चाहिए। उसमें क्रमबद्धता तथा स्पष्टता होनी चाहिए।

(3) यदि गद्यांश का शीर्षक भी पूछा गया हो, तो शीर्षक गद्यांश के आरम्भ में या अन्त में छिपा रहता है। यहाँ से शीर्षक बनाया जा सकता है। शीर्षक अत्यन्त संक्षिप्त और सरल होना चाहिए। शीर्षक का चयन सावधानी से करना चाहिए।

(4) सारांश और शीर्षक के साथ–साथ कभी कुछ अन्य प्रश्न भी परीक्षा में पूछ लिये जाते हैं।

प्रश्न 7. सार लेखन और भाव पल्लवन में क्या अंतर है?

उत्तर– सार लेखन का आशय किसी अनुच्छेद परिच्छेद, विस्तृत टिप्पणी अथवा प्रतिवेदन को संक्षिप्त कर देना होता है। एवं किसी भाव को भाव विस्तार में लिखना जैसे निबन्ध रचना करना भाव पल्लवन कहलाता है।

प्रश्न 8. विशेषण और क्रिया विशेषण में क्या अंतर है?

उत्तर– विशेषण और क्रिया विशेषण के बीच मुख्य अंतर निम्नलिखित हैं–

विशेषण और क्रिया विशेषण के बीच का अंतर निम्नलिखित आधारों पर स्पष्ट रूप से खींचा जा सकता है–

व्याकरण में विशेषण भाषण के आठ भागों में से एक है जो एक संज्ञा या एक सर्वनाम, अर्थात् व्यक्ति, स्थान, जानवर या चीज़ की पहचान और वर्णन करता है। जैसा कि कहा जाता है,एक विशेषण भी भाषण के कुछ हिस्सों में से एक है जो आपको क्रिया, विशेषण या किसी अन्य क्रिया विशेषण के बारे में और जानकारी देता है।

जबकि एक विशेषण एक संज्ञा या सर्वनाम को अर्हता प्राप्त करता है, क्रिया का उपयोग क्रिया, खंड, वाक्यांश, विशेषण, पूर्वसर्ग और संयोजन को संशोधित करने के लिए किया जाता है।

विशेषण प्रश्नों के उत्तर प्रदान करता है जैसे कि, कितने, किस तरह,आदि के अनुसार, क्रियाविशेषण सवालों के जवाब देंगे कि कैसे, कब, कहाँ, कितना, कितना,कितनी बार, किस हद तक आदि।

उदाहरण–

विशेषण–

वह एक बड़ा अलमीरा है।

लड़की के छोटे पैर हैं।

ऐश्वर्या ने गुलाबी रंग का गाऊन पहना है।

क्रिया विशेषण–

मुझे बिजली का बिल मासिक रूप से देना पड़ता है।

यह मेरे साथ बिल्कुल ठीक है।

जिया आज सचमुच खुश है।

प्रश्न 9. विशेषण और विशेष्य विशेषण में क्या अंतर है?

उत्तर- विशेषण और विशेष्य विशेषण में अन्तर निम्नलिखित है-

	विशेषण	विशेष्य विशेषण
(1)	संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता, संख्या, परिमाण आदि बताने वाला विशेषण होता है।	विशेषण जिसकी विशेषता, संख्या, परिमाण आदि बताता है। वह विशेष्य होता है।
(2)	विशेषण सीमित होते हैं। उदाहरण- काला, पाँचवा, कुछ आदि।	विशेषणों की अपेक्षा विशेष्यों की संख्या अनन्त होती है। उदाहरण- गाय, कक्षा, वह आदि।

प्रश्न 10. क्रिया विशेषण के प्रकारों के नाम लिखिए।

उत्तर- क्रिया विशेषण के प्रकार निम्नलिखित हैं-

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण के भेद-

(1) कालवाचक (2) रीतिवाचक
(3) स्थानवाचक (4) परिमाणवाचक

प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषण के भेद-

(1) साधारण (2) संयोजक
(3) अनुबन्ध।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

■ **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 75-75 शब्दों में लिखिए-** **(3 अंकीय)**

प्रश्न 1. बैर क्रोध का आचार/मुरब्बा है।

उत्तर- इस जगत में प्रत्येक प्राणी का अपना-अपना कोई न कोई स्वभाव होता है और वह अपने इस स्वभाव के मुताबिक ही अपने जीवन की शैली को आगे बढ़ाता है, हर किसी के जीने की प्रवृत्ति अलग-अलग होती है। मानव एक सामाजिक प्राणी है, उसे समाज में रहकर अपने इस स्वभाव के जरिये लोगों में सुख-दुःख बाँटने की प्रवृत्ति होती है।

हर किसी का अपना अलग-अलग स्वभाव होता है,कोई बहुत ही सरल, तो कोई क्रूर होता है। किसी को ज्यादा क्रोध आता है,किसी को कम, यह तो मानव की प्रकृति होती है पर कई बार हम इस क्रोध को काबू में नहीं कर पाते जो आगे चलकर बड़ा ही नुकसान पहुँचाता है। जिस व्यक्ति ने क्रोध की भावना को अपने मन से निकाला है, उसी ने जीवन को संभाला है। आपने संत पुरुषों को देखा ही होगा उन्हें कभी क्रोध नहीं आता है,वे हमेशा शांत भाव से रहते हैं। क्रोध की भावना और क्रोध करना ये हमेशा मानव को नीचे गिराते हैं। इससे मानव आपसी संबंधों में दरार उत्पन्न करता है। कई बार यह होता है कि हम क्रोध में इतने डूब जाते हैं कि अपना होश भी खो देते हैं,और किसी भी व्यक्ति को आवेश में आकर जाने क्या-क्या कह देते हैं।

प्रश्न 2. पहला सुख निरोगी काया।

उत्तर- हमारे ऋषि-मुनि कह गए हैं, 'पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख जेब में हो माया।' यदि काया अर्थात् शरीर रोगी है तो आप धन कैसे कमाएंगे। यदि पहले से ही अपार धन है तो वह किसी काम का नहीं। धन से कोई रोग मिटता है। शरीर स्वस्थ और सेहतमंद है तभी तो आप जीवन का आनंद ले सकेंगे। घुमना-फिरना, हँसी-मजाक, पूजा-प्रार्थना,मनोरंजन आदि सभी कार्य अच्छी सेहत वाला व्यक्ति ही कर सकता है। अत: इसे समझना जरूरी है।

निरोगी काया- यदि आप स्वस्थ है, तो ही आपका जीवन है। अस्वस्थ काया में जीवन नहीं होता। व्यक्ति 4 कारणों से अस्वस्थ होता है- पहला मौसम-वातावरण से, दूसरा खाने-पीने से, तीसरा चिंता-क्रोध से और चौथा अनिद्रा से। मौसम और वातावरण आपके वश में नहीं, लेकिन घर और वस्त्र हो ऐसे कि वे आपको बचा लें। घर को आप वस्तु अनुसार बनाएं। हवा और सूर्य का प्रकाश भीतर किस दिशा से आना चाहिए, यह तय होना चाहिए ताकि वह आपकी बॉडी पर सकारात्मक प्रभाव डाले।

खाना-पीना आपके हाथ में है। अत: उत्तम भोजन और उत्तम जल जरूरी है। हर तरह के नशे से दूर रहने की बात भी आप जानते ही होंगे। आहार के साथ उपवास भी जरूरी है। उपवास के लिए विशेष दिन और माह नियुक्त है। चिंता और क्रोध करने की भी आदत हो जाती है, शराब पीने की तरह। मनोवैज्ञानिक कहते हैं, कि नशा करके व्यक्ति चिंता में तो हो ही जाता है ओर वह चिड़चिड़ा भी हो जाता है। ये दोनों ही आदतें आपके शरीर को जल्द से जल्द बढ़ा बना देंगी और साथ ही आप अपने परिवार को भी खो देंगे।

प्रश्न 3. परहित सरिस धर्म नहीं भाई।

उत्तर- परहित से व्यक्ति में सक्रिय शारीरिक शक्ति बनी रहती है, शरीर बलवान होकर अपराजेयता को प्राप्त होता है, सहनशील होने से वह अशांत नहीं होता, धैर्य उसे विचलित नहीं होने देता, बल उसमें कुछ कर सकने का सामर्थ्य उत्पन्न करता है, अपना वचन पूरा करने से उसमें आत्मविश्वास जागृत होता है,परिणामस्वरूप परहित से श्री की समृद्धि होती है, सुखपूर्वक लौकिक जीवन में उन्नति करता हुआ व्यक्ति अंत में इंद्रियों को वश में रखते हुएप्राण त्याग कर जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होता है। आप दिव्यमान सूर्य का उदाहरण ले सकते हैं,जो परहित मेंहमेशा अपने प्रकाश से जग को आलोकित करता रहता है, चन्द्रमा परहित निरत होकर जगत को शीतलता प्रदान कर अपना धर्म निभाता है, नदियाँ परहित में बहती है। गायें परहित के लिये अमृतमय दूध देती है। पेड़ अपने सिर पर तीव्र धूप को सहन करता है और अपनी छाया से अपने आश्रितों के संताप दूर करता है। वायु निरंतर बहकर जीवन देती है। समुद्र अपने रत्न परहित लुटाता है। प्रकृति का कण-कण परहित समर्पित है, वह स्वार्थ से ऊपर है।

प्रश्न 4. जहाँ ना पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।

उत्तर- रवि और कवि, कहते हैं कि सूर्य की किरणें जहाँ नहीं पहुँच पाती वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है, वह अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करके ऐसे स्थानों पर पहुँच जाता है जहाँ मनुष्य का पहुँचना असंभव है। कल्पना व्यक्ति की सोचने की शक्ति का विकास करती है इसलिए व्यक्ति को सदैव कल्पनाशील रहना चाहिए।

हम अपने शरीर के द्वारा जहाँ नहीं पहुँच पाते हैं वहाँ पल भर में ही कल्पना के पंख लगा कर पहुँच जाते हैं, परंतु कल्पना वही कर सकता है जिसमें जिजीविषा हो, जो दृढ़निश्चयी है और जो सदैव क्रियाशील रहता है। हमारी रचनात्मकता हमें कल्पना करने के लिए प्रेरित करती है। एक कवि की कलम में इतनी शक्ति होती है कि वह समाज में परिवर्तन एवम् क्रांति दोनों ला सकता है।

प्राचीन समय में महाकवि कालिदास ने मेघों को दूत बनाकर अपनी प्रिय के पास भेजा था, यह कवि की कल्पना शक्ति का ही परिचायक है, आधुनिक कवियों में कवि निराला का प्रिय विषय बादल ही रहा है, कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने तो मेघों को अतिथि मानकर 'मेघ आए' कविता की रचना कर डाली।

प्रश्न 5. साहित्य समाज का दर्पण है।

उत्तर- साहित्य और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं, दोनों में गहरा संबंध है। किसी भी साहित्य का निर्माण साहित्यकार द्वारा समाज में रहकर ही किया जा सकता है। अत: वह समाज की उपेक्षा नहीं कर सकते। जिस साहित्य में समाज की उपेक्षा की जाती है, यह साहित्य समाज में आदर नहीं पाता। एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व अविचारणीय है। साहित्य का क्षेत्र अत्यंत विशाल है। यह मनुष्य के विचारों का परिमार्जन करने के साथ-साथ उदान्तीकरण भी प्रस्तुत करता है। प्रगतिशीलता का दूसरा नाम जीवन है। वह प्रगति उच्च आदर्शों, महती कल्पनाओं, और दृढ़ भावनाओं के द्वारा ही संभव हो सकती है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें साहित्य द्वारा उच्चादर्शों और दृढ़ भावनाओं की उपलब्धि संभव हुई है। समाज की उथल-पुथल का साहित्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। कबीर ने समाज में फैली सामाजिक कुरीतियों, खोखली मान्यताओं एवं बाह्य आडम्बरों के विरोध में अपनी आवाज उठाई है। इसी प्रकार मुंशी प्रेमचंद ने अपनी कहानियों एवं उपन्यास में किसी-न-किसी समस्या के प्रति संवेदना जताई है। इस प्रकार साहित्य समाज के दुष्परिणामों को बड़े ही मर्मस्पर्शी रूप में हमारे समक्ष लाता है।

विभिन्न देशों में जितनी भी क्रांतियाँ हुई, वे सब सफल साहित्यकारों की ही देन है। प्लेटो और अरस्तु के नवीन सिद्धांतों ने राज्य और अधिकारों के स्वरूप को ही बदल दिया। जयपुर के राजा जयसिंह जिन्हें मंत्रियों, सभासदों की संगति न बदल सकी उसे महाकवि बिहारी के एक दोहे ने बदल दिया। समाज साहित्य को और साहित्य समाज को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। जिस समाज की जैसी परिस्थितियाँ होंगी वैसा ही उसका साहित्य होगा। इसलिए साहित्य समाज की प्रतिध्वनि, प्रतिच्छाया और प्रतिबिम्ब है। अत: साहित्यकार को समाज का सजग प्रहरी करना अनुचित न होगा। अत: साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य मानव-जीवन का व्यापक प्रतिबिम्ब है और उसका मार्गदर्शक भी।

"अंधकार है वहाँ, जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश, जहाँ साहित्य नहीं है।।"

प्रश्न 6. मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

उत्तर- मन की संकल्प शक्ति अद्भुत होती है। मनुष्य का मन ही अच्छे और बुरे का निर्णय होता है। मन के निर्णय के अनुसार ही

मानव-शरीर कार्य करता है। मनोबल के बिना मनुष्य निर्जीव ढाँचा बन कर रह जाता है। मुसीबतों को देखकर जीवन-यात्रा से क्लांत नहीं होना चाहिए। हमें मन में कभी-भी निराशा की भावना नहीं लानी चाहिए। अपने दृढ़ संकल्प और हिम्मत के बल बूते पर हम अपने सभी कार्य सिद्ध कर सकते हैं। इसलिए किसी ने कहा है-

"हारिए न हिम्मत, बिसारिए न हरिनाम।"

ऐसे अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं जो मन की शक्ति के परिचायक है। सरदार पटेल की दृढ़ इच्छा शक्ति के फलस्वरूप अखण्ड भारत का निर्माण, गाँधी जी के साथ और अहिंसा के प्रति अटूट विश्वास से भारत की स्वतंत्रता एवं वीर शिवा जी द्वारा भारत में मुगलों पर विजय आदि बहुत से उदाहरण हैं। अत: व्यक्ति मन से ही प्रेरित होकर अधिकतर कार्य करता है। अत: मन के हार जाने से बड़े-बड़े संकल्प धराशायी हो जाते हैं, और जब तक मन की संकल्प शक्ति नहीं टूटती तब तक व्यक्ति कठिन-से-कठिन कार्य को करने में न तो निराश होती है और न ही असफल। परिणामत: सफलता या असफलता उस कर्म के प्रति व्यक्ति की आसक्ति की मात्रा पर निर्भर होती है।

"मन एव मनुष्याणां कारण बांध मोक्ष्यो:।"

अर्थात् मन ही व्यक्ति के बंधन व मोक्ष का कारण है। मन सांसारिक बंधनों का और उनसे छुटकारा पाने का सबसे प्रबल माध्यम है। वस्तुत: मन मानव के व्यक्तित्व का वह ज्ञानात्मक रूप है जिससे उसके सभी कार्य संचालित होते हैं। मन में मनन करने की शक्ति होती है। यह संकल्प-विकल्प का पूँजी भूत रूप है। मननशीलता के कारण ही मनुष्य को चिंतनशील प्राणी की संज्ञा दी गई है। अत: मन के हारने से मनुष्य की हार और मन के जीतने से ही मनुष्य की जीत निश्चित है।

प्रश्न 7. सहज पके सो मीठा होय।

उत्तर- जो काम धीरे-धीरे होता है वह संतोषप्रद और पक्का होता है।

सहज पके सो मीठा होय हिन्दी की एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है, जिसका प्रयोग अक्सर हिन्दी के लेख, निबन्ध आदि में किया जाता है।

"सहज पके सो मीठा होय"

लोकोक्ति का वाक्य प्रयोग- तुम हर काम में जल्दीबाजी क्यों करती हो? जल्दी का काम तो शैतान का होता है और काम बिगड़ जाता है। यह बात ध्यान रखो 'सहज पके सो मीठा होय'।

लोकोक्ति का प्रयोग- गणेश के प्रत्येक काम में गड़बड़ होता है क्योंकि उसकी बेताबी और हड़बड़ी सभी काम में दिखाई देती है। वह इस बात से अनजान था कि सहज पके सो मीठा होय।

लोकोक्ति का वाक्य प्रयोग- शीला ने जल्दीबाजी में बच्चों की उत्तर पुस्तिकाओं की अत्यंत लापरवाही से जांच की, और इसके कारण उसे प्रिंसिपल महोदय से डांट भी खानी पड़ी। "सहज पके सो मीठा होय" वाली कहावत यदि वह जानती तो उसके साथ ऐसा ना होता।

प्रश्न 8. जल है तो कल है।

उत्तर- "आज अगर जल नहीं मिलेगा
प्रश्नों का हल नहीं मिलेगा
आज अगर जी भी लोगे तो
जीने को कल नहीं मिलेगा।"

कहा जाता है कि 'जल है तो कल है'। सचमुच जल का संकट सीधे-सीधे जीवन पर संकट है। हमारी सारी मानव सभ्यता जल-स्रोतों के किनारे से ही विकसित हुई है। घुमंतू युग में भी मानव वहीं-वहीं बसे जहाँ जल के भंडार थे। इसलिए सभी तीर्थ और महानगर नदियों के तट पर बने। किन्तु हमारा दुर्भाग्य है, कि वर्तमान में जल के स्रोत प्रदूषित हो गए है। जल-प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण हैं- जनसंख्या का बढ़ता दबाव और हमारी गैर-जिम्मेदारी। जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ हमारी आवश्यकताएँ बढ़ती चली गई। हमने आधुनिक संसाधनों के निर्माण के लिए खतरनाक रसायनों का खुलकर उपयोग किया। हमने अपने व्यावसायिक लाभ के लिए जान बूझकर प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई, पहाड़ों को समतल करना, खतरनाक एवं रासायनिक कचरा डाल कर नदियों को अपवित्र करना। परिणाम यह हुआ कि पवित्र पावनी यमुना दिल्ली तक आते-आते काली हो गई। हमारी सरकार और समाज ने नदियों को माँ एवं देवी का दर्जा तो दिया किन्तु उसके अस्तित्व एवं स्वच्छता पर कोई ध्यान नहीं दिया। उन्हें पवित्र रखने के कठोर उपाय नहीं किये गये। हमने लाखों तालाबों को कचरे से पाट दिया। पशु-पक्षी प्यासे मरने लगे। धरती का जल स्तर घट गया और हम जल संकट में फँसते चले गये। यदि हमें जल संकट से निस्तार पाना है तो हमें जागरूक

होना होगा, कठोर उपाय अपनाने होंगे प्रकृति के शोषण की बजाय उसकी गोद में बैठकर संरक्षण पाना होगा। वर्षा-जल को पुनः तालाबों, सरोवरों और जलागारों में संगृहित करना होगा।

प्रश्न 9. जो बीत गई सो बात गई।

उत्तर- कवि यह कहना चाहता है, कि जो समय बीत गई उसे भूलने में ही हमारी भलाई है। मिलना और बिछड़ना यह प्रकृति का नियम है। जीवन में कभी-कभी ऐसा होता है, कि जो हमारे काफी प्रिय है, उनसे भी हमें बिछड़ना पड़ता है। इसे हमें सहज रूप में स्वीकार करना चाहिए। कवि इस तथ्य की पुष्टि करने के लिए उदाहरण स्वरूप आकाश में टूटते तारों से तुलना करता है। और कहता है कि आकाश में रोज कितने तारे टूटते हैं। जो अूट जाते हैं वे फिर कभी नहीं मिलते। पर अंबर (आकाश) टूटे हुए तारों पर कभी शोक नहीं मनाता है। इसलिए बीते हुए दुःख पूर्ण समय को याद करना व्यर्थ है।

प्रश्न 10. विद्या ददाति विनयम।

उत्तर- शिक्षा के इस युग में जब हम उस मानव की कल्पना करते हैं जो अशिक्षित होता था, तो कितना हास्यास्पद तथा आश्चर्यजनक लगता है। मनुष्य को उस दशा में कितनी मुसीबतों का सामना करना पड़ा होगा, यह सोचना भी चिंतनीय है। यही कुछ कारण रहे होंगे जिनके कारण मनुष्य ने पढ़ना लिखना सीखकर प्रगति की दिशा में अपना कदम आगे बढ़ाया। शिक्षा का कितना महत्व है- यह आज बताने की आवश्यकता नहीं है। मानव को मनुष्य बनाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के अभाव में उसमें और पशु में विशेष अंतर नहीं रह जाता है। ऐसे ही मनुष्य के लिए कहा गया होगा-

"ते मृत्युलोके भुविभारभूता मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।" शिक्षा ही पशु और मनुष्य में फर्क पैदा करती है। मनुष्य का स्वभाव है कि वह उम्र बढ़ने के साथ-साथ सीखना शुरू कर देता है। अनेक बातें वह माता-पिता और साथियों से सीख जाता है। वह चार-पाँच साल तक बहुत सी बातें तथा कई शब्दों तथा वाक्यों का प्रयोग करना सीख जाता है। सामान्यतया यही वह समय होता है जब उसे स्कूल भेजा जाता है।

शिक्षा-प्रणाली अर्थात् एक निश्चित तरीके से शिक्षा देने की पद्धति कब अस्तित्व में आई यह कहना मुश्किल है। वेदों-पुराणों में इसका उल्लेख मिलता है कि वनों में गुरुकुल होते थे, जहाँ पर बच्चों को अल्पायु में ही भेज दिया जाता था। गुरु के सानिध्य में रहकर बालक पच्चीस वर्ष की उम्र तक विद्यार्जन करता था। वहाँ रहकर वह उन सभी विद्याओं की शिक्षा प्राप्ति करता था जो उसे एक अच्छा तथा ज्ञानवान मनुष्य बनाती थी। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इस परिवर्तन से शिक्षा कैसे अछूती रह सकती थी। शिक्षा-प्रणाली में भी परिवर्तन हुए। बदलते वक्त के साथ शिक्षा-प्रणाली अपने वर्तमान स्वरूप में हमारे समक्ष है, इसमें भी अनेक गुण ओर दोष देखे जा रहे हैं। आज हमारे समाज में सरकारी; अर्द्ध सरकारी, प्राइवेट आदि अनगिनत शैक्षिक संस्थाएँ हैं, जिनमें बच्चें को प्राथमिक शिक्षा दी जाती है। इनमें बच्चे को तीन साल से पाँच साल की उम्र में प्रवेश दिया जाता है जिनमें पाठ्यक्रम के अलावा खेल-खेल के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। इमर्में साधारणतया दस वर्ष की उम्र तक के बच्चे को शिक्षा तथा सामान्य विषयों की प्रारंभिक जानकारी दी जाती है। इनमें पढ़ाने वाले अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षित होते हैं। खेद का विषय है कि इस प्राथमिक शिक्षा को प्राप्त करते समय ही बहुत-से विद्यार्थी विद्यालय छोड़ देते हैं और माता-पिता की आमदनी में सहयोग देने हेतु काम में लग जाते हैं। इस प्रकृति को रोकने के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए हैं। फलस्वरूप प्राथमिक स्तर में विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों में कमी आई है।

(ब) निम्नलिखित अनुच्छेद का सार लिखिए-

(1) क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है। एक का क्रोध दूसरे में भी क्रोध का ही संचार करता है। जिसके प्रति क्रोध प्रदर्शन होता है वहाँ तत्काल अपमान का अनुभव करता है ओर इस दुख भर उसकी तैयारी भी बढ़ जाती है। यह विचार करने वाले बहुत थोड़े निकलते हैं कि हम पर जो क्रोध प्रकट किया जा रहा है वहाँ उचित है या अनुचित इसी से धर्म नीति और शिष्टाचार तीनों में क्रोध के विरोध का उपदेश पाया जाता है संत लोग तो खलों के दुर्वाचन सहते ही हैं।

दुनियादार लोग भी ना जाने कितनी ऊँची नीची बताते हैं। सभ्यता के व्यवहार में भी क्रोध नहीं तो क्रोध के चिन्ह दबाए जाते हैं। इस प्रकार का प्रतिबंध समाज की सुख शांति के लिए परम आवश्यक है। पर प्रतिबंध की भी सीमा है यहाँ परपिडकोमुख क्रोध तक नहीं पहुँचता। पंचतंत्र और हितोपदेश में ऐसी बहुत सारी कहानियाँ है जिसमें

कहानीकार ने यह दर्शाया है की क्रोध नाश का कारण है। क्रोधी व्यक्ति अंधा होता है। वह अपना नफा नुकसान नहीं देखता।

उत्तर- प्रस्तुत अनुच्छेद में क्रोध अर्थात् गुस्से को शांति भंग करने वाला रोग बताया गया है। यदि किसी एक व्यक्ति में क्रोध उत्पन्न हुआ है तो सामने वाले व्यक्ति को भी स्वत: ही क्रोध आ जाएगा। जिसके लिए हमें गुस्स आता है, तो सामने वाले व्यक्ति को इसमें अपना अपमान होना लगता है और बहुत कम लोग ऐसे होते हैं जिन्हें क्रोध में अपना उचित या अनुचित, धर्म, शिष्टाचार का उपदेश लगता है। संत लोग खतों का दुर्वाचन सहते हैं।

और दुनियादारी वाले लोग भी गलत बाते हैं। पंचतंत्र और हितोदेश में क्रोध की बहुत सी कहानियाँ प्रचलित हैं, जिसमें क्रोध करने वाले का विनाश ही होता है।

(2) साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी है इसकी सबसे बड़ी पहचान यहाँ है कि वहाँ बिल्कुल निडर और बेखौफ होती है साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं। जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है। और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी से मिलता है। अड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना यह साधारण जीवों का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना ना तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं। और ना ही अपनी चाल को पड़ोसी की चाल देखकर मध्यम बनाते हैं। कहा भी गया है कि शेर शुर शायर और सपूत किसी के द्वारा बनाई गई लिख पर नहीं चलते भी अपना पक्ष खुद ढूंढ निकालते हैं। पुरुष अपना पंथ स्वयं गड़ता है यह बात हिम्मत वालों के लिए ही तो कही गई है। अरे आप में हिम्मत ही नहीं है तो जिंदगी किस काम की? पराजित जिंदगी भी कोई जिंदगी होती है? इसलिए मत करो अपना मार्ग खुद बनाओ और जिंदगी को जिओ।

उत्तर- मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत साहस होती है। इसकी सबसे बरी पहचान यह है कि वह मनुष्य निडर और बैखोफ होता है, जो साहसी होता है। वह दुनिया की परवाह नहीं करता कि लोग उसके बारे में क्या कहेंगे। साहसी मनुष्य जो करने की ठान लेता है, वह करता है। और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी से मिलता है। जो मनुष्य साहसी होते हैं, वो अपने आस-पड़ोसियों की चिन्ता नहीं करते और नई क्रान्ति लाने के उद्देश्य से अपने लक्ष्य पर अड़े रहते हैं। ऐसा कहा गया है कि शेर, शुर और शायर किसी के द्वारा बनाई गई लिख पर नहीं चलते वे अपना रास्ता खुद बनाते हैं। जो अपनी जिंदगी में हार जाते हैं, उनकी कोई जिंदगी होती है क्या ? इसलिए साहस दिखाओं और अपना रास्ता स्वयं बनाओं और जिंदगी जी कर दिखाओं।

(3) भारत में अतिथि सत्कार की एक अद्‌भूत और परंपरा रही है। इतिहास साक्षी रहा है कि अतिथि प्राण से भी प्यारे होते हैं। साधु न भूखा जाए यहाँ का ग्रहण संस्कार मंत्र रहा है। गृह स्वामिनी द्वार पर आए अतिथि को अपना पेट काटकर भी खिलाती है उनके हृदय की विशालता और उदारता भारत की धरोहर है। अतिथियों को यहाँ देवता माना गया है। अतिथि देवो भव यहाँ का जीवन मंत्र है। अतिथियों की जूठन के कारण गृह स्वामिनी के लिए गंगा के पवित्र जलकन है और उनके चरणों की धूलि मस्तिष्क पर धारण करने के पवित्र रजकन है। भारत का गांव-गांव झोपड़ी और झोपड़ी में निवास करने वाले जन-जन इस आदमी भावों से भरे पूरे हैं। वह इस परंपरा की अवहेलना नहीं करते भूखे रहकर भी अपने अतिथि को संतुष्ट करते हैं। भारतीय चरित्र की विशालता और उदारता विश्व में अकेली परंपरा है।

उत्तर- हमारे भारत देश में अतिथि सत्कार की एक अद्‌भूत और गौरवमई परम्परा है। इतिहास में भी लिखा गया है कि "अतिथि देवो भव"। ऐसा भी कहा गया है कि हमारे द्वार पर जो भी आता है चाहे वह साधु ही क्यों न हो भूखा ना जाए। भारत के गाँव, झोपड़ी और झोपड़ी में रहने वाले सभी व्यक्ति द्वार पर आए किसी भी व्यक्ति को भूखा नहीं जाने देते, स्वयं भूखे रहे परन्तु अतिथि को भूखा नहीं जाने देते। ऐसी परम्परा केवल भारत के चरित्र की विशेषता है।

(4) राजनीतिक दांवपेच के इस युग में चुनाव को व्यवसाय बना दिया गया है। चुनाव के समय मतदाताओं को ठगने एवं उन्हें माया जाल में फंसाने के लिए रंग-बिरंगे वायदे किए जाते हैं। गरीबी हटाने, बेरोजगारी मिटाना सड़क बनवाने, स्कूल खुलवाना, नौकरी दिलवाने आदि कई प्रकार के वायदे चुनाव के समय किया जाता है।

उत्तर– भ्रष्टाचार ने आजकल राजनीति को चुनाव का व्यवसाय बना दिया है। जब चुनावी समय आता है तो मतदाताओं को लालच की माया जाल में फँसाया जाने लगता है। गरीबी खत्म, बेरोजगारी; सड़क बनवाने आदि कई प्रकार के वादे चुनाव के समय किया जाता है।

(5) गरीबी और बेरोजगारी को हटाने के लिए नए उद्योगों की स्थापना करनी होगी, नई परियोजनाओं का संचालन करना होगा, शिक्षा को रोजगार से जुड़ना होगा ना कि केवल चुनावी वायदे वकजाल फैलाकर मतदाताओं को फंसा कर ढकने से गरीबी और बेरोजगारी हटेगी। चुनावी वायदों की रंगीन परिकल्पना उसे मतदाता की आस्था चुनाव से धीरे–धीरे समाप्त होने लगी है।

उत्तर– चुनाव के समय गरीबी, बेरोजगारी को खत्म करने के लिए नए–नए उद्योगों की स्थापना, नई परियोजना का विस्तार आदि बड़े–बड़े वादों का झूठा जाल फैलाकर मतदाताओं को फँसाया जाता है। ओर बाद में यह वादे पूरे ना करने पर मतदाताओं का चुनाव पर से विश्वास खत्म होने लगा है।

विज्ञापन लेखन

(1) आप अंग्रेजी में m.a. है कोचिंग शुरु करना चाहते हैं इस हेतु विज्ञापन लिखिए।

उत्तर–

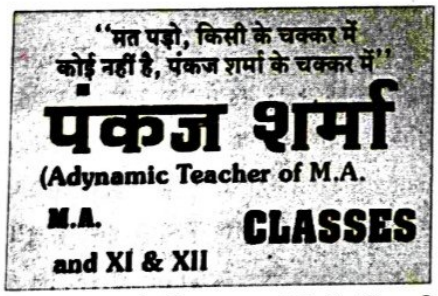

(2) अपने मकान को किराए पर देने के लिए विज्ञापन लिखिए।

उत्तर–

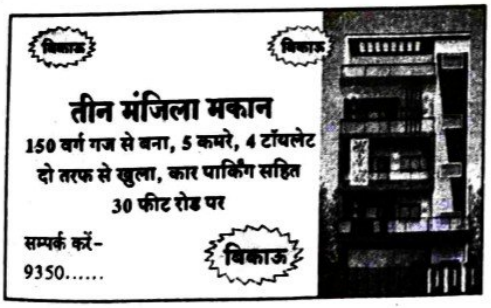

(3) आप एक किराना व्यापारी है दीपावली के अवसर पर ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए विज्ञापन लिखिए।

उत्तर–

(4) आप एक पैथोलॉजी लैब के संचालक हैं अपनी लैब के प्रचार प्रसार के लिए विज्ञापन लिखिए।

उत्तर–

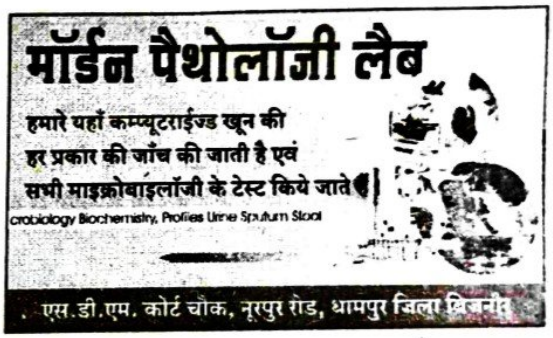

संवाद लेखन

(1) कक्षा में विद्यार्थी तथा शिक्षक के बीच संवाद लिखिए।

उत्तर– शिक्षक– सुनील, तुम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करके ग्यारहवी में आ गए हो, अब तुम्हें और मेहनत करनी होगी।

सुनील– जी मास्टर जी। मैं खूब मन लगाकर ग्यारहवीं की तैयारी करूँगा।

(2) किराना व्यापारी तथा ग्राहक के मध्य संवाद लिखिए।

उत्तर– ग्राहक– पानी की बोतल है भैया।

दुकानदार– जी है। कितने लीटर वाली चाहिए।

ग्राहक– एक लीटर वाली दो बोतलें दे दीजिये। कितने की हुई?

दुकानदार– पचास रुपये दे दीजिए।

(3) डॉक्टर तथा मरीज के मध्य संवाद लिखिए।

उत्तर– मरीज– डॉक्टर साहब मेरे सिर में 5–7 दिन से लगातार हल्का दर्द हो रहा है और नींद भी ढंग से नहीं आ रही है।

डॉक्टर– कितनी उम्र है तुम्हारी?

मरीज– चलो तुम्हारा रक्त चाप देखते हैं। तुम्हारा रक्तचाप थोड़ा बढ़ा हुआ है। सबसे पहले अपना वजन कम करो।

(4) दो शिक्षकों के मध्य संवाद लिखिए।

उत्तर– पहली शिक्षिका – हैलो मैम, गुड मॉर्निंग।

दूसरी शिक्षिका– गुड मॉर्निंग।

पहली शिक्षिका– सुना है, आजकल आप टाइम से थोड़ा लेट हो जाती हो स्कूल आने में।

दूसरी शिक्षिका– नहीं तो। ऐसा किसने बोला आपको?

पहली शिक्षिका– प्रधान अध्यापक बोल रहे थे कल आपके बारे में ऐसा।

(5) पढ़ाई के संबंध में पिता व पुत्र के मध्य संवाद लिखिए।

उत्तर– पिता– किशोर तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है।

किशोर– जी पिताजी अच्छी चल रही है।

पिता– तुम्हें पता है ना कि यह साल तुम्हारे लिए कितना अहम है।

किशोर– जी पिताजी।

पिता– हाँ,इस बात को ध्यान रखना। यदि किसी बड़े विश्वविद्यालय से स्नातक करना चाहते हो, तो बारहवीं में तुम्हें बहुत ही अच्छे अंग लाने होंगे।

किशोर –जी पिताजी, यही सोचकर मैंने अपनी पढ़ाई के लिए दिन–रात एक कर रखे हैं, जिससे मेरिट सूची में मेरा नाम आ जाय।

पिता – हाँ, मेरिट सूची के बाद भी एक परीक्षा होगी जिसमें उत्तीर्ण होने के बाद ही तुम्हें विश्वविद्यालय में प्रवेश मिलेगा।

किशोर – जी पिताजी। यही सोच कर मैं अपनी पढ़ाई कर रहा हूँ।

अनुच्छेद लेखन

(1) भाषा और साहित्य

उत्तर– भाषा वैज्ञानिक हमें शब्द देते हैं, लेकिन साहित्यकार उन शब्दों को चुनकर एक रचना को जन्म देते हैं। भाषा वैज्ञानिक वाक्य संरचना का ज्ञान कराते हैं, लेकिन साहित्यकार वाक्य का अर्थ सुरक्षित रखते हुए रचना में लालित्य पैदा करते हैं।

भाषा वैज्ञानिक लेखन में भाषा अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं, लेकिन साहित्यकार किसी भी भाषायी अनुशासन से परे शब्दों के जोड़–तोड़ के जादू से पाठक के दिलों में समा जाते हैं। भाषा और साहित्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भाषा है,तो साहित्य है और जब साहित्य होता है तब भाषा स्वत: ही विकासमान होती है। वर्तमान में हिन्दी भाषा दुनिया भर में अपनी पहचान बना चुकी है। इस विकास का एकमात्र आधार है समन्वय। हिन्दी भाषा ने न केवल भारत की अपितु विश्व की अनेक भाषाओं के शब्दों से अपने आपको परिपूर्ण किया और आज भी अनेक शब्दों को अपने अंदर समाहित कर रही है। यदि हम हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास पर दृष्टि डालें तो अनेक पहलू निकलकर आएँगे। हिन्दी भाषा का विकास क्रम– हिन्दी साहित्य की दृष्टि से सम्वत् 769 से 1318 के काल को आदिकाल की संज्ञा दी गयी है। इस काल में संस्कृत, अपभ्रंश (प्राकृत एवं पालि) एवं हिन्दी भाषा, साहित्य की भाषाएँ थीं। संस्कृत उच्च एवं राजवर्ग की, अपभ्रंश धर्म प्रसार की एवं हिन्दी लोक प्रवृत्ति की भाषा बन गयी थी। इस काल में संस्कृत में व्याकरण का अनुशासन चरम पर था इस कारण संस्कृत भाषा का विस्तार ठहर गया और धर्म प्रसार के लिए सरल भाषा का प्रयोग करने की आवश्यकता अनुभव की।

(2) सर्दी की धूप

उत्तर– शरद ऋतु भारत में चारों ऋतुओं में सबसे ठंडी ऋतु होती है। यह दिसम्बर के महीने में पड़ती हैं और मार्च में होली के दौरान खत्म होती है। दिसम्बर और जनवरी को शरद ऋतु के सबसे ठंडे महीने माने जाते हैं। यह पतझड़ के मौसम के बाद आती है और वसंत ऋतु (बाद में ग्रीष्म ऋतु) से पहले समाप्त हो जाती है। हम आमतौर पर इसे दीपावली के त्यौहार (शरद ऋतु की शुरुआत) से होली के त्यौहार (शरद ऋतु की समाप्ति) तक वातावरण के तापमान में निरंतर कमी के द्वारा महसूस करते हैं।

(3) जीवन में योग का महत्व

उत्तर– योग– अभ्यास का एक प्राचीन रूप जो भारतीय समाज में हजारों साल पहले विकसित हुआ था, और उसके बाद से लगातार इसका अभ्यास किया जा रहा है। इसमें किसी व्यक्ति को सेहतमंद रहने के लिए ओर विभिन्न प्रकार के रोगों और अक्षमताओं से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न प्रकार के व्यायाम शामिल हैं। यह ध्यान लगाने के लिए एक मजबूत विधि के रूप में भी माना जाता है, जो मन और शरीर को आराम देने में मदद करता है। दुनियाभर में योग का अभ्यास किया जा रहा है। विश्व

के लगभग 2 अरब लोग एक सर्वेक्षण के मुताबिक योग का अभ्यास करते हैं।

(4) महँगाई

उत्तर- "पॉकिट में पीड़ा भरी, कौन सुने फरियाद?
यह महँगाई देखकर, वे दिन आते याद।।
वे दिन आते याद, जेब में पैसा रखकर।
सौदा लाते थे बाजार से, थैला भरकर।
धक्का मारा युग ने, मुद्रा की क्रेडिट में।
थैले में रुपये हैं,सौदा पॉकिट में।।"

उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने उत्तरोत्तर बढ़ती महँगाई का बड़ा ही वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया है। जीवनोपयोगी और दैनिक उपभोग की वस्तुओं से लेकर ऐश्वर्य की वस्तुओं तक पर इस महँगाई की काली छाया लगभग समान रूप से पड़ी है। यदि कोई वस्तु महँगाई के कुटिल हाथों से बची है, तो वह केवल इंसान स्वयं है, जो इस युग का सबसे सस्ता सौदा है, जिसकी रगों में महँगी वस्तुओं से बना सस्ता लहू है और जिसके मस्तिष्क में महँगी शिक्षा से उत्पन्न सस्ती बुद्धि है। सच तो यह है कि आज का मनुष्य महँगाई के चक्रव्यूह में फँसकर केवल जीवन रक्षा हेतु प्रयत्नशील है।

महँगाई बढ़ने के कारण- भारत में महँगाई बढ़ने के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं-

1. जनसंख्या में तेजी से वृद्धि- भारत में जनसंख्या में तेजी से वृद्धि के कारण वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि हो रही है। जितनी तेज गति से जनसंख्या बढ़ रही है, उतनी तेज गति से वस्तुओं का उत्पादन नहीं हो रहा है।

2. कृषि उत्पादन-व्यय में वृद्धि- भारत कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। गत अनेक वर्षों से खेती में काम आने वाले उपकरणों, उर्वरकों आए मूल्यों में वृद्धि, सिंचाई दरों में वृद्धि बीज के दामों में वृद्धि, मजदूरी दर में वृद्धि आदि कुछ ऐसे कारक हैं, जिनका मूल्य वृद्धि पर सीधा प्रभाव पड़ता है। जब किसी भी कारण से कृषि मूल्य में वृद्धि होती है, तब उसके परिणामस्वरूप देश में अधिकांश वस्तुओं के मूल्य प्रभावित होते हैं और देश में महँगाई बढ़ जाती है।

3. मुद्रा का प्रसार- भारत में मुद्रा प्रसार के कारण भी महँगाई बढ़ी है। जैसे-जैसे देश में मुद्रा-प्रसार बढ़ता है, उसी अनुपात में महँगाई बढ़ जाती है। तृतीय पंचवर्षीय योजना के समय से ही हमारे देश में मुद्रा में निरन्तर वृद्धि हो रही है। परिणामस्वरूप वस्तुओं के मूल्य बढ़ते जा रहे हैं। आज से पचास वर्ष पूर्व जो वस्तु एक रुपये में मिलती थी, आज वही वस्तु सौ रुपये में मिलती है।

4. प्रशासन में शिथिलता- सामान्यत: प्रशासन के स्वरूप पर ही देश की अर्थव्यवस्था निर्भर करती है। यदि प्रशासन शिथिल पड़ जाता है, तो मूल्य बढ़ने में देर नहीं लगती है। कारण, कमजोर प्रशासन व्यापारी वर्ग पर नियंत्रण नहीं रख पाता है। ऐसी स्थिति में मूल्यों में अनियंत्रित और निरन्तर वृद्धि होती रहती है।

5. दोषपूर्ण आयात-नीति- कभी-कभी दोषपूर्ण आयात-नीति के कारण देश में वस्तुओं की कमी एवं कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है। यदि देश में वस्तुओं की पूर्ति माँग की तुलना में कम है, तो आयात की आवश्यकता होती है। यदि इन वस्तुओं का आयात न किया जाए, तो माँग और पूर्ति में असन्तुलन उत्पन्न होगा। पूर्ति जितनी कम होगी, वस्तुओं के दाम उतने ही अधिक बढ़ेंगे।

6. अव्यवस्थित वितरण प्रणाली- भारत में अधिकतर विक्रेता संगठित है। वे आपस में मिलकर वस्तुओं की खरीदी, संचय एवं बिक्री के विषय की नीति का निश्चय करते हैं। यदि सरकार ने मूल्यवृद्धि को नियंत्रित नहीं किया, तो संस्थाएँ मूल्योंको निरन्तर बढ़ाती जाती है। परिणामस्वरूप उपभोक्ताओं को मूल्यवृद्धि का सामना करना पड़ता है।

7. धन का असमान वितरण- हमारे देश में आर्थिक साधनों का असमान वितरण है। जिसके पास पर्याप्त धन है,वे लोग अधिक पैसा देकर वस्तुओं को खरीद लेते हैं। व्यापारी धनवानों की प्रवृत्ति का लाभ उठाते हैं और महँगाई बढ़ती जाती है।

8. घाटे का बजट- योजनाओं के क्रियान्वयन हेतु सरकार को बड़ी मात्रा में पूँजी की व्यवस्था करनी पड़ती है। पूँजी की व्यवस्था के लिए सरकार घाटे की बजट प्रणाली को अपनाती है। घाटे की यह पूर्ति नए नोट छापकर की जाती है। परिणामस्वरूप देश में मुद्रा की पूर्ति आवश्यकता से अधिक हो जाती है। जब ये नोट बाजार में पहुँचते है,तो वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि करते हैं।

9. कृत्रिम रूप से वस्तुओं की आपूर्ति में कमी- वस्तुओं का मूल्य माँग और पूर्ति पर आधारित होता है। बाजार में वस्तुओं की कमी होते ही उनके मूल्यों में वृद्धि हो जाती है। व्यापारी अधिक कमाने के उद्देश्य से वस्तुओं का कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि कर देते हैं।

10. किसानों की संग्रह वृत्ति का बढ़ना– आज के किसानों में संग्रह करने की कोशिश बढ़ी है। वे ऊँचे दाम मिलने पर वस्तुओं को बेचते हैं। इससे भी वस्तुओं के दाम बढ़ जाते हैं।

11. उद्योगों का प्राइवेट सेक्टर में होना– देश के अधिकांश प्राइवेट सेक्टर में है। वे निजी लाभ की दृष्टि से वस्तुओं के मूल्य बढ़ा देते हैं। लाभ के अनुपात में उत्पादनकर्ता मूल्य वृद्धि करने को विवश रहते हैं।

महंगाई से उत्पन्न समस्याएँ– महँगाई सामान्य लोगों के लिए अभिशाप सिद्ध होती है। भारत एक गरीब देश है। यहाँ भी अधिकांश जनसंख्या की आय के साधन सीमित हैं। परिणामस्वरूप साधारण नागरिक और कमजोर वर्ग के व्यक्ति अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से नहीं कर पाते हैं। बेरोजगारी इस समस्या को और अधिक जटिल बना देती है। बड़े उद्योगपति और व्यापारी अपनी वस्तुओं का कृत्रिम अभाव उत्पन्न कर देते हैं। वस्तुओं को गोदामों में छिपा देते हैं। दूकानदार काला बाजारी शुरू कर देते हैं। आम आदमी तंगहाली का जीवन जीने को विवश हो जाता है। किसी शायर ने ठीक ही कहा है।–

''जब आदमी के हाल पे आती है मुफलिसी।
किस–किस तरह से उसको सताती है मुफलिसी।।''

निश्चय ही देश में महँगाई बढ़ने से देश की अर्थव्यवस्था को धक्का लगता है। कल्याण एवम् विकास सम्बन्धी योजनाओं के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। परिणामस्वरूप देश प्रगति की दौड़ में पीछे रह जाता है। समाज और देश में खुशहाली और शांति का वातावरण नहीं बन पाता है।

महँगाई को दूर करने के उपाय– महँगाई को दूर करने के लिए सरकार को समयबद्ध कार्यक्रम बनाना होगा। किसानों को सस्ते मूल्य पर खाद, बीज, उपकरण और सिंचाई के साधन उपलब्ध कराने होंगे। मुद्रा प्रसार को रोकने के लिए घाटे की व्यवस्था समाप्त करनी होगी। घाटे को पूरा करने के लिए नोट छापने की प्रणाली को बन्द करना होगा। जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए निरन्तर प्रयास करने होंगे। शक्ति और साधन जन–जन तक पहुँचाने के समुचित उपाय करने होंगे। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को प्रभावशाली बनाना होगा। कर्मचारियों को पूरी निष्ठा, कर्मठता और कर्तव्यपरायणता के साथ अपना कार्य करना होगा। प्रशासन को भी चुस्त और दुरूस्त बनाना होगा। संग्रह तथा मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति को कठोरता से दबाना होगा। प्रत्येक क्षेत्र में सतर्क राजकर्मचारी नियुक्त करने होंगे,जो उत्पादक को मूल्य बढ़ाने से और उपभोक्ता को अधिक मूल्य देने से रोक सके। जनतामें अफवाहें फैलाने वालों पर कड़ी निगाह रखनी होगी। जनता तथा सरकार दोनों की सहभागिता से महँगाई या मूल्यवृद्धि को नियंत्रित किया जाना संभव हो सकेगा।

(5) जीवन में खेलों का महत्व

उत्तर– खेलों का महत्व– हमारे बुजुर्गों की मान्यता रही है– ''पढ़ोगे–लिखोगे, बनोगे नवाब। खेलोगे कूदोगे, होगे खराब।'' यह मान्यता आज असत्य सिद्ध हो चुकी है। आजकल मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि खेल मानव की जन्मजात नैसर्गिक प्रवृत्ति है। इसे प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता। वास्तव में खेलों से ही मनुष्य का सही, स्वस्थ और सन्तुलित विकास होता है। इसीलिए आजकल खेल–खेल में शिक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है और किंडर गार्डेन ओर मांटेसरी जैसी आधुनिक बाल शिक्षा पद्धति को विकसित किया गया है। वस्तुत: खेल मानव जीवन के लिए संजीवनी औषधि से कम नहीं है। जिस व्यक्ति के जीवन में खेलों का कोई स्थान नहीं है, उस व्यक्ति का जीवन शुष्क, नीरस और ऊब जाने वाला है। खेलों से हमारा न केवल मनोरंजन होता है, अपितु इनसे हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। बच्चे खेल–खेल में बहुत–सी अच्छी बातें सीख जाते हैं। खेल द्वारा सीखने में बच्चे उमंग एवं आनन्द का अनुभव करते हैं। खेल से व्यक्ति क्रियाशील और स्फूर्तिवान रहता है। वह आलस्य से दूर रहता है। शिक्षा शास्त्रियों की राय में हम ऐसे किसी विद्यालय की कल्पना ही नहीं कर सकते, जिसमें खेल के मैदान न हों।

खेलों से लाभ– स्वामी विवेकानन्द ने अपने देश के नवयुवकों को सम्बोधित करते हुए कहा था– ''शारीरिक दुर्बलता ही हमारे दु:खों के कम से कम एक तृतीयांश का कारण है। ..... सर्वप्रथम हमारे नवयुवकों को बलवान बनाना चाहिए।'' इस कथन का यही अभिप्राय है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास सम्भव है और शरीर को स्वस्थ तथा हृष्ट–पुष्ट बनाने के लिए खेल अनिवार्य है। पाश्चात्य विद्वान पी. साइमन का कथन है कि ''अच्छा स्वास्थ्य एवं अच्छी समग्र जीवन के दो सर्वोत्तम वरदान है।'' इन दोनों की प्राप्ति के लिए

जीवन में खेल अनिवार्य है। खेल खेलने से शरीर पुष्ट होता है, मांसपेशियाँ स्वस्थ रहती हैं, भूख बढ़ती है, आलस्य दूर भागता है तथा शारीरिक विकार नष्ट होते हैं। न खेलने की स्थिति में शरीर दुर्बल, रोगग्रस्त तथा निष्क्रिय हो जाता है। परिणाम यह होता है कि मनुष्य निस्तेज, उत्साहहीन तथा लक्ष्यहीन हो जाता है। शरीर तथा मन से दुर्बल एवं रोगी व्यक्ति के सच्चे सुख और आनंद से वंचित रह जाता है। वह परिवार और समाज के लिए बोझ होता है। इतना ही नहीं, खेलों से व्यक्ति जीवन में संघर्षशील बनता है। वह जीवन में कठिनाइयों से जूझने में सक्षम बनता है। हार और जीत उसके लिए सहज हो जाते हैं। मानसिक तनावों से कुछ समय के लिए उसे मुक्ति मिल जाती है। संक्षेप में खेल हमें अनुशासन संगठन, पारस्परिक सहयोग, आज्ञाकारिता, साहस, विश्वास और औचित्य की शिक्षा प्रदान करते हैं।

महात्मा गांधी ने शिक्षा के साथ खेल का महत्व बताते हुए कहा था "By education and sports, I mean all round development of our children." अर्थात् शिक्षा और खेलों के द्वारा बच्चों का बहुमुखी विकास होता है।

(6) मनुष्य अपने जीवन का निर्माता स्वयं है

उत्तर- मनुष्य अपने भाग्य का निर्माण स्वयं कर सकता है,आवश्यकता है उसे कर्म करने की। हम जिस राह में बढ़ रहे हैं, और उसराह में जाना हमने निश्चित कर लिया है। तो किसी की मजाल नहीं कि वह हमें रोक सके। दृढ़ इच्छाशक्ति, धैर्य और संकल्प के साथ आवश्यकता है आगे बढ़ने की।

हमें कलेक्टर बनना है, डॉक्टर बनना है, अच्छे पद प्राप्त करना है। लेकिन कलेक्टर बनने के लिए, डॉक्टर बनने के लिए, कर्म करना पड़ेगा कर्म है - पढ़ना पड़ेगा, ज्ञान का अर्जन करना पड़ेगा। केवल भाग्य के सहारे ही नहीं बैठना है। कर्म के द्वारा भाग्य बदला जा सकता है। आवश्यकता है सही दिशा में कर्म करने का हम जैसा कर्म करेंगे उसका फल भी हमें वैसा ही प्राप्त होगा।

(7) विद्यार्थी जीवन

उत्तर- विद्यार्थी जीवन यह हर इन्सान के जीवन का अहम् समय होता है, यहीं पर उसके भाग्य का निर्माण व दिशा तय होती है। इस समय को बड़ो के मार्गदर्शन एवं सही राह को चुनने वाले विद्यार्थी अपने जीवन में कुछ अच्छा ही करते हैं तथा अपने जीवन को आनन्द से परिपूर्ण बनाते हैं।

वही इस महत्वपूर्ण काल के महत्व को नजरअंदाज कर समय की बर्बादी करने वाले अपने भविष्य के सपनों को अपने हाथों रौंद डालते हैं, विद्यार्थी जीवन से ही चरित्र का निर्माण शुरू होता है, इस समय थोड़ी-थोड़ी जिम्मेदारियों का वहन करने से जीवन में कभी बोझ की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है।

इस समय के दौरान स्टूडेंट्स को अपने शरीर व्यायाम एवं स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान देना चाहिए, खेलकूद तथा अपनी रूचि के विषयों में पूर्ण लग्न एवं निष्ठा से परिश्रम करते रहना चाहिए। स्वाध्याय तथा मौन वाचन की आदत निर्माण का यह सर्वश्रेष्ठ समय होता है, साथ ही साथ उन्हें इस समय बुरी संगती तथा बुरी आदतों से बराबर दुरी बनाकर भी रहना चाहिए।

विद्यार्थी जीवन ही हमारी समस्त जिन्दगी की नींव होती है। इस नीव को जितनी ईमानदारी लग्न एवं मेहनत से निर्मित किया जाएगा, यह उतना ही हमें स्वर्णिम भविष्य की ओर ले जाने में मदद करेगी, इसी पड़ाव में अपना सारा ध्यान विद्या अर्जन तथा खेल कूद पर देना चाहिए, अच्छे लोगों को अपने साथी बनाए, लोगों की मदद करे यहीं से एक समझदारी की दुनिया में प्रवेश होता है।

(8) हमारी शिक्षा व्यवस्था

उत्तर- शिक्षा प्रणाली अर्थात् एक निश्चित तरीके से शिक्षा देने की पद्धति कब अस्तित्व में आई यह कहना मुश्किल है। वेदों-पुरोणों में इसका उल्लेख मिलता है। वनों में गुरूकुल होते थे, जहाँ पर बच्चों को अल्पायु में ही भेज दिया जाता था। गुरू के सानिध्य में रहकर बालक पच्चीस वर्ष तक की आयु में विद्यार्जन करता था। यहाँ रहकर वह सभी विद्याओं की शिक्षा प्राप्ति करता था। उसे एक अच्छा तथा ज्ञानवान् मनुष्य बनाती थी। बदलते वक्त के साथ शिक्षा व्यवस्था अपने वर्तमान स्वरूप में हमारे समक्ष है, इसमें भी अनेक गुण और दोष देखे जा रहे हैं। आज हमारे समाज में सरकारी, प्राइवेट आदि अनगिनत शैक्षिक संस्थाएँ हैं जिनसे बच्चे को प्राथमिक शिक्षा दी जाती है। इनमें बच्चे को तीन साल से पाँच साल की उम्र में प्रवेश दिया जाता है। जिनमें पाठ्यक्रम के अलावा खेल-खेल के माध्यम से और सोशल मीडिया द्वारा शिक्षा दी जाती है।

(9) सोशल मीडिया और युवा

उत्तर- सोशल मीडिया से हमारी युवा पीढ़ी शायद हासिल तो कुछ नहीं कर पा रही है अपितु इसके दुष्प्रभावों से ग्रस्त अवश्य हो रही है। यही कारण है कि आए दिन ऐसी अजीब घटनाएँ सुनने के लिए मिल रही है जिनके बारे में कोई आम व्यक्ति सोच भी नहीं सकता था। कहीं पर घरों की लड़कियाँ सोशल मीडिया पर अपलोड की गई विभिन्न प्रकार की फिल्मों से प्रभावित होकर रातोंरात अमीर बनकर अपने सपनों को सच करने के लिए घरों की दहलीज को लांघ रही हैं वहीं पर ऐसे मामले भी सामने आने लगे हैं कि युवा सोशल मीडिया के प्रभाव में आकर नशे जैसी लत से ग्रस्त होकर अपना जीवन तबाह कर रहे हैं। अभी हाल में पंजाब में एक ऐसा मामला सामने आया जिसने सभी को चौंका कर रख दिया है। इस मामले में दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने सोशल मीडिया के चक्कर में अपने ही दोस्त, जो कि नौंवी कक्षा का विद्यार्थी है, के अपहरण का प्रयास किया। यह एक ऐसा कृत्य है, जिसकी इन छात्रों से कभी अपेक्षा भी नहीं की जा सकती। स्कूलों का प्रबंधन देखने वालों को भी चाहिए कि वह विद्या के मंदिरों में मोबाइल जैसी वस्तुओं को पूरी तरह से प्रतिबंधित करे। स्कूल में बच्चे पढ़ने के लिए आए हैं तो उनका एकमात्र लक्ष्य पढ़ाई ही होना चाहिए। मां-बाप को भी चाहिए कि वह अपने बच्चों की हर गतिविधि पर पूरी तरह नजर रखें। बच्चों को अच्छे और बुरे का बोध करवाएं। उन्हें समझाएं कि सोशल मीडिया पर तो हर प्रकार की अच्छी व बुरी जानकारी उपलब्ध है परंतु हमें अच्छे और खुद को अपडेट रखने वाली जानकारियों को ही ग्रहण करना है। यह निगरानी रखना मां-बाप का फर्ज है कि सोशल मीडिया पर उनके बच्चे क्या देख रहे हैं। इसका अंदाजा मां-बाप उनके व्यवहार को देखकर भी लगा सकते हैं। अपराध की दुनिया में कदम रख चुके युवा भी सोशल मीडिया का सहारा ले रहे हैं। कुछ गैंगस्टर्स सोशल मीडिया पर अपने स्टेट्स अपडेट करते रहते हैं, और कुछ तो अपने दुश्मनों को धमकियाँ तक देते हैं। हैरानी की बात यह है कि पुलिस ऐसी गतिविधियों को रोक नहीं पा रही है। जरूरी है कि उसका साइबर क्राइम सेल और मजबूत हो। इसके साथ-साथ युवा पीढ़ी को भी यह समझना होगा कि कोई भी तकनीक जब तक सकारात्मक रूप से इस्तेमाल की जाती है तब तक वरदान होती है, अगर उसका इस्तेमाल नकारात्मक रूप से किया जाए तो वही अभिशाप बन जाती है। इसलिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल सोच-समझ कर, सकारात्मक ढंग से ही होना चाहिए।

(10) चाँदनी रात में नौका विहार

उत्तर- चाँदनी रात्रि में नौका-विहार- प्रकृति विभिन्न रूपों में अपना सौंदर्य प्रकट करती है। समय परिवर्तन के साथ इसका सौंदर्य भी अनेक रंगों में प्रकट होता है। प्रात:काल उगते हुए सूर्य की लालिमा एक और अद्भुत छटा बिखेरती है,तो रात्रिकाल में चंद्रमा के प्रकाश में प्रकृति का सौंदर्य अत्यंत मनोहारी प्रतीत होता है।

मनुष्य को यथासंभव प्रसन्न-चित्त रहना चाहिए। समय के साथ उसने अपनी खुशी के लिए अनेक साधन विकसित किए हैं, परंतु चाँदनी रात्रि में नौका-विहार का अपना अलग ही स्थान है। इस आनंद का अनुभव मुझे तब हुआ जब पिछले वर्ष मैं अपने मित्रों के साथ नौका-विहार के लिए गया था।

बात पिछले वर्ष अप्रैल माह की है, जब मैं अपने मित्रों के साथ बैठा हुआ कहीं घूमने जाने के लिए योजना बना रहा था। रात्रि का पहला प्रहर था। मेरा एक मित्र खिड़की के बाहर दृश्य को देखकर अचानक बोल पड़ा कि 'बाहर क्या सुहावना दृश्य है, क्या चाँदनी रात है?'' उसके इतना कहते ही अचानक मेरे मस्तिष्क में विचार आया कि क्यों न हम सभी नौका-विहार के लिए चलें। मेरा प्रस्ताव सभी को पसंद आया और हमने गाड़ी उठाई और गंगा तट पर जा पहुँचे। वहाँ हमारी तरह कुछ अन्य व्यक्ति भी नौका-विहार हेतु आए हुए थे।

वहाँ पहुँचने पर नदी के तट का दृश्य देखते ही बनता था। तट के समीप किले की दीवार से झाँकता विद्युत का प्रकाश व चाँदनी रात में हल्के नीले रंग में नहाए हुए लोगों से भरा नदी का किनारा अत्यंत मनोहारी प्रतीत हो रहा था। नदी में तैरती हुई नौकाएँ व लहलहाती हुई जल तरंगों का दृश्य किसी महान कलाकार की सजीव कृति-सा प्रतीत हो रहा था। हम सभी इस सुहावने दृश्य को देखकर मंत्रमुग्ध हो चुके थे। □

इकाई-7 अपठित बोध गद्यांश/ काव्यांश पर आधारित प्रश्न

■ निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

गद्यांश-1

सेवा त्याग तथा दान धर्म का भारतीय सांस्कृतिक चेतना में अत्यधिक महत्व है। भारतीय दर्शन ने जीव मात्र को ईश्वरीय रुप माना है, आत्मा तथा परमात्मा के विचार ने हमारे जीवन को सहज सुगम एवं परमार्थ कार्य बनाया है, सारा विश्व हमारा घर है और हम सभी की भलाई के लिए कामना करें यहीं हमारे जीवन का परम लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए जीवन में शुचिता और गंभीरता का समावेश कर इसे सुखी बनाने में सहायक हो सकते हैं। हमें चाहिए कि हम अपने अंत:करण को शुद्ध कर रूढ़ियों आदि से पृथक होकर सेवा मात्र को अपना मार्ग बनाएं। किसी दीन-दुखी को देखकर यदि हमारे हृदय में पीड़ा का अनुभव नहीं होता तो अवश्य ही हमने अपनी महान संस्कृति और दर्शन से कुछ भी नहीं सिखा है। हमें यह समझना चाहिए कि पीड़ित व्यक्ति भी हमारी तरह हाड़ मांस का जीवित प्राणी हैं, जिसके भीतर अनुभव करने वाली इंद्रियाँ हैं, भूख प्यास सबको लगती है यदि हमारे सामने कोई व्यक्ति भूखा प्यासा वस्त्रविहीन रहता है तो हमारे लिए यह गर्व की बात नहीं है कि हम लंबी-लंबी मोटर गाड़ियों से धूल उड़ाते चलें। आज भारतीय संस्कृति पर उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति की काली छाया का प्रभाव पड़ा है जिसके कारण हम बंधुत्व और सहानुभूति को भूलते जा रहे हैं।

प्रश्न-

(1) भारतीय संस्कृति में किस प्रवृत्ति का महत्व रहा है?

(अ) सेवा त्याग तथा दान धर्म

(ब) जातिवाद, भ्रष्टाचार तथा अपराधीकरण

(स) अस्पृश्यता (द) बेईमानी

उत्तर- (अ) सेवा त्याग तथा दान धर्म

(2) हमारे जीवन का परम लक्ष्य क्या होना चाहिए?

उत्तर- सारे विश्व को हमें अपना घर मानना चाहिए, सभी की भलाई की कामना करना चाहिए यही हमारे जीवन का परम लक्ष्य होना चाहिए।

(3) भारतीय संस्कृति पर किसका प्रभाव आधुनिक समय में बढ़ता जा रहा है?

उत्तर- भारतीय संस्कृति पर उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति की काली छाया का प्रभाव पड़ रहा है।

गद्यांश 2

वास्तव में हृदय वही है जो कोमल भावों और स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत हो। प्रत्येक देशवासी को अपने वतन से प्रेम होता है चाहे उसका देश सूखा गर्म या दलदलों से युक्त हो। देश प्रेम के लिए किसी आकर्षण की आवश्यकता नहीं होती बल्कि वह तो अपनी भूमि के प्रति मनुष्य मात्र के स्वाभाविक ममता है। मानव ही नहीं पशु पक्षियों तक को अपना देश प्यारा होता है। संध्या समय पक्षी अपने नीड की ओर उड़े चले जाते हैं। देश प्रेम का अंकुर सभी में विद्यमान है कुछ लोग समझते हैं कि मातृभूमि के नारे लगाने से ही देश प्रेम व्यक्त होता है दिनभर में त्याग बलिदान वीरता की कथा सुनाते नहीं थकते, लेकिन परीक्षा की घड़ी आने पर भाग खड़े होते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ त्याग कर जान जोखिम में डालकर देश की सेवा क्या करेंगे आज ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं, बल्कि मन में समर्पित लोगों की आवश्यकता है।

प्रश्न-

(1) देश प्रेम का अंकुर विद्यमान है?

(अ) सभी मानवों में (ब) सभी प्राणियों में

(स) सभी पक्षियों में (द) सभी पशुओं में

उत्तर- (अ) सभी मानवों में

(2) एक सच्चा देश प्रेमी-

(अ) वीर सपूतों की कहानियां सुनाता है।

(ब) मातृभूमि का जयघोष कराता है।

(स) परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरता है।

(द) अपनी भूमि देश के लिए दान कर देता है।

उत्तर- (स) परीक्षा की कसौटी पर खरा उतरता है।

(3) देश प्रेम का अभिप्राय है-

(अ) देश के प्रति कोमल भावों का उदय

(ब) अनथक प्रयत्न करके देश का निर्माण करना

(स) देश हित के लिए शत्रु से संघर्ष करना

(द) देश के प्रति व्यक्ति का स्वाभाविक ममत्व।

उत्तर- (अ) देश के प्रति कोमल भावों का उदय

गद्यांश–3

दुनिया में संघर्ष और सहयोग दोनों तत्व पाए जाते हैं लेकिन जहाँ मानवता आई वहाँ मनुष्य संघर्ष के तत्व को जैसे हो सके कम करने की कोशिश करता है और सहयोग एवं परस्पर उपकारिता को बढ़ाता जाता है इसी में मानव की सहायता चरितार्थ होती है और दुनिया प्रगति करती है तत्वग्य कहते हैं कि दुनिया में हिंसा और अहिंसा दोनों हैं इनमें हिंसा का तत्व जैसे हो सके उत्तरोत्तर कम करते जाना अहिंसा को बढ़ाते जाना यही है। उन्नत जीवन की साधना ऐसे उन्नत जीवन को अध्यात्म जीवन कहते हैं। क्योंकि उसमें आत्मा शक्ति का परिचय और आनंद बढ़ता जाता है। प्रेम सेवा स्वार्थ त्याग आदि सद्गुणों का विकास आत्म परिचय के बिना नहीं हो सकता जो लोग आत्मा को पहचानते हैं वही दूसरों से निस्वार्थ प्रेम कर सकते हैं।

प्रश्न– (1) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है–

(अ) आध्यात्मिक जीवन

(ब) संघर्ष और सहयोग

(स) मानवता

(द) आत्मशक्ति

उत्तर– (ब) संघर्ष और सहयोग।

(2) लेखक के अनुसार आत्म परिचय के बिना किन गुणों का विकास नहीं हो सकता?

(अ) स्वार्थ त्याग सेवा और भक्ति का

(ब) प्रेम भक्ति और स्वार्थ त्याग का

(स) श्राद्ध भक्ति और सेवा का

(द) प्रेम सेवा और स्वार्थ त्याग का

उत्तर– (द) प्रेम सेवा और स्वार्थ त्याग का।

(3) लेखक के अनुसार उन्नत जीवन की साधना है–

(अ) हिंसा के तत्व का कम होना व अहिंसा के तत्वों का बढ़ना

(ब) हिंसा के तत्वों का बढ़ना व अहिंसा का घटते जाना

(स) हिंसा और अहिंसा का समान रूप से घटते जाना

(द) हिंसा और अहिंसा का समान रूप से बढ़ते जाना।

उत्तर– (अ) हिंसा के तत्व का कम होना व अहिंसा के तत्वों का बढ़ना

काव्यांश

प्रश्न– निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

काव्यांश–1

जग जीवन में जो चिर महान,
सौंदर्य पूर्ण भी सत्य प्राण,
मैं उसका प्रेमी बनूँ नाथ।
जिससे मानव–हित हो समान।
जिससे जीवन में मिले शक्ति
छूटे भय–संशय, अंध–भक्ति
मैं वह प्रकाश बन सकूं नाथ।
मिल जावे जिसमें अखिल व्यक्ति।

प्रश्न– (1) कवि ने 'चिर महान' किसे कहा है?

उत्तर– शक्ति को।

(2) कवि ने कविता की पंक्तियों के अंत में विस्मयादिबोधक चिन्ह का प्रयोग क्यों किया है?

(अ) इसमें कविता का सौंदर्य बढ़ता है।

(ब) पूर्ण विराम की लीक से हटने के लिए

(स) कविता को तुकांत बनाने के लिए

(द) कवि अपनी इच्छा प्रकट कर रहा है।

उत्तर– (द) कवि अपनी इच्छा प्रकट कर रहे हैं।

(3) कविता का मूल भाव क्या है?

(अ) विश्व परिवार की भावना (ब) सत्य की प्राप्ति

(स) कल्याण (द) अमर दान की प्राप्ति

उत्तर– (अ) विश्व परिवार की भावना।

काव्यांश–2

संकटों से वीर घबराते नहीं,
आपदाएँ देख छुप जाते नहीं।
लग गए जिस काम में पूरा किया
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं।
हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता
कर्मवीरों को न इससे वास्ता

प्रश्न– (1) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

उत्तर– 'वीर कभी घबराते नहीं'।

(2) उपर्युक्त पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- वीर जिस काम को पूरा करने में लग गए उस काम को पूरा करके ही छोड़ते हैं और उस काम को करके वे पछताते नहीं है।

(3) संकटों से कौन नहीं घबराते हैं?

उत्तर-वीर

काव्यांश-2

आजीवन उसको गिने,
सकल अवनि सिरमौर
जन्मभूमि जलजात के
बने रहें जन भौर।
फलद कल्पतरू तुल्य है
सारे विटप बबूल
हरिपद रज सौ पूत है
जन्म धरा की धूल है।।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त पद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर- जन्मभूमि

(2) उपर्युक्त पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- हमेशा उसे याद रखना चाहिए जो अच्छा काम किया हो,क्योंकि एक अच्छा फल कल्पतरू के बराबर होता है, अर्थात् अच्छा काम, अच्छी मीठी यादे देता है,जबकि बुरा काम बबूल के पेड़ की तरह हमेशा चुभता रहता है।

(3) जन्म भूमि किस प्रकार फलदायिनी है?

उत्तर- जन्मभूमि जलेजात के समान फलदायिनी है।

काव्यांश-4

जो बात गई सो बीत गई,
जीवन में एक सितारा था,
माना वह बेहद प्यारा था
वह टूट गया सो टूट गया
अंबर के इस आनन को देखो,
इसके कितने तारे टूटे
इसके कितने प्यारे छूटे
पर इन टूटे तारों पर
अंबर कब शोक मनाता है।
जो बीत गई सो बीत गई।

प्रश्न- (1) उपर्युक्त पद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर- जो बात गई सो बीत गई।

(2) उपर्युक्त पद्यांश का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- जो समय बीत गया उसे भूलने में ही हमारी भलाई है, जीवन में कोई भी कितना प्यारा क्यों ना हो, मिलना और बिछड़ना प्रकृति का नियम है। जो टुट जाते हैं वे फिर कभी नहीं मिलते है। पर आकाश टूटे हुए तारों पर कभी शोक नहीं मनाता है। इसलिए बीते हुए दु:ख पूर्ण समय को याद करना व्यर्थ है।

(3) बीती बातों के लिए कवि क्या कहता है?

उत्तर- कवि कहते हैं कि जीवन में मिलना और बिगड़ना प्रकृति का नियम है, इसलिए बीते हुए दु:ख पूर्ण समय को याद करना व्यर्थ है। ❑

इकाई-8 औपचारिक/ अनौपचारिक संबंधित पत्र

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए।

औपचारिक पत्र

(1) अपने जिलाधीश को एक पत्र लिखिए जिसमें शासकीय उचित मूल्य की दुकान पर होने वाली अनियमितताओं और उससे उत्पन्न होने वाली आम जनता की समस्याओं का उल्लेख हों।

सेवा में,
जिलाधीश अधिकारी
नई दिल्ली-110098

विषय- जिलाधीश अधिकारी को राशन डीलर के खराब व्यवहार की शिकायत करने के लिए पत्र।

महोदय जी,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने क्षेत्र के राशन डीलर के दुर्व्यवहार की और खींचना चाहता हूँ। राशन डीलर सरकार द्वारा उपलब्ध करवाए गए राशन में से गरीब लोगों को केवल आधा राशन देता हैं, और जब हमने उन्हें ऐसा न करने

की चेतावनी दी, तो उन्होंने हमें राशन देने से साफ इंकार कर दिया और सबके सामने दुकान बंद कर दी। डीलर के इस व्यवहार पर आप तुरंत कार्यवाही कीजिये और गरीब लोगों के हित का राशन उन्हें दिलवाने में सहायता कीजिये।

आपकी अति कृपा होगी।

शिकायतकर्ता
सचिन बनोधा

(2) अपने क्षेत्र के थाना अधिकारी को एक पत्र लिखकर क्षेत्र में बढ़ती हुई आपराधिक घटनाओं के बारे में बताते हुए उनकी रोकथाम के लिए उचित कार्यवाही करने का निवेदन किया गया हो।

प्रति,
श्रीमान पुलिस अधीक्षक महोदय,
कार्यालय पुलिस अधीक्षक
टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.)

विषय– उत्तरोत्तर बढ़ते अपराधों पर नियंत्रण किए जाने के सम्बन्ध में।

महोदय,

बड़े खेद के साथ आपको लिखना पड़ रहा है कि आजकल मध्यप्रदेश की राजधानी कहलाने वाले भोपाल के टी.टी. नगर में अपराधों में काफी वृद्धि हुई है। गत सप्ताह यहाँ दिन में दोपहर में पिस्तौल दिखाकर एक व्यापारी का नोटों से भरा बेग लूटकर लुटेरे अपनी बाइक से नौ दो ग्यारह हो गए, जिन्हें पुलिस आज तक पकड़ नहीं सकी है। चौराहे पर खड़े टैक्सी वाले दादागिरी करके मनमाना किराया वसूलने में जरा भी नहीं हिचकते हैं। चोर-उचक्कों के अपने हौसले बुलन्द हैं वे सरेआम रास्ते चलते नागरिकों के गले की सोने की चेन, मोबाइल हाथ घड़ी, पर्स आदि छीनकर रफू चक्कर हो जाते हैं, जिन्हें पुलिस बालों की मिली भगत के कारण खोजना बड़ा मुश्किल होता है। इस क्षेत्र के गुण्डों का तो कहना ही क्या। वे चलते रास्ते लोगों से टकराकर पैसा एँठने का काम करते हैं और पैसा न देने पर उन्हें चाकू मारकर गायब हो जाते हैं। ऐसा लगता है कि अब भोपाल की पुरानी शान, शकून और अमन-चैन को ग्रहण लग गया है। श्रीमान जी से प्रार्थना है कि इस क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था को सशक्त बनाएँ सिपाहियों की गश्त अधिक बढ़ाएँ। अपराधियों को बख्शा न जाए। आप अपने सुरक्षा धर्म का पूर्ण निष्ठा से पालन कर अनुग्रहीत करेंगे।

प्रार्थी–
जोगेन्दर सिंह छाबड़ा
अध्यक्ष, टी.टी. नगर, सुरक्षा समिति
भोपाल (म.प्र.)

दिनांक–.....

(3) स्वास्थ्य संचालक भोपाल को एक पत्र लिखिए जिसमें जिला अस्पताल में होने वाली अनियमितताओं का उल्लेख हों तथा साथ ही अनियमितताओं को रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाने हेतु निवेदन किया गया हो।

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी,
बेगमपुर, उत्तरप्रदेश

विषय– अस्पताल में औषधियों व उपकरणों की कमी की ओर ध्यान दिलाने हेतु पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन यह है कि मैं, बेगमपुर का स्थाई निवासी हूं। यहाँ स्थित सरकारी अस्पताल में सुविधा नाम मात्र की है। यहाँ स्थानीय अस्पताल एक ही है। मरीज छोटी-छोटी आवश्यकताओं के लिए मोटी रकम खर्च करने पर बाध्य है। अस्पताल के कर्मचारी व डॉक्टर सुविधाओं की कमी के कारण मरीजों का इलाज ठीक प्रकार से नहीं कर पाते हैं। यहाँ तक कि छोटी-मोटी जांच के उपकरण भी इस अस्पताल में उपलब्ध नहीं है, जिसके कारण मरीज को अस्पताल के बाहर पैसा खर्च करके जाँच करवानी पड़ती है। अस्पताल प्रशासन को कई बार चिट्ठी लिखकर उपकरणों व औषधियों को उपलब्ध कराने के लिए पत्र लिखा, किंतु अस्पताल प्रशासन हमारे निवेदन पर ध्यान देने की बजाय कुछ कहने से बचते हैं।

पिछले महीने की बात है, अस्पताल के बाहर ही एक व्यक्ति का एक्सीडेंट हो गया जिसमें उसके पैर में गंभीर चोट आई और रक्त/ब्लड बहने लग गया। लोगों ने उसे टांग कर अस्पताल के अंदर पहुंचाया। किंतु अस्पताल में मरहम पट्टी की सुविधा भी नहीं थी, जिसके कारण उस व्यक्ति का समय रहते इलाज नहीं हो पाने के कारण काफी रक्त बह गया। इस प्रकार की लापरवाही छोटे-मोटे गरीब, मजदूर लोगों के लिए जानलेवा साबित हो सकती है।

अत: मैं और बेगमपुर के निवासी आपसे निवेदन करते हैं कि यथाशीघ्र अस्पताल में आवश्यक उपकरण और औषधियों की पूर्ति करें, जिससे स्थानीय लोगों को सहलिगत हो सके और अनावश्यक खर्चों से लोग बच सकें।

धन्यवाद

प्रार्थी
मदनसिंह
पता– गली नंबर
मानसिंह रोड, बेगमपुर (उत्तरप्रदेश)

प्रश्न. आपकी कक्षा 10 की अंकसूची खो गई है, अंकसूची की द्वितीय प्रति प्राप्ति के लिए सचिव, माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल को एक आवेदन पत्र लिखिए।

प्रति,
श्रीमान सचिव महोदय,
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश,
भोपाल

विषय– अंक सूची की द्वितीय प्रति प्रदान करने विषयक महोदय,

नम्र निवेदन है कि मैंने हाईस्कूल बोर्ड की परीक्षा ई. सन् 2011 में उत्तीर्ण की थी। परन्तु मेरी यह अंक–सूची कहीं खो गई है। अत: मुझे अन्य विद्यालय में प्रवेश लेने के लिए इसकी द्वितीय प्रति चाहिए। इसके सन्दर्भ में मुझसे सम्बन्धित आवश्यक जानकारियाँ निम्नानुसार हैं–

(1) नाम	–	प्रवीण कुमार जैन
(2) पिता का नाम	–	रंजनकुमार जैन
(3) परीक्षा	–	हाईस्कूल 2011
(4) परीक्षा केन्द्र	–	श्री वैष्णव क्लॉथ मार्केट उ.मा. विद्यालय, इन्दौर
(5) रोल नम्बर	–	345764
(6) पूरा पता	–	प्रवीण कुमार जैन द्वारा– श्री रंजनकुमार जैन 224, वैंकटेश नगर, इन्दौर (म.प्र.)
(7) संलग्न	–	100 रु. का बैंक ड्राफ्ट

आशा है श्रीमानजी मेरे इस प्रार्थना–पत्र पर त्वरित उचित कार्रवाई कर अनुगृहित करेंगे।

दिनांक .....
प्रार्थी
प्रवीण कुमार जैन

अनौपचारिक पत्र–

(1) क्षेत्र के प्रतिष्ठित समाचार पत्र में आपके मित्र की एक काव्य रचना प्रकाशित हुई है। काव्य रचना पर अपने विचार रखते हुए अपने मित्र को बधाई पत्र लिखिए।

विकास नगर शिमला,
हिमाचल प्रदेश,
दिनांक 2 मार्च, 2021

प्रिय विराट,

आशा करता हूँ तुम ठीक होंगे। सबसे पहले तो मैं तुम्हें पत्रिका में काव्य रचना प्रकाशित होने पर उसके लिए बधाई देना चाहता हूँ। यह सुनकर हम सब को बहुत प्रसन्नता हुई कि तुमने आज अपनी जगह पत्रिका में बना ली है। यह सब के लिए बहुत गर्व की बात है। मुझे इस बात की खुशी है कि तुम्हारी मेहनत सफल हुई। तुमने अपनी मेहनत और हिम्मत से अपने आप को साबित कर दिया। आशा है तुम इसी प्रकार आगे भी सफलता प्राप्त करोगे और अपना ख्याल रखना।

जल्दी मिलते हैं।

दिनांक– 2 मार्च, 2021

तुम्हारा दोस्त
राकेश वर्मा।

(2) आपका छोटा भाई बैंगलुरू में रहकर अध्ययन कर रहे हैं, उसे कोरोना संक्रमण से बचाव केलिए आवश्यक उपाय निर्देश दीजिए।

14/2 फ्री गंज
बैंगलुरू
दिनांक.....

चि. धीरज,

शुभाशीष।

तुम्हारा पत्र प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। आशा है कि तुम्हारा अध्ययन ठीक प्रकार से चल रहा होगा। लेकिन अध्ययन के साथ–साथ बैंगलुरू में तुम अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना। क्योंकि कोरोना अभी बहुत तेज गति से अपने पैर पसार

रहा है, तुम समय-समय पर सैनेटाइज करते रहना, और बाहर जाते समय मास्क पहनना मत भूलना। सभी से एक-फिट की दूरी बनाए रखना ।

आशा करता हूँ, तुम मेरी बातों का ध्यान रखोगे।

मम्मी और पापा की तरफ से स्नेह।

तुम्हारा भाई

हिमान्शु

(3) आपका मित्र एक शासकीय डॉक्टर है तथा वह निरंतर कोरोना मरीजों की देखभाल कर रहा है उसके योगदान पर उसे सद्भावना पत्र लिखिए।

एम.वाय.अस्पताल

इन्दौर (म.प्र.)

दिनांक-------

प्रिय मित्र

शिवेन्द्र

नमस्कार शिवेन्द्र आशा करता हूँ तुम ठीक होगे। यह जानकर मुझे और मेरे परिवार को बहुत हर्ष हुआ कि तुम निरन्तर कोरोना मरीजों की देखभाल कर रहे हों। अपनी जान और स्वास्थ्य की चिन्ता किये बगैर। तुम अपने परिवार से भी दूर हो। तुम्हारे इस योगदान से हम अत्यन्त प्रसन्न है।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जल्द से जल्द ये कोरोना खत्म हो और तुम भी अपने परिवार से जल्द मिल पाओ।

तुम्हारा मित्र

सुधीर

(4) आप एक योग प्रशिक्षक है अपने एक मित्र को एक पत्र लिखिए जिसमें योग से होने वाले विभिन्न शारीरिक तथा मानसिक लाभ का उल्लेख किया गया हो।

बी 41/2

ज्वालापुरी

नांगलोई

नई दिल्ली-110025

दिनांक 2 मार्च, 2021

प्रिय मित्र, राघव,

मैं यहाँ कुशल मंगल हूँ और आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ अच्छे होंगे। मुझें कल ही तुम्हारा पत्र मिला जिसमें तुमने लिखा था कि तुम्हारे शरीर में बहुत दर्द रहता है और जो दवाईयां खाने के बाद भी यह ठीक नहीं हो रहा है। मैं तुम्हें बताना चाहूंगा कि यदि तुम योग करोगे तो तुम्हारा शरीर दर्द कुछ समय में ठीक हो जाएगा और तुम पहले की तरह तंदुरुस्त हो जाओगे। हालांकि शुरुआती दिनों में तुम्हें योग से अवश्य दर्द होगा परंतु तुम जानते ही हो कि मेरे पिताजी योग के सहारे हैं। अपना अस्थमा जैसी बीमारी का इलाज किया है। योग का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है और योग बड़े से बड़ी बीमारियों को ठीक करने में सफल रहा है, तो मैं तुम्हें इतना ही कहना चाहूंगा कि तुम रोजाना योगा करो और अपने शरीर को तंदुरुस्त बनाओ।

दिनांक 12 मार्च, 2021 तुम्हारा मित्र

रघु

□

इकाई-9 अनुच्छेद लेखन एवं निबंध लेखन

प्रश्न 1. निम्नलिखित विषयों पर लगभग 120 शब्दों में निबंध अनुच्छेद लिखिए-

(1) आधुनिक जनसंचार माध्यम और हम

उत्तर- टेलीफोन, रेडियो, समाचार-पत्र, टेलीविजन इत्यादि संचार के ऐसे ही साधन है टेलीफोन ऐसा माध्यम है, जिसकी सहायता से एक बार में कुछ ही व्यक्तियों से संचार किया जा सकता है, क्रिन्तु संचार के कुछ साधन भी है, जिनकी सहायता से एक साथ कई व्यक्तियों से संचार किया जा सकता है।

जिन साधनों का प्रयोग कर एक बड़ी जनसंख्या तक विचारों, भावनाओं व सूचनाओं को सम्प्रेषित किया जाता है, उन्हें हम जनसंख्यार माध्यम कहते हैं। जनसंचार माध्यमों को कुल तीन वर्गों-मुद्रण माध्यम, इलेक्ट्रॉनिक माध्यम एवं नव-इलेक्ट्रॉनिक माध्यम में विभाजित किया जा सकता है। मुद्रण माध्यम के अन्तर्गत समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, पैम्फलेट, पोस्टर, जर्नल पुस्तकें इत्यादि हैं।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन एवं फिल्में आती है ओर इण्टरनेट जनसंचार का नव-इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है। इनमें से रेडियो, टेर्लाबि एवं इण्टरनेट वब तरंगों के माध्यम से कार्य करते हैं। वर्तमान समय में वेब तरंगों की सहायता से सूचना का आदान-प्रदान करने में मोबाइल भी काफी सुगम व सशक्त साधन बन गया है।

आर्थर सी क्लार्क ने कहा भी है- "वेब तरंगों हेतु सीमाएं महत्व नहीं रखती और अन्तरिक्ष की ऊंचाइयों से तो राष्ट्रीय सीमाएँ स्वत: मिल जाती है। आने वाले कल का संसार सीमा बन्धन से मुक्त होगा।

(2) वैश्विक आपदा कोरोना से निपटने में युवाओं की भागीदारी

कोरोना वायरस से बचने के उपाय- स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना वायरस से बचने के लिए निम्न दिशा-निर्देश जारी किए हैं-

(1) हाथों को बार-बार 20 सेकंड तक साबुन से धोना चाहिए।

(2) अल्कोहल आधारित हैंरब (सैनिटाइजर) का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

(3) खाँसते और छींकते समय नाक और मुँह को रूमाल या टिशू पेपर से ढँक कर रखें।

(4) जिन व्यक्तियों में कोल्ड और फ्लू के लक्षण हों, उनसे दूरी बनाकर रखें।

(5) अंडे और मांस के सेवन से बचें।

(6) जंगली जानवरों के संपर्क में आने से बचें।

(7) मास्क का प्रयोग करें।

कोरोना का संक्रमण फैलने से रोकने के उपाय-

(1) सार्वजनिक वाहन जैसे- बस, ट्रेन या टैक्सी से यात्रा करने से बचें।

(2) अनावश्यक घर से बाहर जाने से बचें।

(3) सार्वजनिक स्थान पर जाने से बचें तथा अन्य लोगों की भीड़ में सतर्क रहें।

(4) संक्रमित इलाके या व्यक्ति के संपर्क में रहें तो स्वयं का दूसरों से दूर रखें।

कोरोना वायरस को लेकर लोगों में एक अलग ही बेचैनी देखने को मिलती है किन्तु कोरोना का वायरस शरीर के बाहर बहुत ज्यादा समय तक जिंदा नहीं रह सकता। अत: सावधानी ही बचाव है। कोरोना वायरस के इलाज हेतु वैक्सिन विकसित करने पर काम चल रहा है। इस वर्ष के अंत तक इंसानों पर इसका परीक्षण कर लिया जायेगा। कुछ अस्पतालों में एंटीवायरस दवा का भी परीक्षण चल रहा है। इसके अतिरिक्त सरकार ने अफवाहों से बचने और स्वयं की सुरक्षा के लिए कुछ निर्देश जारी किये हैं, जिससे कि कोरोना वायरस से निपटा जा सके।

(3) ऑनलाइन शिक्षण पद्धति विद्यार्थी जीवन और उसमें अनुशासन का महत्व

तकनीकी रूप से कुछ व्यवधान के बावजूद बच्चों के शिक्षण को सतत् क्रियाशील रखने के लिए ऑनलाइन शिक्षण पद्धति कोरोना संकट के निराशा भरे माहोल में एक आशा की किरण है, एक राहत भरी खबर है।

समय कितना भी विपरीत क्योंन हो रहा हो, मनुष्य अपनी क्षमता से उसे सुगम बनाने में सतत प्रयत्नशील रहता है। वर्तमान में पूरी मानव जाति कोरोना महामारी से जूझ रही है। कई दिनों तक सब कुछ बंद रहने के बाद कार्यालय, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, बाजार आदि खुल चुके हैं, परंतु विद्यालय अभी भी बंद है। आर्थिक सक्रियता के दबाव के कारण लॉकडाउन को हटा तो दिया गया परंतु भारत के भविष्य को लेकर समझौता नहीं किया गया। स्कूल नहीं खोले गए।

इन दिनों स्कूल प्रबंधन ने अपने विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन शिक्षा पद्धति को अपनाया। भारतीय शिक्षा प्रणाली में यह एक नया प्रयोग था। कोरोना ने जब भारत में दस्तक दी तब तक स्कूलों में वार्षिक परीक्षाएँ खत्म हो गई थी और ये बच्चों समेत पूरे समाज के लिए राहत की बात थी। परंतु जब कोरोना का संकट गहराता गया और यह प्रतीत होने लगा कि यह अभी नहीं जाने वाला है, तब बच्चों की शिक्षा को सक्रिय करने की योजना बनने लगी। ऑनलाइन शिक्षण द्वारा बच्चों को पुन: स्कूल व शिक्षकों से जोड़ा गया। पिछले दो-तीन महीने से यह चल रहा है, और अब इसके परिणाम भी कुछ-कुछ दिखने शुरु हो गए हैं। इस विषय पर बात करने के लिए हमारे पास दो-तीन महीने का अनुभव है।

(4) युवा समर्थ देश समर्थ

भारत की युवा शक्ति "आँखों में वैभव के सपने, मन में तूफानों सी गति है।" ऐसे ही हृदय में उठते हुए ज्वार, परिवर्तन की ललक, अदम्य साहस, स्पष्ट संकल्प लेने की चाहत का नाम है युवावस्था दुनिया का कोई भी आन्दोलन, दुनिया की कोई भी विचारधारा युवाशक्ति के बिना सशक्त नहीं बन सकती, वास्तव में वह युवा शक्ति ही है जिसके दम पर किसी निर्माण या विध्वंश की नींव रखी जाती है, विश्व में भारत सबसे ज्यादा युवा आबादी वाला देश है, सन् 2020 तक भारत की औसत आयु 29 वर्ष होगी, जबकि चीन की 37, अमेरिका की 45 और

यूरोप और जापान की औसत आयु 48 वर्ष होगी, जनसंख्या के आँकड़ों के अनुसार भारत में 60 करोड़ 13 से 35 वर्ष की आयु के युवा हैं, इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि भारत में कामकाजी व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक है, विशाल भारत के समय समावेशी विकास के लिए कामकाजी व्यक्तियों की विशाल जनसंख्या की आवश्यकता होगी, अत: भारत को एक युवा राष्ट्र कहा जा सकता है। प्रश्न यह है कि कोई राष्ट्र अपनी युवा पूँजी का निवेश कैसे करता है, क्या यह विशाल युवा जनसंख्या को राष्ट्र पर बोझ मानकर उसे राष्ट्र की कमजोरी के रूप में निरूपित करता है अथवा सशक्त, समृद्ध, शक्तिशाली और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उसका समुचित उपयोग करने के साधन उपलब्ध कराता है।

(5) सूचना प्रौद्योगिकी संभावना का द्वार अपार

वर्तमान युग को 'सूचना प्रौद्योगिकी (तकनीक) का युग' के नाम से भी जाना जाता है। आज सूचना प्रौद्योगिकी का व्यावसायिक तथा सामाजिक आवश्यकता की दृष्टि से विशेष महत्व है, इसकी सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर तथा कम से कम समय में सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा सकता है। विज्ञान ने इस आवश्यकता को पूरा करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विज्ञान की इस भूमिका के सन्दर्भ में हम सार रूप में यह कह सकते हैं, कि विज्ञान ने ही सूचना को प्रौद्योगिकी बनाया है। सूचना प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए पहले केवल टेलीफोन का प्रयोग किया गया। उसके बाद टेलेक्स, फैक्स, पेजर, कम्प्यूटर आदि सूचना संसाधनों का प्रयोग आरम्भ हुआ। इसके पश्चात् इण्टरनेट के प्रयोग ने तो सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रान्ति ही ला दी है। आजकल इण्टरनेट, ई-मेल,मोबाइल फोन, टेलनेट, वीडियो कॉन्फेंसिंग आदि सुविधाओं के प्रयोग ने मानव जीवन को अति सुखमय एवं सरल बना दिया है।

(6) साइबर क्राइम उसकी रोकथाम के उपाय

साइबर अपराध - समाज के लिए खतरा-

साइबर अपराध एक आपराधिक कृत्य है,जो इंटरनेट के माध्यम से कंम्प्यूटर के उपकरण या किसी अन्य स्मार्ट उपकरणों के पास इस अपराध को करने के विभिन्न उद्देश्य होते हैं। वे किसी व्यक्ति, किसी संगठन या सरकार को भी नुकसान पहुंचाने के लिए ऐसा कर सकते हैं।

साइबर अपराध के कई उदाहरणों में धोखाधड़ी, पहचान की चोरी, साइबर स्टॉकिंग, सिस्टम को नष्ट करने के लिए वायरस जैसे मैलवेयर बनाना या भेजना या फिर पैसे कमाने के लिए डेटा चोरी करना, आदि शामिल है। ऐसी गतिविधियों में शामिल लोग उन्हें पैसे कमाने का एक आसान तरीका मानते हैं। यहाँ तक कि बहुत से पढ़े-लिखे और ज्ञान से परिपूर्ण व्यक्ति भी इस तरह की गतिविधियों में शामिल होते हैं। अपने दिमाग को सकारात्मक तरीके से इस्तेमाल करने के बजाय वे साइबर अपराधिक गतिविधियों में खुद को नियुक्त करते हैं। दिन-प्रतिदिन यह हमारे समाज और राष्ट्र के लिए एक बड़ा खतरा बनते जा रहा है।

(7) मेरा प्रिय रचनाकार (कवि)

मेरे प्रिय कवि हैं संत कबीरदास। क्योंकि वे कविता में साहित्यिक रस और मनोरंजन के अलावा सामाजिक स्तर पर अपना एक व्यापक दृष्टिकोण का उल्लेख करते हैं। वे वास्तव में एक सफल कवि हैं, जो कविता में अपनी सोच को आसमान की फलक तक ले जाने का हौसला रखते हैं। यह विडम्बना है कि कबीर न ही पढ़े लिखे थे न ही कोई पेशेवर रचनाकार, फिर भी वे संत थे और एक समाज सुधारक। ईक्कीसवीं सदी में जब आज का समाज भी जातिभेद के दलदल में फंसा हुआ है, इस के विरोध में शायद ही कोईआवाज उठाता है, किन्तु उस समय के रूढ़िवादी एवं कट्टरवादी समाज में भी कबीर ने जातिवाद का विरोध पूरे आत्मविश्वास और निर्भय के साथ किया था। आज के वैज्ञानिक युग में भी लोग अंधविश्वास, रूढ़ियों और अंतर्विरोध को उपजाते हैं। किन्तु कबीर का विरोध और समन्वय की भावना को ज्यादा महत्व देते हैं। कबीर की भाषा में मस्तमौलापन का भाव झलकता है। उनके भाव कभी भाषा के गुलाम नहीं थे। कबीर अनुभूति और प्रतिभा से ओतप्रोत तेजस्वी व्यक्तित्व के धनि तथा अपनी समग्रता और व्यापकता में मेरे सबसे प्रिय कवि हैं।

(8) कोविड-19 का हमारी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था पर प्रभाव

कोविड 19 के बढ़ते प्रसार को रोकने के लिए समुदायों को सामूहिक रूप से कार्य करने की आवश्यकता है जो अधिक विधिवत् जनसंख्या वाले क्षेत्रों में अधिक चुनौतीपूर्ण हो सकती है। भारत से जिला स्तरीय आंकड़ों का उपयोग करते हुए, यह

करने के लिए समय निकाल ही लेता है। आजकल व्हाट्स एप, फेसबुक ने इतनी आदत खराब कर दी है कि हर कोई दो-दो मिनट पर व्हाट्सऐप चेक करता रहता है। अगर आप खाली है तो यह आपका सर्वोत्तम समय बिताने का जरिया बन जाएगा।

मोबाइल फोन के फायदे

1. हमें जोड़े रखता ह- अब हम अपने दोस्तों,रिश्तेदारों से किसी भी समय एप्स के माध्यम से जुड़ सकते हैं। अब हम अपने मोबाइल फोन या स्मार्टफोन को संचालित करके, जिस किसी से भी चाहें, वीडियो चैट कर सकते हैं। इसके अलावा मोबाइल हमें पूरी दुनिया के बारे में अपडेट भी रखता है।

2. ऑनलाइन संचार सुविधा- आज मोबाइल फोन ने दैनिक जीवन की गतिविधियों के लिए हमारे जीवन को बहुत आसान बना दिया है। आज, कोई मोबाइल फोन पर लाइव ट्रैफिक स्थिति का आकलन कर सकता है और समय पर पहुंचने के लिए उचित निर्णय ले सकता है। इसके साथ मौसम की जानकारी, कैब बुक करना और भी बहुत कुछ।

3. सभी के लिए मनोरंजन कभी भी, कहीं भी- मोबाइल प्रौद्योगिकी के सुधार के साथ, पूरे मनोरंजन की दुनिया अब एक ही उपकरण के अधीन है। जब भी हम नियमित काम से ब्रेक लेना चाहते हैं, तो हम संगीत सुन सकते हैं, फिल्में देख सकते हैं, हमारे पसंदीदा शो देख सकते हैं या पसंदीदा गाने का वीडिया भी देख सकते हैं।

4. ऑफिस का काम मैनेज करना- इन दिनों मोबाइल फोन का इस्तेमाल कई तरह के आधिकारिक कामों के लिए किया जाता है। शेड्यूल मीटिंग से लेकर, डॉक्यूमेंट भेजना और प्राप्त करना, प्रेजेंटेशन देना, अलार्म, जॉब एप्लिकेशन आदि। मोबाइल फोन हर कामकाजी लोगों के लिए एक जरूरी उपकरण बन गए हैं।

5. मोबाइल बैंकिंग- आजकल मोबाइलों का उपयोग भुगतान करने के लिए बटुए के रूप में भी किया जाता है। स्मार्टफोन में मोबाइल बैंकिंग का उपयोग करके दोस्तों, रिश्तेदारों या अन्य को लगभग तुरंत धन हस्तांतरित किया जा सकता है। इसके अलावा, कोई भी अपने खाते के विवरण को आसानी से देख सकता है और पिछले लेन देन को जान सकता है। यह बहुत समय बचाता है और परेशानी से मुक्त भी करता है।

निष्कर्ष- माना मोबाइल फोन के अनेकों लाभ हैं। आधुनिकता के सबसे बड़ा प्रतीक बन चुका है। अगर आज किसी के पास मोबाइल फोन हो तो उसे बड़े आश्चर्य की दृष्टि से देखते हैं। वो कहते हैं न, हर चीज की अति खराब होती है। यह बात मोबाइल फोन के अधिकाधिक प्रयोग पर भी लागू होता है। अगर इसका उपयोग सावधानी एवं समझदारी से किया जाये तो यह हमारे लिए हर मामले में लाभकारी सिद्ध होगा।

आमुख

प्रदेश में संचालित शासकीय हाई/हायर सेकेण्डरी स्कूलों में छात्र/छात्राओं का परीक्षा परिणाम निराशाजनक रहा है। शालाओं के समय-समय पर विभागीय अधिकारियों द्वारा किये गये निरीक्षण के दौरान यह देखा गया है कि छात्र-छात्राओं को विषय में ज्ञान का स्तर संतोषजनक नहीं है।

आगामी परीक्षा की तैयारी एवं श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम हेतु यह **प्रश्न बैंक** तैयार किया गया है। जिसके उपयोग से शिक्षक अपने समस्त छात्रों को बेहतर अंक प्राप्त करने एवं अगली कक्षा में जाने हेतु समर्थ बना सकेंगे।

इस **प्रश्न बैंक** को ब्लूप्रिन्ट के अनुसार उन महत्वपूर्ण पाठ्य वस्तुओं का समावेश कर तैयार किया गया है जो कि प्रभावी शिक्षण एवं छात्र-छात्राओं के सभी विषय में औसत दक्षता विकसित करने एवं परीक्षा परिणाम में सुधार हेतु लाभकारी सिद्ध होगा।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा में डी एवं ई ग्रेड के विद्यार्थियों का चिन्हांकन आपके द्वारा कर लिया गया होगा। यदि आपके स्कूल में एक से अधिक सेक्शन है तो विद्यार्थियों के ग्रेड के आधार पर सेक्शन में विद्यार्थियों का पुनर्वितरण कर दें। तथा एक ग्रेड के विद्यार्थियों को एक सेक्शन में रखें ताकि उन विद्यार्थियों को उनके स्तर के अनुरूप पढ़ाया जाये।

प्रदेश के समस्त हाई/हायर सेकेण्डरी स्कूलों के प्राचार्य एवं संबंधित शिक्षकों से अपेक्षा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि वे इस **प्रश्न बैंक** से शाला के छात्र-छात्राओं को सभी विषय का नियमित अभ्यास करायेंगे ताकि प्रत्येक विद्यार्थी परीक्षा में सफल हो सके।

शिक्षकों से अपेक्षित कार्यवाही-डी एवं ई ग्रेड के विद्यार्थियों को आगामी 2 माह तक इस **प्रश्न बैंक** अनुसार अभ्यास कराएं। विद्यार्थियों को प्रत्येक प्रश्न को किस तरह लिखना है इसे समझाएं। विद्यार्थियों द्वारा की जा रही गलतीयों को सुधारें।

- www.gphbooks.com - gph_india@rediffmail.com - facebook.com/gphind

GPH® | Dinesh-G

GUPTA PUBLISHING HOUSE
116, Pologround, Industrial Estate, Indore
Khajuri Bazar, (16, Juna Pitha, Mata mandir ke pass), Indore
Ph.: (O) 0731-2424121, 2425121, 2454121

Rs.30.00/-